



श्री स्व० दार्याव महाराज को अनुभवांगरा

खौर

सम्परागत आचार्यों के संचित जीवन-चरित्रों  
सहित अनन्त श्री अर्जुन महन्त महा-  
राज श्री चमारामजी महाराज के  
समय में रामजी की प्रेरणा  
से छप कर इका-  
शित हुई ।

*All Rights Reserved*



बि० सं २००४, कावक शुक्ला १ । प्रथमा वृत्ति १०००

मूल्य—

—दरया—पसी सो करे (जाह) कारज करना होय ॥

विश्वचरण दाम माथुर  
बाबाई अण्णो फी गल्ली  
( धारवाड )

## पाठकों के जानने योग्य बातें—



(१)—वाणी को सदा-सर्वदा पूज्य भाव से उच्च-स्थान पर शुद्ध-वस्त्र में बाँध कर विराजित करनी चाहिए, और सदा पवित्र शरीर, पवित्र वस्त्र और पवित्र भावों से वाणी का अर्थ गहित नित्य पाठ करना चाहिए।

(२)—पूग ग्रन्थ पढ़े बिना बीचमें ही उपराम न होना चाहिए और अनुबन्ध-चतुष्टय, की ओर भी लक्ष्य रखना चाहिये कि वाणी का विषय और प्रयोजन क्या है।

(३) 'श्रद्धाविरहित यज्ञ तमस परिचक्षते' के अनुसार स्थूल एवं सूक्ष्म किसी भी विपरीत भावना से वाणी में श्रद्धा हो जाय तो शेष का अंशश्चा-जाता है, अतः श्रद्धा उत्पन्न होने के परचात् वाणी मिलने के पते पर पुस्तक शीघ्र लौटा देने की कृपा करें।

(४) साची सद्गत साध की, जो करजाने कोय।

'हरिया' ऐसी तो करे (जेहि) कारज करना होय।

❀ दो शब्द ❀

वास्तव में पूज्य शरण को अनुभव गिरा तो 'उन हरिया यह अक्षय क्या है, अक्षय क्या क्या आई ?' वाली दशा है, परन्तु तत्पश्चात् सद्गुरु देव की कृपा से यह अक्षय क्या भी समझी जा सकती है। यथा गुण के शब्द की पूर्ण खोजी यामल कोठरी लोकी, तो बाणी के अर्थ अक्षय को समझने के लिए नीचे स्नेहानुसार कुछ बातें सभी पाठकों का ध्यान में रखनी उचित पावूम होती हैं-

(१) बाणी के दार्शनिक विषयों को समझने के लिए वेदान्त के कठिन शब्दों का काम जो अन्तमें दिया है तो रचना चाहिए

(२) कुछ सत्यों और मूर्तों के अनुभव भरे कुछ उदाहरण बाणी के अन्तमें दिये हैं, इन को मनन पूर्वक-पढ़ने चाहिए।

(३) ये प्रश्न सदा हम अपने (जब तक उचित समाधान न हो जाय) सामने रखें तो अक्षय ही हमारे सब के लिए जान बूझ है।

- (क) हमारे आध्यात्मिक रूप का सिद्धान्त और आहार्य क्या है ? (ख) राम श्लोक की वास्तविक परिमाण क्या है ? (ग) हमको क्या क्या जा और करते क्या हैं ? (घ) हमारा वास्तविक विषय किसमें है ?

साथी सकृत् साथ की भी कर मान कोय ।  
हरिया, ऐसी तो करै (अहि) कारण करना होय ।

# विषयानुक्रमणिका

## प्रथम परिच्छेद

नाम	विषय	पृष्ठांक
अथानुबन्ध चतुष्टयम्	.. ..	१
नम्र निवेदन	.. .	५
साम्प्रदाय-पद्धति	.	१४
राम रनेही लक्षण	..	१६
श्री अनन्त स्वा० रामानन्दजी	महाराज कृत मानसी सेवा	२१
" " सन्तदासजी	महाराज का सक्षिप्त जीवन चरित्र	२४
" " " " " "	कृत विनय का अंग	३१
श्री अनन्त सद्गुरु	पेमजी महाराज की सक्षिप्त जीवनी	३७
" " " " " "	अनुभव गिरा	४०
" " " " " "	दरियाव महाराज का सक्षिप्त जीवन चरित्र	४८
" " " " " "	की अनुभव गिरा प्रारम्भ	८४
" " " " " "	सद्गुरु देव का अंग	८५
" " " " " "	स्मरण का अंग	६३
" " " " " "	विरह का " "	१००
" " " " " "	शूर का " "	१०२
" " " " " "	नाद परिषय का अङ्ग	१०६

श्री अनन्त हरियाव महाराज का श्म परिचय का अङ्ग	११६
हंस बहाल का	१२६
" " स्वप्न का "	१२८
" अनुभव गिरा स्थाप का अङ्ग	१३४
" " " शिठामणि "	१३६
" " " अपारण्य "	१३७
" " " लप देरा "	१३८
" " " पारस "	१४४
" " " मेघ "	१४६
" " " मिश्रित साग्री	१५१
" " " पद् मारम्भ	१६४
" " " गुरु महिमा	२०७
श्री प्रखवासजी महाराज की पाणी	२२२
श्री रामदासजी " "	२२७
श्री सुरदासजी " "	२२४
" श्री बलदासजी " "	२६२
" श्री हरदासजी " "	२६६
" श्री जगन्नाथदासजी " "	२८८
" श्री टेमजी " " स्व आरणी	३००
" श्री अमां बाई की बाणी	
" श्री राज्ज भाभाबाणी	

( iii )

दूसरा परिच्छेद ( राम नाम महिमा )

श्री रामनाम महिमा	...	...	१-१११
श्री वेदास्त पदार्थ	...	...	११२





## अर्थ-अनुबन्ध चतुष्टयम्

नानु प्रयोजनमनुद्दिश्यतमन्दोऽपि प्रवर्तते

अधिकारी वर्णनः-

विरही, प्रेमी, मोम-दिल, जन 'दरिया' निष्काम ।  
आशिक दिल दीदार का, जासों कहिये राम ॥  
जन 'दरिया' उपदेश दे, भीतर—प्रेम—सधीर ।  
ग्राहक हो कोई हीग का, क्यों दिखावे हीर ॥

अन्वय सम्बन्धः-

'दरिया' साचा राम है, और सकल ही झूठ ।  
सम्मुख रहिये राम से, दे सब ही को पूठ ॥

मद—और वाणी का—प्रतिपाद्य—प्रतिपाद्यक भाव सम्बन्ध ।  
 अधिकारी और फलका—प्राप्य—प्रापक भाव सम्बन्ध है ।  
 अधिकारी और विचार का—कर्तृ—कर्तव्य भाव सम्बन्ध है ।  
 पार्वी और ज्ञान का—अप्य, जनक भाव सम्बन्ध है ।

### विषय —

भाप मिक्षे पर भाव से, परमाये पर भाप ।  
 'हरिया' मिन फर मिन रहे, तो आवागमन नशाय ॥

॥ अनुबन्ध चतुष्टयम् ॥

पाप सर गुण तीन से, साठम मया उदास ।  
 सर गुण निर गुण से मिला, चौथे पद में वास ॥  
 भीम भावको त्यागकर ब्रह्म भाव होना वांछीका विषय है ।

## प्रयोजन—

जीव जात से वीछुड़ा, घर पंच तत्व का भेख ।  
 दरिया निज घर आइया, पाया ब्रह्म अलेख ॥  
 जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता है राम ।  
 घर हमारा शुद्ध में, अनहद में विश्राम ॥

अर्थ—मर्क अन्वर्थ की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति  
 वाणी का प्रयोजन है ।

इत्यनुबन्ध चतुष्टयम्

## नम्र निवेदन

मित्यं शुद्धं निरामाषं निराकारं निर्मलम् ।  
मिथ्यं बीषं विशानन्दं गुरुं ब्रह्म नमो म्यदम् ॥

अनन्त ज्ञानम् अतः सत-चित्-आनन्दं भू-  
स्वरूपं अनादिं अनन्तं परात्परं परं ब्रह्म राम गुरुदेवजी ५  
कोटिशः नमस्कार करके समस्त सन्तस्वभावी महा-  
पुरुषों को दृढवत्-प्रणाम करता हूँ कि परब्रह्म स्वरूप  
राम गुरुदेवजी एवं संतजनों की असीम अतुलित कृप-  
ा और श्री प्रेरणा से प्रेरित होकर परम पूज्य पर-  
सद्गुरुदेवजी भी 'हरिया साहब की अनुभव गिर-  
प्रकाशन करने की प्रेरणा स्वरूप आता प्राप्त हुई ।

आन-वर्धमान् परम शुभ्य वातावरण (सत्य सु-  
के विघातक अज्ञानादिके इस त्रिकाश-युग) में जहाँ ईश्वर  
एवं ईश्वर चर्चा को स्पर्धित वतलान और परलोक ५  
सिद्धान्त कल्पना प्रवृत्त समझा जाता है, महा वा-

वैराग्य-भक्ति की बातों को अनावश्यक और देश-जाति की उन्नती में प्रतिबन्धक रूप बताया जाता है, जहां भौतिक उन्नति को ही मनुष्य जीवन का परम ध्येय समझा जाने लगा है, जहां केवल इन्द्रिय सुख ही परम सुख समझा और माना जाता है। इसके अतिरिक्त प्रायः समूचा साहित्य-क्षेत्र जड़-उन्नति के विधायक ग्रन्थों, मौज-शौक के उपन्यासों और गल्पों एवं कुरुचि उत्पादक शब्दाडम्बर पूर्ण रसीली कविताओं की बाढ़ से बहा जाता है, वहां भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और निष्काम राम भक्ति विषयक देशज-ग्राम्य-भाषा वद्ध (वेद-वेदान्त आर्ष ग्रन्थ सम्मत) तात्त्विक विषयों की पुस्तक से सब को सन्तोष होना बहुत ही कठिन है, तथापि मुझे अपने जीवन की अनेक घटनाओं और अनुभव से मुझे यह पता चला है कि नास्तिकता की इस प्रबल आंधी के आने पर भी सन्त मुनि सेवित पुरण्य भूमि भारत के सुदृढ़ मूल आध्यात्मिक सघन छाया युक्त विशाल तरुवर की जड़ें अभी नहीं हिली हैं। आशा

है फिर भी उसका हिलना कठिन मायूम होता है क्यों—  
कि सत्य को हिलाने की शक्ति पंचारी असत्य प्रवृत्ति  
में हो नहीं सकती ।

इस समय भी भारत के आध्यात्मिक जगत में सम्बन्धे  
जिज्ञासुओं और साधु स्वभाव के मुमुक्षुओं का अस्तित्व  
है, यद्यपि उनकी संख्या घट गई है। इस दशा में यह  
आशा करना अयुक्त न होगा कि इस सरल भाषा में  
लिखी हुई उत्कृष्ट पुस्तक (पाथी) का अष्टधा भावर  
होगा और लोग इससे विशेष लाभ उठावेंगे ।

इन पृष्ठियों के लेखक की दृष्टि में इस ग्रन्थ  
के रचयिता का स्थान बहुत ही ऊँचा है । आध्यात्मिक  
जगत में इस प्रकार के महान पुरुष बहुत ही थोड़े हैं ।  
वेवर्षि नारदभी ने कहा है—

‘महत्सङ्गस्तु दुर्लभोऽ गम्योऽ मोषत्र ।’

अर्थात् महापुरुषों का सङ्ग दुर्लभ, अगम्य और

अमोघ है। यानी 'सच्चे पुरुष सहज में मिलते नहीं, मिलने पर पहचाने नहीं जाते तथापि उनका संग व्यर्थ नहीं जाता।' इसी कथन के अनुसार मेरी यह धारणा है कि आज वर्तमान में पूज्य चरण दरिया साहब साकार स्वरूपसे नहीं हैं, पर उनके आध्यात्मिक अनुभव पूर्ण उद्गारों का सार सार संग्रह स्वरूप सरल देशज भाषा में वाणीरूप से साकार स्वरूप आज भी यह हमारे सम्मुख है। ऐसा होने पर भी इस वाणी के उपदेशों को धारण करना तो दूर रहा, भली भांति वाणी के तत्व को समझना या पहचानना जाना भी दुर्लभ है। कारण इसका यह है कि साधारण मारवाड़ी भाषा की बोल चालमयी प्रबन्ध शैली में निबन्धित होने से, एवं काव्य, रस, अलंकार तथा कविता, तथा व्याकरणादि नियमों का पालन न करने के कारण वेचारे विद्याभिमानी, काव्य रस रसिक-साहित्योपाशक जन वाणी के तत्त्वों को समझना, सुनना और पढ़ना तो दूर रहा पास



तक नहीं आ सकते क्योंकि शास्त्री वा 'विषय रस फीकी है'।

यहाँ प्रश्न यह होता है—कि महाराज संस्कृत साहित्य के विद्वान होने पर भी उन्होंने केवल मारवाड़ी ग्रामीण भाषा का अनुकरण करते हुए शास्त्री की रचना क्यों की? इसका अनुमानत सरसता पुनक उधर यह है कि—

(१) विद्वानों के लिए षट्, षेवान्त, षड् सूत्र संहिताएँ एवं स्मृतएँ व्यापक रूप से प्रस्तुत हैं, परन्तु उन साधारण पढ़े लिखे एवं अपट्ट मनुष्यों को उपयुक्त ग्रन्थों के दर्शन ही दुर्लभ हैं, ऐसी दशा में संस्कृत रचना से साधारण मनुष्य कैसे लाभ उठा सकते हैं। विचार सागर में भी कहा है—

तिन यह भाषा ग्रन्थ किय, रच न उपजी लाज ।  
तामें यह एक हेतु है, दया धर्म सिर ताज ॥

अर्थात् अपढ़ लोग भी राम जी को प्राप्त कर सकें यही कारण होते हुए भी विद्वानों एवं भावुक दार्शनिकों को भी इस वाणी में कल्याण प्राप्ति की सामग्री प्र-  
र्याप्त-रूप से मिल सकती हैं।

[२] महा पुरुषों की उपदेश शैली समझने के लिए तर्क प्रधान नहीं है। यदि कोई महात्माओं के सिद्धान्तों को जानना चाहें तो सरल बन जाय तभी उनकी गति-विधि उन महापुरुषों की कृपा से जानी जाती हैं। कहां तक कहें, राम जी जाने जा सकते हैं, पर महा पुरुष उनकी कृपा विना नहीं जाने जाते। अतः 'ब्रह्म रूप अह ब्रह्म वित ताकी वाणी वेद' के अनुसार महा पुरुषों के उदार किसी भी भाषा में ही परम कल्याण करने वाले हैं।

अस्तु, अब सन्त महात्माओं एवं आचार्य प्रवरों से तथा पाठक-पाठिकाओं से निवेदन है कि अस्तुत वाणी का नाम-करण 'श्री दरियाव महाराज की अनु-

मद गिरा' रखा है और अंग ग्यों के स्थो रक्ते गये हैं। अतः इस अनुकूल्य प्रबन्ध में लेखक की असा-  
 यधानी भी हो सकती है, जिससे कई पुरानी प्रतियों  
 से मिला ने पर शब्द मद प्रवीन हो सकता है, सो  
 साजन कृद अपनी रुचि और उद्यम शुद्धता समर्प  
 बेसा पठन पाठ्य करन में स्वतन्त्र है ही।

आचार्य पद्धति की परम्परा की शैली के अनु-  
 सार क्रमशः प्रकल्प रत्ने मय हैं और संक्षिप्त जीवन  
 परित्र भी सन्त श्री माधनादासजी विरचित हस्त-लि  
 खित बगी के आधार से लिखा गया है।

[३] कई पुरानी प्रतियों से कुछ अंग लिये हैं  
 उनमें गीर्वाण एवं लेखकों की असायधानी से पद्य अ-  
 पूरे छोड़े हुए मिले हैं, उनको भी प्रसङ्गानुसार पूरा  
 कर दिया गया है।

[४] अन्त में वह पुरान, स्मृति और

महात्माओं के प्रबल प्रमाणों द्वारा श्री राम नाम को कुछ महिमा का वर्णन भी किया गया है। वास्तव में नाम की महिमा तो अपार है। मैंने तो केवल अपना इस बहाने से समय सार्थक किया है।

मैं न तो विद्वान् हूँ और न अपने को उपदेश-आदेश एवं शिक्षा प्रदान करने का अधिकारी ही समझता हूँ। मैंने तो अपने अन्तःकरण के सुख के लिए वाणी के प्रकाशन कार्य का प्रयत्न किया है, अन्तर्यामी की प्रेरणा से जो कुछ हुआ सो उसकी वस्तु है। मेरा इसमें क्या अधिकार समझा जाय।

पाठक पाठिकाओं से निम्न निवेदन है कि वे इस वाणी को मनन पूर्वक पढ़ें और यदि किसी पाठक के चित्त में तनिक भी ज्ञान, वैराग्य एवं सदाचार का संचार होगा, तनिक सी भी राम भक्ति की भावना उत्पन्न होगी और मनके गंभीर प्रश्नों में दो एक का भी समाधान होगा तो बड़े आनन्द की बात है।

पुन प्रार्थना है कि इस बाणी में जो कहीं भी श्रुतियं रही हों उन्हें कृपासू सम्मम सुधार कर पढ़ें और कृपा पूर्वक मुझे सूचना दें तो मैं भी उन-उन स्थलों को सुधार कर पढ़वा और समझवा दूँ ।

बिभील  
मन्दपण्यगुणी

॥ इति ॥

## साम्प्रदाय-पद्धति:-

श्री अनन्त भक्ति-ज्ञान-वैराग्य के आदि आचार्य भगवान् विष्णु नारायण हैं, वयो कि समग्र ज्ञान-वैराग्य का उद्गम स्थान वही हैं। इसी लिए उन्हें षडेश्वर्य सम्पन्न ईश्वर कहते हैं। यह परम्परा अनादि है।

व्यवहार एवं साम्प्रदा-विशेष के नियमों के अनुसार श्री आचार्यप्रवर विदूढरीठान श्री रामानुजाचार्य जी से २३ पद्धति परत्व श्री रामानन्द जी महाराज हैं। तच्छिष्य श्री स्वामी अग्रदास जी हुए। उनसे पञ्चम पद्धति परत्व श्रीअनन्त स्वामी सन्तदास जी महाराज है, जिन की संक्षेपतः अनुभव प्राणी इसी के आदि में दी गयी है।

उन सन्तदास जी महाराज के शिष्य वैराग्य भूषण महाराज प्रेमदास जी महा पुरुष हैं इन्हीं

महाराज के प्रधान शिष्य परम विद्वान् सम्पन्न आत्मनिष्ठ शब्द प्राणी महाराज परिया साहब हैं।

अस्तु, प्रथम धरण्य धी हरियाव महाराज की संक्षिप्त जीवम प्रस्तुत वार्त्ती [भी हरिमाव महाराज की अनुमम के आदि में दी गया है। अतः प्रेमी पाठक-पाठिकाओं को उक्त कथित महा पुरुषों के जीवन का अनुकरण एवं अनुशरण करके मानव-जीवन सफल बनाना चाहिए।

समय अस्यन्त अन्य है, उसमें भी बहुत रोग, निद्रा, झालस्य, प्रमाद एवं सांसारिक व्यवहार में मय हो रहा है। अतः कन्याख-कामी मनुष्यों को अनन्य ही अपन आपको बड़ भारी (मम्म-मृत्यु रूप) त्तर से सुरक्षित करके, परम सुरक्षित स्थल-सुखी मीन अर्द्ध मीर अमाधा, जिमि हरि शरण न एक हुवाधा।' धी हरि की धरण्य शरण्य और राम नाम का अमय ग्रहण करना चाहिए।

कलियुग में राम नाम की बड़ी महिमा है, गो-  
स्वामी जी तो राम नाम के प्रताप से सदा सुख  
की प्राप्ति करके लोगों को आदेश दे गये है कि  
मेरी तरह तुम भी सुखी बन जाओ—‘फिर सनेह  
मगन सुख अपने, नाम प्रसाद सोच नही स्वपने।’  
अस्तु: नाम से सब कुछ सुलभ है।

दिनय

सन्त चरणानुरागी






## राम स्नेही लक्षण

‘दरिया’ लक्षण साध का, क्या गृहस्थ क्या भैरव ।  
 निष्कपटी विपक्ष रहे, बाहर भीतर एक ॥२॥  
 रहनी करनी साध की, एक राम का प्र्यान ।  
 बाहर मित्रता सौ मिले, भीतर आत्म हौम ॥३॥

टिप्पणी — राम जी में स्नेह रखने वाले मनुष्य

का लक्षण वास्तव में क्या है, पर व्यवहार से भी शास्त्रों

एवं महा पुरुषों

उपदेशों से सब  समुत्पन्न

हो जितने वह कर्म्य हो वे वास्तव में मनुष्य समझे

जा सकते हैं। यथा—

- (१) अथ रहित (२) पक्ष रहित, (३) ईश-  
 रहित, (४) साह्य व्यवहार, (५) लक्षण का यथार्थ  
 बोध

साधु जल का एक<sup>६</sup>अंग, वरते सहज-रवभाव ।  
 ऊंची-दिशा न संचरे, निवन-जहाँ हलभाय ॥३॥  
 साधु चन्दन वावना,<sup>१०</sup> एक राम की आश<sup>११</sup> ।  
 जन 'दरिया' एक राम धिनु, सब जग आक पत्तास ॥४॥  
 मान सरवर मोती चुंगे, दूजा नाहिं रवान ।  
 'दरिया' सुमिरे-<sup>१२</sup>राम को, सो निज हंसा जाना ॥५॥

(६) निरमत्तता, (७) अहंकार रहित व्यवहार (८) अभिनियो का सगत्याग, (९) जिज्ञासुओं पर कृपा करें  
 (१०) शान्ति स्वरूप, (११) एक निष्ठारूप, (१२) राम  
 भक्ति परायण, (१३) अंगवान का प्यारा (१४) परमईश्वर  
 जीवन मुक्ता का आनन्द ।

विशेष- ये १४ गुण सर्व शास्त्रों और पुराणों द्वारा  
 विधेय प्रतिपादित श्रेष्ठतम मुक्त पुरुषों के पहिचान के  
 लिङ्ग हैं और साधक पुरुष इन लक्षणों का स्वाङ्गोपाङ्ग सम्पादन  
 करके सदा सुख स्वरूप रामजी की प्राप्ति कर सकता

और अगति राम भ्रम-वर्जित विद्व। कर्म  
 प्रपंच से लड़ा मोक्ष या लक्ष्मण है। यही निर्विकल्प ब्रह्म  
 और सती प्राणियों का कर्म यही है, या भ्रमवशात् मुक्त पान  
 के साधनों का विरह्यार या अज्ञानवशात् परित्याग करके  
 विपरीत ब्रह्म पथों से मुक्त प्राप्ति की अविकल्पता करके भ्रम-  
 विहिन हुआ ज्ञान महक रहा है। अस्तु, नित्यामन्द-प्राप्ति का  
 मुख्य साधन-समभजन सत्संग, स्वाध्याय और अथगुण  
 त्याग है-

सगुण सगुण साधु ही जे कर आने कोय ।  
 'हरिपा' येना सो करै, कारण करता होय ॥



## दृष्य

मिलतां पारख प्रसिद्ध विमल चित राम सनेही ।

उर कोमल मुख निर्मल प्रेम प्रवाह विदेही ॥

दरसण परसण भाव नेम नित श्रद्धा दासा ।

साच वाच गुरु ज्ञान भक्ति प्रण मत एक आशा ॥

देह गेह सम्पति सकल हरि अर्पण परमानिये ।

जन रामा मन वच कर्म रामस्नेही जानिये ॥१॥

खान पान पहिरान निर्मली दशा सदाई ।

सात्विक लेत आहार हिंसा करि है न कूदाई ॥

नीर छाण तन वरत दया जीवा पर राखे ।

बोलै ज्ञान विचार असत कवहू नहिं भाखै ॥

साधु संगति पणव्रत सुदृढ़ नेम प्रेम दासा लियां ।

रामस्नेही रामदास तन मन धन लैखे किया ॥२॥

श्रद्धा सुमरण राम मीन मन राम सनेही ।

गुण ग्राही गुण वन्त लाय लेगौ हरि देही ॥

अमल र्ववाकू भाम तजै अमिष मद् पाने ।  
 जुष्ठा पृष्ठ का कर्म नागि पर माताजाने ॥  
 साध शीघ्र क्षमा गहै राम राम सुमरण रता ।  
 रामा भक्ति भावहृद् राम स्नही ये मठा ॥३॥

॥ इति ॥

# अथ अनन्त श्री रामानन्द जी महाराजकृत मानसी सेवा ।

रामानन्दमहं वन्दे श्रीरामांशावतारकम् ।  
आचार्याणां शिरोरत्न मंत्रराजप्रचारकम् ॥२॥  
अथ अनन्त श्री रामानन्दजी महाराज कृत मानसी सेवा ।  
शालग्राम शब्द करि सेऊं तन तुलसी कर लीजै ।  
आतम चंदन घसि-घसि चरचूं इस विधि सेवा कीजै ॥१॥  
ज्ञान जनेऊ ध्यान धोदती शुचि का अंचला कीजै  
काया कुंभ प्रेम का पानी हरि दरियाभर लीजै ॥२॥  
दया आचार विवेक सुचौका उर अस्नान करीजै ।  
इच्छा पुहुप चढ़ाऊं पूजा मन सा सेवा कीजै ॥३॥  
त्रिगुणी त्रिकुटी मन करि अर्घा संपुट ध्यान धरीजै ।  
पांचों वाती जोय करेनै इच्छा सेवा कीजै ॥४॥  
कलह कल्पना धूप अंगारी ब्रह्म अग्नि कर सेऊ ।  
उत्तरी वास गगन कूं लागी इस विधि देवा सेऊ ॥६॥

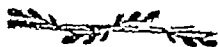
गुह-गम मंतर-आप अजप्पा हिरदा पुस्तक कीर्तन ।  
 अनुभव कथा कई भाई साधो इस विधि पाठ पढ़ीजै ॥६॥  
 अनहर घटा फाहर बाँधे अजस्य पुरुष की सेवा ।  
 पुरुष निरंतर बैठा साधो रोम रोम में सेवा ॥७॥  
 ममा जमुना बड़े सरस्वती गई माय ध्याम घरीजै ।  
 प्रकृती मंदिर बैठा साधो यहां जाय दर्शन कीजै ॥८॥  
 सहज सिंहासन निभय सेऊ धित की धंबरी कीजै ।  
 चरमा माँहि धिम डसकाठ पीरम बैठा रीजै ॥९॥  
 कोई एक साधो मिलिया आई सब संतन का मेला ।  
 सतगुरु मेरे शिर पर ठाढ़ा मुहड़ा आग चेला ॥१०॥  
 या मेरि सेवा या मेरि पूजा ऐसी आरती कीजै ।  
 आत्म तत्त्व विचारी कीजै ध्यान निरंतर कीजै ॥११॥  
 बल पापाख मरम की सेवा सुन मटक नहीं मरवा ।  
 सतगुरु मेरे जुक्ति बताई तब भयसागर तिरना ॥१२॥  
 बाहिर मरम कबहु नहि जाऊ अंतर सेवा मागी ।  
 'रामानंद' मैगा निर्भय आँखी पारप्रज्ञ जिव लागी ॥१३॥

## ॥ दोहा ॥

लिव लागी परब्रह्मसूं रती न खंडे तार ।

रामानंद आनंद में, गुरु गोविन्द आधार ॥१॥

॥ इति ॥





# अनन्त श्री सन्तदास जी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र

अथ परम पूज्य अनेक मुख्यगण निधि आचार्य वेद  
श्री अनेक सन्तदास जी महाराज का संक्षिप्त जीवन—  
परिच ।

## अथ मङ्गला घरण्य —

नमो नमी सद्गुरु नमो, नमो निरञ्जन राय ।  
नमो नमोहरि भक्त जन, तीर्तुं ताप नशाप ॥१॥  
प्रथम बंदि गुरु वेद की, विमर्षों बारम्बार ।  
हार इक्ष्य प्रकाशते, लीला करो प्रसार ॥२॥  
श्री सन्तदास स्वामी नमी, नमो प्रेम महाराज ।  
जन हरिया से पीनती, सर्प सुधारख काज ॥३॥  
कृष्णदास सुत्तराम जन, पूरन नामक दास ।  
शिष्य चारों हरियाव के, कीर्ति मक्ति प्रकाश ॥४॥

## श्री भावनादासजी कृत लेपकः—

श्री सन्तदास महाराज को, तीन नाम जन जान ।  
 'रे रंकारी' कोई कहत है, कोई गूदड़ कहत बखान ॥  
 'सन्तदास' तृतिये कहै, करनी सन्त सुजान ।  
 जन्म तिथि वर्णन करों, अपनी मति परमान ॥  
 विक्रम संवत् विगतसु, सोला सौ इक्यास ।  
 सन्ध्या प्रकटै सन्तजी, अक्षय तीज प्रकाश ॥  
 शुभ नक्षत्र शुभ योग तिथि, शुभ घटिका शुभवार ।  
 मास पक्ष ग्रह सर्व शुभ, भक्त लीन्ह अवतार ॥  
 कवि कुल में प्रकटत भये, नगर कामल्यां नाम,  
 मरुधर मध्य मथुरा लघु, ता पासै यह गांव ॥  
 राम दान पितु कवि कुल, मातु नरवदा नाम ।  
 खड़िया गीत खराडि पुनि, आदि कामल्यां धाम ॥  
 सुवन जन्म सुनि कुटुंब सब, हर्षत हूँ नर नार ।  
 उत्सव मङ्गल करत सब, आनन्द मंगलाचार ॥  
 वर्ष एक, द्वै, तीन चहुं, पंच, षट्, सप्तम आठ ।  
 नव दस ग्यारह वार में, पिता पढ़ाये पाठ ॥

२६ राम अकल श्री नन्दगणेशो महाराज का अन्तर्गत जीवन परि

पद गुण भग व्यवहार में, भये बहुत प्रवीन ।

बाल्य कास यदि मिथि गयो, जम व्यवहार—अवलीन ॥

धीस वर्ष प्राप्त भया, तन में व्यापी ताप ।

सतरा सौ पके अक्षर, भया बहुत सन्ताप ॥

पिण्ड प्राण विधोम मो, ईसा भया उदाय ।

मात—पिता सुठ बन्धु जन, सबही दुख मिल जाय ॥

ये' पितु मा अपार सुन, तो विनु इम सब हीन ।

बन्धु हीन कर लकुटिया, सौ विषना हरलीन ॥

निर्मिमात्र गवि परकर भये, शत्रु दाहन के काज ।

मरपट बाने पदुधिया, लीना दाद समाज ॥

काष्ट विविध पिता रफी पिता बुखित विद्वलाठ ।

ठादि समय अपरज भयो, आत्मे सन्ध अठाप ॥

### सन्त स्वरूप वर्णन—

बय नुठ तन तेम अति, सत चित आनन्द रूप ।

कीमल करुणा धरन मुम्ब, पोले वाक्य अत्रप ॥

आप खड़े शव पास तव, तेज पुंज आभास ।  
राम राम मुख बोलिया, कीन्हा शब्द प्रकाश ॥

### श्री सन्त वचन

सन्त कहै 'यह कौन है? राम न वाले नीच ।  
कौन सूता यह नींद में, जो इस मरघट वीच ॥

### जाति वाले वाले

भो भगवन तुम साम्हलो, सूता सो मुरदार ।  
ये इसके पितु भ्रात हैं, हम हैं जातिमदार ॥

### सन्त वचन

यह सूता सुख नींद में, तुम भाखौ मुरदार ।  
'राम-राम' कह उठ सी, क्यों बोली भूठ लवार ॥  
सुनत वचन सब हर्ष कै, सन्त चरण चित लाय ।  
तुम समर्थ हो है प्रभो ! शव को देवो जगाय ॥

२८ राम चमत् भी सन्तशासत्री महाराजस्य सन्निभ श्रीवत्त पति

सन्त राम मुक्त राम कही, निज कर शब सिर पार ।  
अवय सुनाया मन्त्र निज, जो शिव हिमै—मन्तार ॥  
मैत्र सर्जीवन सुनत ही, पवन भया शरीर ।  
पुनि घरया गुरु वेव के, स्पर्शो सहित सनीर ॥

### सनताज्ञा—नामकर्ण

सन्त वास है नाम तुम, नम जीया हित काम  
ममन भरोसा राखिये' राम नाम सुख—साज ॥  
ररं कार का ध्यान घर, ररं कार सम हाय ।  
यही कारण कर जगत जन, ररं कारी चित पाय ॥  
गल गुदड़ी घरि राम रर, मये गुदड़ पत शाह ।  
तीन विशेषण आप के, मति मति मये अमाह ॥  
श्रीय उभारय काम वन, पर मनुग अवतार ।  
जो जन शरणी जानसी, दासी मय से पार ॥  
कर समीपन मठके को वेस्तत सष जन नयन ।  
पल ही तिरो भाव ह कर मये अनुपम सैन ॥

मृत को जीवत किया, यह असंभव बात ।  
 पूरा पुरुष कौ राम विनु, इण विध समथ तात ॥  
 चार जनां के कन्ध पर, चढ़ कर गये मशान ।  
 निज पग घर गवने घरां । पाया गुरु से ज्ञान ॥  
 गृह कारज ममता विपै, परि भूल मन मांहि ।  
 वर्ष साठ द्वय व्यतित भै, अति आरत विललांहि ॥

### वैराग्य दशा—

सुमिरण कारण सुमिरणी, ले गवने अन्य ठौर ।  
 आय विराजे दांतडै, जगत जाल की तोर ॥  
 ग्राम पास सर निकट ही, पद्मासन धर ध्यान ॥  
 अत्य काल हरि भजन कर, परस्या आतम राम ॥  
 निज घर पुनिः पधारिया, परचा भया अनेक ।  
 रित बढ़त बहु भांति से- याते कहा संक्षेप ॥

## निर्वाण निभय —

सन्त विक्रम अठारवै, फागण पत्त अधार ।

शाम रूप हो रम गणा सातम शनि क बार ॥

॥ शक्ति ॥



# श्री अनन्त स्वामी जी महाराज श्री सन्तदासजी कृत

## विनय का अंग

अनुभव पद प्रकार के, दायक सद्गुरु राम ।  
अनन्त कौटि जन सहाय की, जाहि कहूं प्रणाम ॥१॥  
सन्तदास बड़ पतित है, तुम हो पतित उधार ।  
लज्जा तुम्हारे विरध की, तुम राखो करतार ॥२॥  
माया तेरी राम जी, तुम हो भ्ररण हार ।  
सन्तदास गरीब से, दूर रखो करतार ॥३॥  
जहां देखूं तहां रामजी, माया ही का झोड़ ।  
सन्तदास की राख जो, तुम चरण लग दौड़ ॥४॥  
मुझको तेरे विरध की, है सान्ची परतीत ।  
तुम मत छांडो राम जी, अपने घर की रीत ॥५॥  
मैं तो तेरा राम जी, गुन्हेगार लख वेर ।  
हाथ जोड़ आगे खड़ा, सन्तदास होय भेर ॥६॥



मैं अक्वगुन का पूतजा, तुम गुनवन्ता राम ।  
 अक्वगुन विशा निहार हो, तो तीन लोक नहीं ठामा ॥७॥  
 सन्तदास बिनती करे, सुखो अर्ज अगदीश ।  
 कीन्हा पाप अचीर में, गुन्हा करो बगसीश ॥८॥  
 सन्तदास मरीब है, तुम हो गरीब निबाज ।  
 मोय निमाज्यो रामजी, बाँह गेहे की खाज ॥९॥  
 मैं तो गुना बान्ता, कामी और कृति-हीम ।  
 शरख विहारी रामजी, तुम हो जान-ब्रवीन ॥१०॥  
 सन्तदास मरीब वो, गोठा दीजे नाय ।  
 बाह पकड़ कइ लीधिये, हना-बोल पद माय ॥११॥  
 सब कीई माया मोद से, नाग रखो ससार ।  
 'सन्तदास निरघार के, एक राम आधार ॥१२॥  
 जन्म जन्म का सन्तदास, पालोकइ तेरा ।  
 दूजा स्वाकिन्द रामजी, तुम विन नहीं मेरा ॥१३॥  
 बालक मायो तां डरूँ, सो हूँ तेरा अश ।  
 अगल बगल का सन्तदास, परया नहीं कोई वेशा ॥१४॥

रोवत रोवत जात है, पूत पिता के साथ ।

अब कृपा कर राम जी, क्यों न पकड़ो हाथ ॥१५॥

रोवत रोवत पहुंचिया, पिता पकड़लिया हाथ ।

अब जावण देवे नहीं, चौरासी के साथ ॥१६॥

पिता हमारे राम है, सन्तदास है पूत ।

अर्श-स्पर्श दोऊं हो रह्या, जैसे उलज्या सूत ॥१७॥

राम मिलन की सन्तदास, मेरी श्रद्धा नाहिं ।

कृपा करके राम जी, आय-मिल्या मन माहिं ॥१८॥

यह तो तेरे रहन की, भुंपी थोथी नाहि ।

कृपा करके रामजी, आय विराज्मा माहिं ॥१९॥

राम तुम्हारे नाम की, मैं बलिहारी जाऊँ ।

धोय धाय उत्तम किया, गन्धा था यह टाऊँ ॥२०॥

गन्दा से बन्दा भया, राम विसारत नांय ।

अन्धा घट था सन्तदास, चन्दा उगा मांय ॥२१॥

साच कहूं तो मैं डरूं, सबै भूठ की धाम ।

काल रूप संसार से, तुम ही राखो राम ॥२२॥

सन्तदास इस वेद का, है केता निमपोन्न ।

मेरे तुम हो राम जी, रोम रोम रिखपाछ ॥२३॥

शुद्धि न न मांगू रामजी, सिद्धि भी मागठ नाहिं ।

सन्तदास की सुरत की, अटक रखो तुम माहिं ॥२४॥

शुद्धि-सिद्धि दोऊ अज्य है, डहक करत दिन धार ।

फिर बोरासी पढ़त है, वे जिन पारंवार ॥२५॥

‘सन्तदास’ मेकी-बदी, करै करावै राम ।

मेरा कुछ सारा नहीं, सब कुछ तेरा काम ॥२६॥

शुं धितरा नश पूतनी, सके नहीं कुछ आसि ।

यू शरय राम की सन्तदास, रना होय शुं रकसि ॥२७॥

साई धितरा सम्भदास, सब जग पूतनियां

कदा कई करतार की, राखे शुं रहिया ॥२८॥

अर्ग करत है सन्तदास, मुस से येदी भाक ।

अब शरण तुम्हारी राम जी, सुरी होय शुं राखा ॥२९॥

पकड़ गरीबी दीन होय, मुस से कहिये राम ।

तब पाषिगा सन्तदास, परम मुक्ति विभाम ॥३०॥

अजब घरीवी सन्तदास, जब तब लहै वचाय ।  
 भली नहीं भूगडी अवश्य, मनी मार ले जांय ॥३१॥  
 मनीधार इस खलक में, जीती गया न कोय ।  
 अभिमानी का शिर सन्तदास, निश्चय नीचा होय ॥३२॥  
 राम निरंजन ब्रह्म से, मिले निभाणां होय ।  
 मुरडाटे ही राम से, मिलया न दीढा कोय ॥३३॥  
 पकड गरीवी सन्तदास, रेह्या निभाणां होय ।  
 चित्त समाणां शब्द में, अब गंज न सक्के कोय ॥३४॥  
 राम विना बैकुण्ठ दे, तो मेरे किस काम ।  
 नाम सहित दे नारगी, तो वहीं बड़ा विश्राम ॥३५॥  
 सन्तदास यह भट पड़ो पाई कंचन देह ।  
 नाम सहित कोढ़ी गलत, मुझ को प्यारी वेह ॥३६॥  
 गलत कोढ़ व्है सन्तदास, जो यह विनशै देह ।  
 तो भी निश्चय नाम सूँ, छुटै नाहिं नेह ॥३७॥  
 मन शुख में गलतान है, तन सुख मे हरोन ।  
 यह तुम्हारा राम जी, कहो कौन सा त्रान ॥३८॥

तन दुस्विया होय सन्तदास, कोई पूष अम्म के पाप ।  
 राम पुकारया कहत है, इनको यह इन्साफ ॥३९॥  
 मन के औपधि मुक्ति की, राम नाम है एक ।  
 मन की औपध 'सन्तदास' कर्ता करी अनेक ॥४०॥

५० इति बिनय का अङ्ग सम्पूर्ण ॥

परम पूज्य सद्गुरु अनन्त

श्री पेमजी महाराज की संचित जीवनी

श्री सन्तदास महाराज की, नगर दांतड़े धाम ।

उनके शिष्य भये पेमजी, ग्राम खियासर नाम ॥

जगन्नाथ सीता भवन, प्रगटे पेम प्रवीन ।

जिनको जस वर्णन करू, चित चरणां में दीन ॥

सतरा सौं उन्नीस का, अगहन नौमी भोम ।

पेभ पुरुष प्रकट भये, रांका रजनी सोम ॥

वष<sup>१</sup> सप्तदस वीतियो, पुनि वीता चऊं मास ।

घर तजि विचरै अनतही, धरी सद्गुरु की आश ॥

ग्राम दांतड़े पूछिया, कीन्हा रेण निवास ।

सन्तदास जी मिलगया, पूरी मन की आश ॥

सन्तदास महाराज की, शरण पेम जी लीन्ह ।

सद्गुरु आज्ञा सिर धरी, रहे सदा आधीन ॥

राम मन्त्र सद्गुरु दिया, पेम पुरुष उरधार ।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध परखहूँ, मुनि समकहु म्पवहार ।  
 सक्त सतरह वर्ष पुनि, द्वीया लो सो माख ।  
 विप्र मास शुभ अष्टमी सद्गुरु कीन्दी ज्ञान ॥  
 हट आसन, माशा निरत, सुरत साधना योग ।  
 पैम पुरुष महाराज का, नाम साधना जोम ॥  
 परम पुरुष महाराज की, अगम समाधि अगाध ।  
 पट्ट मासे पैक आसणे, कर्णे सष ही साध ॥  
 आत्म अनुभव जब मयो, सत्-चित्त-भूमा रूप ।  
 निर्मय हूँ विचरत मये, जीवन मुक्त सुख रूप ॥  
 अनन्त जीव निर्मय किया, कई लमि करीं बखान ।  
 १८०६ फागण बदी, सातम मये निर्दान ॥

॥ इति ॥

# अथ श्री पेम जी महाराज कृत आरती

ऐसी आरती कर मन मेरा, जनम मरन का मेटू फेरा ।  
सुरत शब्द मिल हृदय आया, रोम-रोम सबही चेताया ।  
राम निरंजन चहुं दिस देखा, अन्तर मांहीं साहिव पेखा ।।  
अगम आरती वार न पारा, जन प्रेमदास भज सिरजन हारा ।।

॥ इति ॥

---



# अथ श्री स्वा महाराज प्रेम जी महाराज की अनुभव गिरी

गुरु परमात्मा निव नमो, पुनि विहुं काल के सन्त ।  
वन पेम उमय कर धन्दना, भगन्त कला अनन्त ॥

## बन्द —

राम नाम सठ शब्द इमारा, रट रट रामरमाइन्दा ।  
राम नाम सबको सुखदाई, सुख ही सुख ऊपजामन्दा ॥१॥  
राम नाम का निश्चय सारु, मज पर शिक्ता तिरापन्दा ।  
राम नाम प्रह्लाद पुकारै, कञ्चन ताय तपाइन्दा ॥२॥  
राम ही वेर दरार राम ही राम ही कथा सुनाइन्दा ।  
राम ही बाहर राम ही भीतर, राम ही मन परचाइन्दा ॥३॥  
राम ही राम रटो मेरे प्राणी, राम रवन धन खाइन्दा ।  
राम नाम से मन सुरायाली, रामो राम खिलाइन्दा ॥४॥  
धरया गमन बिध भया उजाळा, ब्रह्म भगन पर जान्दा ।  
काम क्रोध रिपु माल सकल अप, भाग सब हिं सान्दा ॥५॥

सुख सागर हंसादा आगर, मोती चून चुगाइन्दा ।

काग कुचाली भया मराली,

क्या क्या काम कमायन्दा ॥६॥

कहता सूरु वृक्षे पूरा, उल्टा पवन चढायन्दा ।

अष्ट कमल दल चकर फिरंदा,

लिव लग जोग कमाइन्दा ॥७॥

सुर को फेर पवन को बन्दे, उन मुन ताली त्वाइन्दा ।

जोगी जाग भाग जत पूरा,

सुखदेव वचन सुनाइन्दा ॥८॥

आसत है नासत भी नाही, सिद्ध आपा विसरायन्दा ।

जोगी जाण जुगत उत करणा,

तन गढ पटा लिखायन्दा ॥९॥

सोहं सासा अजब तमाशा, अमर ज्योत दिखलाइन्दा ।

काला पीला शाह सफेदी,

सुंग भरणा दिखलाइन्दा ॥१०॥

पेसा दरसे मूरा बरसे, माहें धीम मस जाइन्दा ।

इयड सर पुव पिछमदी घाटी,

पंक नाम हीय आइन्दा ॥११॥

तू तू कर तुम्हारा जम्हर, रुम भुम घोर सगाइन्दा ।

पम विन निरत करे एक पातर,

बिन रसना गुन मायन्दा ॥१२॥

त्रिकुटी छाजे अनइव वाजे, कर बिन ताल वजायन्दा ।

पांच पधीसों मिले अस्ताड़े,

भर भर व्याख्या पायन्दा ॥१३॥

मम मठपाला मया भिलाला, निज पद मांय समायन्दा ।

मंवर गुंगालु बुढ़ी पालू,

इस विष अनस्र अस्तायन्दा ॥१४॥

सुर भीर अन्दा मिले एक ठाई,

मिलकर अमी अबाइन्दा । ६

अस्र वृमालु सुजपा ठालु,

जाप अनपा व्यायन्दा ॥१५॥

सुन्न शिखर गढ़ काया नगरी,

हुकमा हुकम चलायन्दा ।

उल्टी नाल ऊंमगे सेजा,

जहां आकाश भरायन्दा ॥१६॥

सुख मण—गंगा खलके सेजा गगन महल्ल गरणाइन्दा ।

परा परी अनहद के आगे, रंरकार ठहरायन्दा ॥१७॥

तूं ही राम निरंजन तूं ही, अण अत्तर दिखत्तायन्दा ।

तूं ही मका मदीना तूं ही, मुह्ला वाग सुनायन्दा ॥१८॥

एको एक सकल घट भीतर, एको एक कुर्वाहिन्दा ।

जोय कहे सो दो जग जासी,

होय कर भूत विलायन्दा ॥१९॥

खेचर भूचर चाचर उनमुम अगोचर ज्ञान मुनाइन्दा ।

पांचूं मुन्डरा आत्मजानी,

पर विन हंस उड़ायेदा ॥२०॥

में बलि जाऊ सतगुरु चरणा, जिन ये भेद बतायन्दा ।

प्रेम दास ग्रं भया जीवाना, में वन्दा उस साहिदा ॥२१॥

## दोहा —

कोइय पीयें प्रम रस, जप अजपा आप ।  
पीयज सेवक प्रेमदास, अन संतदास परताप ॥

॥ इति निरामो सम्पत् ॥

## कुन्त —

सोदि अवीत नधिन्त रहै,  
रिष माम के साथ मसीद में सोना ।  
बीर चिकार का मय नहीं जागत,  
हेर जीओ घर का चहुं फोमा ।  
और अमल्ल का त्याग कर  
पुनि राम अमल्ल करै विम डूना ।  
धम कहै मज राज ह्युं प्रमठ,  
कीन नसै मठ वेश दिहना ॥

॥ इति ॥



## साखी

दुष्ट अभागी जीव के, राम न आवे दाय !  
वे भी सच्चा पेम जी, खर मिश्री से मर जाय ॥१॥  
राम नाम मुख से कहै, सिकल विकल होय मन्न ।  
स्वादन आवै पेम जी, कोरो चाव्यां अन्न ॥२॥  
कोरो काचो चाबकै, ऊपर पी पानी ।  
दुहागण पर प्रेम जी, राजा की रानी ॥३॥  
बाहर क्या दिखलाईए, जो अन्तर पाया ।  
मन में राजी पेम जी, गूंगे गुल खाया ॥४॥  
प्रेम गुप्ता नाम जप, बाहर बके चलाय ।  
ऊपर डाला बीज को, जीव जन्तु चुग जाय ॥५॥  
निन्दा नही निनाण है, जो सुण जाणो कीय ।  
खेत निनाण्या प्रेम जी, सिद्धा मोटा होय ॥६॥  
हंता तो मोती चुगै, सर्व चित्ताशी काग ।  
प्रेम रता रह नाम से, त्याग जिसा तैराग ॥७॥

जैसे श्वास सुनार को, वे एक सरीखी फूंक ।  
 इसो भजन कर प्रेम जी, मिलसी राम अप्पूक ॥८॥  
 राम नाम की प्रेम जी, मोड़ी पड़ी परकस ।  
 आराध्या सूं आनीया, उरुं डाकण के अरख ॥९॥  
 प्रेम सिपाही राम का, तब बांकी तल्लवार ।  
 कनक कामखी जीत के, मुजरो है दरवार ॥  
 अलख शब्द कोई जन नखि, ता बिष मेव अथाह ।  
 बचती है एक प्रेमदास, काया बीच कथाह ॥  
 प्रेम बरुख वं जगत कू, तू काहे योले ।  
 माटी करा टगल सु, से ना दया खोले ॥  
 निद्रा आई पमजी, सोटा मारया दोष ।  
 राम भजन की भीड़ है, माय शहर में सोष ॥  
 जागी जंगम मेवड़ा, श्रेष्ठ सयामी स्यांग ।  
 समके स्यों कर पमजी, कृप पड़ गई माग ॥  
 तन्कर को दक्या नहीं नदीं तस्कर पाया ।  
 गिन दक्या ही पमजी फुला योवाया ॥

प्रेमशाम कहता नहीं, कहता है ओरे ।  
 ज्युं तूवा दरियाव में, उवकत है जोरे ॥  
 गंगा गया न गोमती, पढिया न वेद पुराण ।  
 भोले भाले प्रेमजी, पद पास निरवाण ॥

### चौपाई

वैरागी सो मन वैरागी, आशा तृष्णा सब को त्यागी ।  
 राम रता पर निम्दा त्यागी, प्रेम कहै सो सत वैरागी ॥

॥ इति ॥



# परम धन आराध्य देव परम गुरु श्री अनन्त दरियाव महाराज का सक्षिप्त जीवन-चरित्र।

छन्द

श्री वेम पुरुष महाराज के, नामी शिष्य दरियाव ।  
 जिनको यश अपार है, दरिया मिमि अपार ॥१॥  
 कार विन्तन दरियाग को, हृदय प्रेम हुआस ।  
 कण्ठ कवच कक्षियां सुलै,  
 मिल मिल ज्योति दजास ॥२॥  
 अति आतुर हृदय पनी, विरह प्रेम जिह्वास ।  
 गर्-गर् बाखी अट पटी, सुमिरन ग्यासो स्वास ॥३॥  
 करुणा सुनि गुरु वेष मी, बोण्या सन्त सुमान ।  
 सुमति दुविषा दूरि करि,  
 परी पक्ष को प्यान ॥४॥

# दरियाव महाराज की उत्पत्ति



दरियाव



ब्रह्म ध्यान गुरु ध्यान है, गुरु ध्यान ब्रह्म ध्यान ।  
 समसत्ता गुरु ब्रह्म की, दोनों एक समान ॥५॥  
 लीला सद्गुरु देव की, अगुन सगुन भगवान ।  
 सगुन अगुन द्वै एक है समभै सन्त सुजान ॥६॥  
 अब सद्गुरु दरियाव की, लीला करों उचार ।  
 सब सन्तन की प्रेरणा, कछुक कहीं विस्तार ॥७॥

### दोहा

सतरा सो की सोल में, वर्ष बतीसो जान ।  
 प्रास भाद्रवदी अष्टमी, प्रकटै कृपा निधान ॥१॥

### विस्तार

#### छन्द

मात-पिता मन चिन्त, पुत्र विन जगमें कहिए ।  
 विना पुत्र संसार नहीं, चित साता लहिए ॥१॥  
 ताके इक पाड़ोस, उसीने तानो दीयो ।  
 विन मुख देखे दोष, धिक् है तुमरो जीयो ॥२॥

तब उर ठपजा क्रोध, पिता भ तजि पर बारा ।  
 मक्का मदीना आय, करों पुनि तीर्थ सारा ॥३॥  
 मक्का कित्या निवास, बप द्योय जाय बड़ीतर ।  
 तीन मास उपरन्त, रहा रीता का रीता ॥५॥  
 आय मदीना माय, रखा दस मास अखुटी ।  
 पूरिम मभकी आश, बात यचना की झूठी ॥५॥  
 मना मनोरथ धार मारि, निज साथे झीन्ही ।  
 चले द्वारिका धाम सुरत, हरि चरखा दीन्ही ॥६॥  
 चले पश्चिम की ओर, धार कर करडी आशा ।  
 रहै शारिका छाव, अष्ट दस बीत मासा ॥७॥  
 तहाँ करयो हरि भजन, रामभी सुखी पुकारा ।  
 अर्ध निशा की वर कियो अपरज करतारा ॥८॥  
 स्वप्ने दीन्ह अबाज पुत्र एक तरे आवै ।  
 बधु सुखै तत्काल, हर्ष अति मनमें आवै ॥९॥  
 जो आद्यत में चिन्त, स्वप्न में सोही दरशै ।  
 परसे नहीं प्रत्यक्ष, आस लग त्योंही ठरसे ॥१०॥

यं जिन्तित मन मांहिं, ऊठिया बड़े सवेरे ।  
 शोच क्रिया हित करन सिन्धु तट मान गवेरे ॥११॥  
 बड़े फजर की वेर, गया सिन्धु तट नांगे ।  
 सलिल नहात जब मान, फैन मे सुत दर्शनै ॥१२॥  
 लीन्ह पुत्र उर लाय. हरप मन भवन सिधाये ।  
 दीन नारी को पुत्र, मोद दंपति मन भाये ॥१३॥  
 पिता मानमद मोद, मात गीगा हर्षाई ।  
 पय विन शिशु निर्वाह, किसी विध होय सहाई ॥१४॥  
 एक विप्र घनश्याम, ताहि को सुत पुनि दीन्हा ।  
 पय पावण के हेत, पुत्र सम पालन कीन्हा ॥१५॥

### दोहा

अल्प काल के माय शिशु अन्न प्रासन लागा ।  
 मान मतो विचार सुवन को मांगन पागा ॥२॥

### मान शहा बोले

अब सुत असनहि लेसके पय विन निर्वाह होय ।  
 तात तात को दीजिये, खुशी रहो तुम दीय ॥३॥

### घनश्याम की पत्नी घोली—

यह वाक्पक मम प्राण सम, मैं अब वेऊ ठोरे ।  
 कृपा कर इस वाक्पको, कपहु भिजा म्यो मोप ॥४॥

### हारिका में खाना होना

मीमा मवनी पुत्रनी, भिजे मान घनश्याम ।  
 हुवा खाना दैयति, राम राम कह राम ॥५॥

### कड़िया का साथ होना

अमिन्न मेल असंग संम, यह भारी के हाथ ।  
 विषना संगत मे लिया, धनी असंभव बात ॥६॥  
 पुरी हारिका परस के, लीन्ह मानसा साथ ।  
 मवन कीन्ह भिज मवन विश कड़िया इपत भाव ॥७॥

जयनारण थाने पर दरियाव महाराज का नाम  
 करण होना और मण्डित का भविष्य बताना  
 आय एक विशान् किया के शता भारी ।  
 भी फन लेकर ऊम पहुँचिया नर और चारी ॥१॥

करी अरज महाराज पुत्र का नाम बताओ ।  
 सुन दण्डित प्रवीन घड़ि पल लग्न कराओ ॥२॥  
 लग्न सारणी देखि वर्ष पर बोध विचारे ।  
 शिघ्र बोल मत सोध, नामको अर्थ निकारे ॥३॥

### श्रीपण्डित बोले

अद्भुत योग संभालि कहै यह गर्भ न आया ।  
 और ठौर कहीं मिला, जंगल या जलमें पाया ॥४॥  
 नही मातु-पितु अंस है, नही वंश व्यवहार ।  
 लग्न ग्रह नहीं मिलत है, सो मैं कहा विचार ॥५॥  
 नाम मिला सो कहत हों, नहीं कछु हमरो डाव ।  
 मिला तोहि दरियाव में, धरो नाम दरियाव ॥६॥

### पिता बोले

धन्य पंडित तारीफ भले तुम सोधन कीन्हा ।  
 पुरी द्वारिका मांहि, सिन्धु मोहि यह सुत दीना ॥७॥



## दोहा

ऐसे निठ सुख सँदे, लडाये जालने ।  
 कबहुक गोद प्रयेक, मुजाये पालने ॥

## पहला चमत्कार—

पान पणे हरियाब एक दिन सुख फरमायो ।  
 काख रूप मागेम्ह, देव दर्शन को भायो ।

## भाषा

वासुकि नागराज श्री अनन्त हरियाब महाराज के दर्शन करने आया और सूर्य की धूप मुह पर आती देख कर अपनी कण की छाया करके सेवा का काम लिया । यह विचित्र पटना देख कर आपके भावा पिता आश्चर्यान्वित हो कर कामी के पास आकर सब सुतान्त सुनाया । कामी ने अपने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ देख कर कहा—

काजी देख कतेव बहुत विधि शीश हल्यो ।  
 कलारूप करतूत बड़ो पेगम्बर आयो ।  
 ऐसी बात अनूप कहनमें आवे नांही ।  
 स्वर्ग मृत्यु पाताल ताहि मध्य होत बड़ाई ।  
 प्रथम वर्ष एक दीय तृतीय भया उजासा ।  
 चतुर्थ पंच अरु छः रत्न ज्योति प्रकाशा ।  
 वर्ष सप्त का भया, पितु परलोक सिधाया ।  
 जैतारण से चाल, मातु संग राहण आया ।  
 नानां नाम कमीस, भाग मोटो अति भारी ।  
 जन दरिया से प्रीति रीति आरत उरधारी ।

(रेणमें द्मरा चमत्कार)

एक समय दरियाव रमै बालक संग जाई ।  
 ऐसी दशा अनूप कहनि में आवै नांही ।  
 पण्डित चतुर सुज्ञान चाल काशी से आयो ।  
 देखत मुख दीदार, बहुत आनंद सुख पायो ।

## भाग

पश्चिमत स्वरूपानन्दजी हस्त रसा वरा कर पीले—  
 सामुद्रिक ग्रन्थ विचार, पढ़े और अर्थ पठाये  
 होसी बड़ो फकीर अबलिया पुरुष कराये ।  
 ऐसे अजब अनूप बेपता इरशन करहीं ।  
 दरस शरण जो आप रही पर भय भय तरहीं ।  
 शाह सुलतान कबीर फरीद हेमठ शा आदू ।  
 पश्चिमत कृत विचार फकत दरिया सा सादू ।

पश्चिमत स्वरूपानन्द भी ने दरियाब महाराज की  
 अद्भुतता देख कर अपना जन्म सफल करने के  
 लिए विद्या पढ़ान के प्रयोगन से काशी लेमये  
 और इस प्रकार ग्रन्थ पढ़ाये—

संस्कृत व्याकरण पढ़ी और धारम कीन्ही ।  
 पुनि पढ़ सखी पुरान शास्त्र छ संदिता जीन्ही ॥

ज्योतिष पिंगय छन्द, न्याय तरकादिक सारा ।  
 काव्यरु नाटक कोष और वेदान्त विचारा ।  
 पढी फारसी फेर, कुरान कलमा सब हेरा ।  
 हिन्दु मुसलमान ज्ञान दोनों बत केरा ॥  
 पढी भागवत और पढी रामायण गीता ।  
 पढे योग वाशिष्ठ वेद अंग संहिता जेता ॥  
 ये सब पढ कर फिर रेण पधारने के पश्चात् ।  
 आप साधन चनुष्टम में सतत संलग्न होगये ॥

एक बार उपनिषद् अवलोकन करते समय अत्यन्त  
 गूढ विषय समझ आगया, जिसका भाषा में इस प्रकार  
 अनुवाद है—

अधिष्ठान आत्म-अचल दृष्टा स्पृष्ट जान ।  
 ज्ञाता ज्ञान रु ज्ञेय निज, अनुभव सद्गुरु ज्ञान ॥  
 यह उपनिषद् वचन सुनि, दरिया भये उदास ।  
 गुरु विन ज्ञान न उपजै, गुरु हित उपजी प्यास ॥

## छन्द

अकसट तीरथ नहाय करै, पुष्पी का दौरा ।  
 पहुँ फेर फिर आम गुरु बिन रहता दौरा ॥  
 कब मिलि हैं गुरुदेव सत्य समरथ गुरु पाठ ।  
 कब द्विषिषा भिट आम साधु का शिष्य कहाऊ ॥

श्री भगवान की नम वाणो —

तब ही व्यापक विष्णु कृपा कर बाल बाणी ।  
 दरिया पीरज धार मिलै मुहु आत्म ज्ञानी ॥

दरिया साह बोले—

मैं दासज की दास, सवा चरखामें राखो ।  
 यक्ति दाम ही बेन और दूजी बनि भाखो ॥  
 सव घट व्यापक राम सब प्रेरक श्री स्वामी ।  
 करी प्रेरक्य पुर प्रेम उर अन्तरायामी ॥

हरि इच्छा उर पेम जगी हृदयमें ऐमे ।  
 तुरत प्रसूती धेतु, जले वच्छा पर तैसे ।  
 राहण पुरी मभार पेम जी सुरत लगाई ।  
 गुरु शिष्य मिलन संयोग रामजी दियो मिलाई ॥

### पुनः नम वाणी—

युनि दरिया दिश शब्द ऐम औंरुं परकाशा ॥  
 राहण आवै प्रेम, गुरु कर दरिया दास्य ॥

### दोहा

भिक्ष कारण पेम जी, गये ग्राम के मांही ।  
 जाय खड़े घर यवन के, बौले कछु भी नांहीं ।  
 देखत जन दरियाव, हर्ष आनन्द मन मांही ॥  
 दयानिधि धन्य जाण, बड़ा गुरु देव गुसाई ॥  
 पूड़े चरण लिपटाय, जोर कर स्तुति कीन्हें ।  
 मया कगी महागान हस्त पिलाय मायक ॥३॥

कहै दास हरियाव, कृपा प्रभु मो पै कीजि ।  
 पुर्व प्रीति पहिचान, मेव मक्ति को हीजि ॥

श्री पमजी महाराज का उपदेश—

दोहा

हरिया ! रमता राम में वेश काल नहीं कोय ।  
 तीन प्रखेद रहित है, मद वाताया ताय ।  
 रोम रोम रमतीत है, सब पट म्यापक सोय ।  
 वेश काल प्रखेद यिनु, सत-चित्त-आनन्द जीय ॥

द्वन्द्व

भूत भविष्य वर्तमान, काल तीनों में जानो ।  
 एक रस सब पट मांछि, काल मत मदन मानो ॥  
 सर्व रूप है राम, सर्व सिद्धान्त इंदोरा ।  
 नृज काल वस्तु मेव राम में कहै सो दोरा ॥

ऐसा रमता राम सर्व शास्त्रों का हेला ।  
 रटो गुरु मुख राम, राम विनु गति दूहेला ॥  
 राम रटै शिव शेष, सन कादिक नारद गावै ।  
 काक गरुड़ लोमैस, वशिष्ठ हृदय में ध्यवै ॥  
 बालमीकि मातंक, सवरी उपदेश सुनाया ।  
 सप्त ऋषि मुख राम, दिया सो तव जन गाया ॥  
 ऐसा राम प्रताप ब्रह्म ऋषि भये मुनिशा ।  
 रामायण सत कोटि जगत में कहै सन्देशा ॥  
 बालमीकि मुख राम, धर्म सुत कारज कीन्हा ।  
 राम नाम तत् सार सोही में तुझ को दीन्हा ॥  
 चार युगां परमान, राम को नाम घतायो ।  
 दरिया सुमिरो राम, मनुष्य अवसर भल पायो ॥  
 जगत भ्रमना त्याग रामको सुमिरन कीजै ।  
 सुरत शब्द में राखि गुरु गम अमृत पीजै ॥  
 वतीसा को जन्म उन्तरे दिक्षा लीन्ही ।  
 कातिं सुढी ११ सी प्रेम जी कृपा कीन्हीं ॥



शिव मन्त्र गुरुवन सदा पारबती प्याया ।

मन दरिया महाराज राम रसना सु गाया ॥

श्री दरिया महाराज अर्ज करते हैं—

हाथ जोड़ दण्डोत चरन्म शीरा नमाऊ ।

गुरु कर कमल सिर मोर अवे में अवि सुख पाऊ ॥

श्री प्रेमजी फरमाते हैं—

राम नाम ह राम, कहे [में] अम्पत्र सिधाया ।

प्रसन्न रहो दरियाव फर कभी रमता आया ॥

गस कहे महाराज प्रेमजी रमनी कीन्हीं ।

दरिया प्रेम अपिर मुक आया सिर कीन्हीं ॥

माधन काल

बैठ एकान्त—स्वान, फर आसन दढमादा

काशा सुरात निहार पलक पट डारे आया ॥

उनमुति मद्राधार, गुरु मुख सुमिरन साधे ।  
निशि दिन प्रीति बढ़ाय, गुरु मुख राम अराधे ॥

### स्थान परिचय

रसना चौकी चूर पूर कण्ठा प्रकाशा ।  
हृदय हर्ष अपार नाभि मध्य ज्योति उजासा ॥  
कमल पूत के स्थान चूर चाले अब आगे ।  
शिव सुत धर विश्राम, सिस्वर के मार्ग लागे ॥  
दीन कूट दे पूठ, वाट आगे की हेरा ।  
भंवर गुफा को भेदि, द्वार दसवे दे डेरा ॥  
बरस एक ऋषि मास, दास काया गढ़ जीता ।  
मित्या ब्रह्म में जाय, आप मे भया नचीता ॥

महा लक्ष्मी जी अमृत लेकर दरियाव महाराज  
को दर्शन देने पधारीं और बोलीं—

कहै लक्ष्मी जी आप पित्रो अमृत तुम दासा ।  
अमृत रस अधिकार, ज्ञान केअल पर काशा ॥

## दरिया महाराज

सुन माता यह बात हाथ अमृत नहीं लेऊ ।  
 सद्गुरु के परनाथ राम रस अमृत पीऊ ॥  
 तीन कास तिहुँ शोरु और बेला सम जोई ।  
 राम नाम सम सुषा माठ हीसे नहीं फाई ॥

## महालक्ष्मी

धन्य धन्य ही दास, घ प घ-प है पितु माता ।  
 धन्य गुरु महाराज, मोक्षके राह बताता ॥  
 ऐसे कह कर आप भी निज धाम सिपाई ।  
 दरिया सा महाराज वृत्ति निज रूप समाई ॥

## देव अपि नारदजी पधारे

एक समय अपिराज बाल सू मण्डल आयें ।  
 मुरघर मारु वंश नयरे राइस सर साये ॥

राम राम कह राम भया ऋषि हर्ष अपारा ।

प्रीत परस्पर मिलन प्रीति कुण वर्ण पारा ॥

### श्री दरियाव महाराज

कृपा करी कृपाल कहो प्रभू कहां से श्राये ।

आप भक्त की सहाय करण भगवान पठाये ॥

### श्री नारदजी

प्रसन्न हो महाराज ! श्री मुख कथा उचारी ।

स्वर्गादिक वैकुण्ठ भक्त की सोभा भारी ॥

सनकादिक ऋषि राय पारपद सदा चितारे ।

महा लक्ष्मी महाराज पुत्रवत तोहि निहारे ॥

### श्रीदरियाव महाराज

कहै दास दरियाव सुनो ऋषि नारद स्वामी ।

शिव ब्रह्मा आराध विष्णु है सब का स्वामी ॥

मैं तो अनुपर सदा दास परनन को बैहरो ।  
 ररंकार भरवार और डूजी नहीं मेरो ॥  
 तुम ना ओ बैकुण्ठ विष्णु से कहिये म्हारी ।  
 कदा दास हरियाम सदा शरणा मत पारी ॥  
 जब नारद भगवान् आप बैकुण्ठ पधारयो ।  
 धन्य! धन्य!! हरियान् श्री मुख धन्नन ष्ठधारया ॥

### श्री भगवानुवाच

कही नारद महाराज भक्त हरियाब है कैसा ।  
 जो जो देखी बात कही मुनि मोको वैसा ॥

### श्री नारदजी

भक्ति पराक्रम पूर शूर साहस मति पीरा ।  
 निश-दिन सुमिरत राम सदा सुख सागर सीरा ॥  
 करसी भक्ति अक्षय्य लोके मैं नाम प्रकाशि ।  
 अनन्त ही नीव उद्धार, इसा हरिया सा मापै ॥

## श्री भगवान्

ऋषि नारद! यह सुयश मोहि तुम नीक सुनावा ।  
प्रसन्न हूँ भगवान् ऋषि को कण्ठ लगावा ॥

### एक दिन आकाश वाणी हुई

एक दिनां आकाश भई दरिया को वाणी ।  
इच्छा रूपी आप बोलिया सारंग पानी ।

### आकाश वाणी

मंहगो होसी नाज, काल वर्तेगो भारी ।  
पांच सेर परमान तोल एक रुपया लारी ।

श्री दरियाव महाराज शिष्यों को कहते हैं

ऐसी अगभी अवाज़ विघ्न में कसर न-काहीं ।  
पहली-लेवां नाज कहां विश्वास रहाई ॥

## शिष्य बोल

सुनो अरब महाराज नाम तेनो में कीन्हों ।  
 काठिक सुर को कोस तुलावन निग्रय कीन्हों ॥

### श्री दरियाव महाराज

क्यों कीनों अन्न मोत तुम, पहली दिन परसीठ  
 गर्भ बास रसक हरि, आनी नहीं तुम रीठ ॥

### महाजन (धान देने वाला)

नहीं देतो ओ धान आज में नफो फमावा ।  
 चूक गया अब बास, काम फीना में हाया ॥  
 महाजन मन पछिठाव करे मन चिन्ता भारी ।  
 राम भई वे सन्त पाठ भाषे हे सारी ॥

श्री दरियाव जी महाराज अपने शिष्य को  
 ध्याना देते हैं

नाम लियो ये मोन, भाय पाखी फिर कीमै ॥  
 राम भरोसो रास, राम की सुमिरन कीमै ॥

शिष्य कुशालीराम जी सौदा फेरने को गये

कहो सेठ क्या बात चित्तमें हर्ष न भाई ।  
क्या चितवत चित मांहि फिकर की जिकर चलाई ॥

सेठ बोला

नफो लिख्यो तुम भाग, हानि लिब्लाट हमारे ।  
मनमें फियो विचार टरै नहीं काहु टारै ॥

सन्त कुशाली राम जी बोले

नाज लेवां नहीं हमा गुरु आज्ञा नही भाई ।  
दरिया सा महाराज राम की शरण बताई ॥  
ममकर लिखी सो पत्रीका, वापिस हम को दो ।  
तुम लो लिखी सो चिट्ठियां अपनी पाछी लो ॥

सेठ बोला

सन्त सदा तुम धन्य हो, हो तुम पूरे साध ।  
ऐसी करनी को करै. जाका मता अगाध ॥



### अगला वृत्तान्त

पीछे का वृत्तान्त संक्षेप में बर्ण सुनाऊँ ।  
 सौदा दीना फेर, खरप पर बनी तो माँऊँ ॥  
 दिन इस को ले घान परे जीमख को राख्यो ।  
 कुशाबराम सुद जाय आप कोठी में नाख्यो ॥  
 कोठी में करतूत अजा यह अजब दिसाई ।  
 बात गजब है अजब नाम की महिमा भाई ॥

### विशेष वृत्तान्त

बीतरह बर्ष दुकाल अन्न की बहु कठिनाई ।  
 इंगर पूरखदास और नानक गुरु भाई ॥  
 फूदभास्य से बात सकल मिल एम जघाई ।  
 कह सतगुरु की सेव वक्त है अति कठि नाई ॥  
 तुम पर रामी राम गुरां की कृपा मारी ।  
 तुम घनबत अपार मिष्यो संयोग करारी ।  
 ऐसी सजाह बिचार संमत में पीछे आया ॥  
 इन्तजाम कर खूब, मेद दरिया सा पाया ॥

## श्री दरियाव जी महाराज

- दरिया सब दिश देख सभी की सुरत निहारी ।  
 - मनकी जाननहार आप यूँ गिरा उचारी ॥  
 कहें आप गुरु देव मिसलत थां कीनी काची ।  
 नहीं राम विश्वास संगत रंग-लागो छाछी ॥  
 वृद्ध भाण धन घमण्ड जावो तुम अपने घर को ।  
 हमरी संगत मांहि नहीं दर ऐसा नर को ॥  
 - करी मनाही आप अवे-कृण सके बुलाई ।  
 सलाहगीर चुप चाप अवे कछु नाहीं बसाई ॥

वृद्धभाण जी मन ही मन संकल्प करते हैं

- संत संगत-के हेतु वृद्धजी बाहर बैठे,  
 वर्षा ऋतु के मांहि फेर पुरनाला हेठे  
 दरिया सा-की मात काज कछु बाहर आई ।  
 कामणी दमक उजास वृद्ध को देखा जाई ॥

## श्री माता जी

यह बैठा है कौन? मेघ नल मजि भाई ।  
उपद बहुत है तात बली पर अम्बर भाई ॥

## वृद्धभाण जी बोले

मातु! दास वृद्धभाण भवन में किस विधि आऊँ ।  
गुरु आज्ञा नहीं मोहि पादर पैठो गुस्य गाऊँ ॥

श्री माता जी श्री दरिया सा से फरमाती हैं

सुनो तात! बुस पूर कष्ट पावै वृद्ध माना ।  
साझी भीतर वेग, गुमा बकरीस कराना ॥

## पुन

सुनकर मातृ वच्य आप वृद्ध भीतर जाये ।  
कर करुना गुरु वेव शिष्य को पीर बन्धाये ॥

## श्री वृद्धमाण जी कृत स्तुति

### छन्द

अष्ट सिद्धि नव निद्धि सदा सन्तन के आगे ।  
 और विघ्न की कौन देख सब दूरा भागे ॥  
 कामधेतु कल वृत्त, पदारथ मणि चिन्तामणि ।  
 च्यार मुक्ति वैकुण्ठ, नहीं इच्छा स्वप्ने पणि ॥  
 छाडत माया संग रहै नित प्रेम हजूरी ।  
 विघ्न विलप हो जाय जाय सौ कोसा दूरी ॥  
 ऐसे प्रभू दयाल सहाय सन्तन की करते ।  
 धन्य धन्य गुरु देव त्राहि मम आरत हरते ॥

### श्री दरियाव महाराज

रखना धीरज धार प्रेम से सुमिरो रामा ।  
 घट घट व्यापक प्रर, पूरवै सबहो श्यामा ॥  
 घर अरु अचर र नाग कीट कुंजर सब पोखे ।  
 भूले नहीं भगवान जथा, जल स्थल में तोषे ॥

## श्री वृद्धभाण जी

सुनत बचम गुरु वेव के, मन आयो विश्वास ।  
मस्तक पर गुरु परख में, [कह] तुम सद्गुरु में रास

श्री दरियाव महाराज ने एक दिन पूछा  
चौपाई

एक दिवस दरिया सा बोले,  
अद्विम अतीत विश्वास अमोले  
नाम जियो सो वो पाखा फेरा,  
किस बिष सर्ष पत्ते पर केरा

फुशालराम जी बोले

चौपाई

अरे कुशान सुनो गुरु ववा,  
पर व्यय पत्ते सो भापी मवा

दिन दस को अन्न कोठी में डारा,

उन्से अब तक होय गुजारा ॥

सो अन्न खुटयो न मोल मंगायो,

राम कृपा से भोग लखायो ॥

श्री दरियाव महाराज फरमाते हैं

चौपाई

यह क्या बात भई कोठी में,

अन्न छः मास सज्यो रोटी में ।

कहन सुनन असंभव वाता,

विघ्न भयो कोठी मे ताता ॥

ऋद्धि सिद्धि कोठी में वासा,

जब तब करे भक्ति को नाशा ।

जाते कोठी बाहर डारी,

राम राम मुख राम उचारो ॥

## पुन (चौपाई)

सुनि गुरु मिरा कुशांत सुशाली,

कोठी ठोड़ कर बाहर चारी ।

दोहा

कोठी फेंकी बाहर, रास राम विस्वास ।

माया की इच्छा नहीं ऐसा हरियादास ॥

## श्रद्धि-सिद्धि बोली

श्रद्धि सिद्ध भोड़े हाथ नाथ सेवा कछु नीमै ।

मेजी भी भगवान् सेवा मिन मन न पठीमै ॥

सन्त बना की सेवा विना पिकु नीनन स्वामी ।

आप हरि के हास मुक नीनन सुख धामी ॥

## श्री हरियाब महाराज

मज्जम सार एक वल्ल और कछु चरिय नार्हीं ।

बेद ग्रन्थ गुरु धन सभी सांघी करमाई ॥

ऋद्धि सुद्धि तुम सुनो, शीघ्र नागौर सिधाओ ।  
 हरखराम घर जाय सन्त सेवा अपनाओ ॥  
 करो जनों की सेव सफल कर जन्म पधारो ।  
 मुझे एक चित प्यास लगे रामयो प्यारो ॥  
 हरका हरिका दास है, वैश्य वंश व्यवहार ।  
 ता घर रहना ठीक है, सेवा करो अपार ॥

### दोहा

कोठी में जो सिद्धि थी, तारें डारी बाहर ।  
 राम भजै साचे मते, तज्यो जगत व्यवहार ॥  
 राम भरोसे राम जन, तजे और विश्वास ।  
 काहू की परवाह नही, निर्भय दरिया दास ॥

एक समय जोधपुर नरेश महाराज वकतसिंह जी  
 ने अपने पता को राज्य लिप्सा के भाओं से प्रेरित  
 होकर पितृ-हत्या कर डाली, जिस के फलस्वरूप  
 पिता की सूक्ष्म आत्मा प्रेत योनि को प्राप्त हो गई



और सदैव महलों में प्रेत मूर्ति दीखने लगी। इस अपराध से राजा अत्यन्त दुःखी होमय और पितृ हत्या के कारण राजा सदैव चिन्तितुर रहने लग। आस्तिर महाराज श्री हरियाब श्री के पधारन से प्रेत की सद्मति हो गई और राजा की हत्या निवृत्त हुई जिसका संक्षिप्त पद्यानुबन्ध इस प्रकार है -

### छन्द

अज्ञ करी नृप यह 'मोहि सम पापी नाहीं ।  
 तात पात में करी, राज्य की इच्छा तांही ॥  
 है साधो अपराध कौन बिधि छूटे स्वामी ।  
 श्री मुख बैन उच्चार आप हो अन्तरयामी ॥  
 अब सन्त दास परवाप, ताप तन रहे न कोई ।  
 मैं शरनामव तोरि बिरथ अब अपनो भोई ॥

### उत्तर

सुन नृपति के बैम, आप मुख गिरा उचारी ।  
 प्रभा पुत्र क्यों पाल न्याय भीजे-पिली ॥

काना सुनी जो बात, धार ज्यों मत चित माहीं ।

निज नैनासूं देख, अदल तुम न्याव चुकाई ॥

षट् मास लग वचन पालना निज सुखदाई ।

फेर नफो होय देख, करो आगे मन भाई ॥

तव राजा मन सोच, प्रचय तत्काल विचारी ।

धरै कपट मन मांहि, छाव दोय करी तैयारी ॥

इक मींगणा लीद, एक मिण्ठान्न भराई ।

करै परीक्षा राम, मीगणां आनि धराई ॥

कहै राम कर जोरि, अर्ज मैं करहूं स्कामी ।

वर्ताओ प्रसाद, माफि सब करिये स्वामी ॥

अन्तर जामी आप समझ मन मांही लीन्हीं ।

पूछ प्रचाकी बात, परीक्षा मेरी कीन्हीं ॥

कहै आप महाराज, छाव वह पहली लाओ ।

लीद मीगणां मांहि, जिकी तुम क्यों नहीं पाओ ॥

यूं कह धरियो हाथ, तुरत वह भई मिठाई ।

राजा सूण ले आज, सर्व को दो धरताई ॥

अमरज देख मन मांही, राय के भयो भरोसो  
 यह समरप महाराज, कियो में भूल अवरोसो ॥  
 गुन्हा कराया माफ, जोरि कर अजी कीर्दी ।  
 आप गुरु में शिष्य, परम की छाया लीर्दी ॥

ऐसे कह कर राजा शरणागत होया और,  
 महाराज ने राजा को कृत्य-कृत्य कर दिया ।

### दोहा

राम नाम प्रतापें, सुखम सभी कुष होय । १७५  
 नाना विष परिषय भये, कहन सके जन कीय ॥  
 प्रारम्भ प्रथि ब-प था, सोलन भीगा भीमै ।  
 सी समाप्त अण हूँ मया, अण भया ब्रह्म संयोग ॥  
 अमन्त जीव पैठाय कर, हे राम नाम उपदेश ।  
 अमम अचल निरबानपद, परशा प्रह्य स्वदेश ॥  
 राम नाम तत्सार है, शक न मानी कीय ।  
 भजन प्रताप की कह सके, कीट मुद्ग सम हीय ॥

वर्ष तयांसी मास त्रय, दिन वाईस वदीत ।  
 राम भजन गुरु गम सहित, लीन मीच भ्रम जीत ॥  
 अनन्त जीव चैताय राम के सम्मुख कीन्हा ।  
 वेद भेद समझाय परम परमार्थ दीन्हा ॥  
 राम मंत्र दे ज्ञान ध्यान वेदोक्त बताया ।  
 राम साधना योग सुरत से शब्द मिलाया ॥  
 मण्डण कर हरिनाम खंडना करीन कोई ।  
 अनुभव दिया कराय सन्त जन ध्यावे सोई ॥  
 शिष्य सम्प्रदा विपद् कहत कुण पार वसावे ।  
 जिनके प्रत्यक् नाम उन्हींका जन जस गावे ॥  
 नाम धाम आगे कहों, शिष्य सम्प्रदा जोग ।  
 संख्या सुत्तम कहत हों, पावन सन्त सुयोग्य ॥

॥ इति श्री दरियाव महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र समाप्त ॥

श्री दरियाव महाराज की  
अनुभव गिरा प्रारम्भ

## अथ श्री राम सद्गुरु देवजी की आरती

ऐसी आरती निश दिन करिये,

राम सुमिर भव सागर तरिये ।

तेन मन अरप चरण चित दीजै,

सद्गुरु शब्द हृदय धर लीजै ॥

देह देवल विच आतम पूजा,

देव निरंजन और न दूजा ।

दीपक ज्ञान पांच कर वाती,

धूप ध्यान खेवों दिन राती ॥

अनहद भालर शब्द अखण्डा,

निश दिन सेव करै मन पण्डा ॥

आनन्द आरती आतम देवा,

जन दरियाव करै जहां सेवा ॥

॥ इति आरती सम्पूर्णा ॥

## श्री सद्गुरु देव जी को श्रद्धा

सास्त्री नमो—राम पर ब्रह्म जो, सद्गुरु सन्त अपार ।  
अन 'हरिया' कन्दन करे, पल्ल—पल्ल बारम्बार ॥१॥  
नमो नमो हरि गुरु नमो,  
नमो नमो सब सन्त ।  
अन 'हरिया' कन्दन करे,  
नमो नमो भगवन्त ॥२॥  
'हरिया' सद्गुरु भेटिया,  
आ दिन धन्म समाध ।  
अक्षयां शम्भु सुनाय कै,  
मन्तक शीन्हा दाध ॥३॥  
सद्गुरु हावा मुक्ति का,  
'हरिया' प्रेम दयाल ।  
छपा कर परखीं लिया,  
मेदूया सकल अंजाव ॥४॥

अन्तर थो वहु जन्म को,

सद्गुरु भांग्यो आय ।

‘हरिया’ पति से रूठणों,

अब करि प्रीति बनाय ॥५॥

जन ‘हरिया’ हरि भक्ति की,

गुरुं बताई वाट ।

भूला ऊजड़ जाय था,

नर्क पड़न के घाट ॥६॥

‘हरिया’ सद्गुरु शब्द से,

मिट गई खैचाताण ।

भरम अन्धेरा मिट गया,

परशा पद<sup>३</sup> निरवाण ॥७॥

‘हरिया’ सद्गुरु शब्द की,

लागी चोट सुठौर ।



वैषम्य से भिद्यन्न भया,  
मिट गई मनकी दीड़ ॥८॥

डुब रहा भय सिद्धि में,  
लोभ-मोह-की पार ।

‘हरिया’ गुरु वैरु मित्रा,  
कर दिया परले पार ॥९॥

‘हरिया’ गुरु गरबा मित्रा,  
कर्म किया सब रद ।

मूठा भरम छुड़ाय कर,  
पकड़ाया सत शब्द ॥१०॥

‘हरिया’ मृतक वेस करि, सद्गुरु कीन्ही रीक ।

नाम सभियन मोहि दिया  
तीन लोक को धीम ॥११॥

तीत लोक को धीम है,  
‘र’ री ‘म’ मो होय अह ।

‘दरिया’ तन मन अरप कै,

भजिये होय निशङ्क ॥१२॥

जन ‘दरिया’ गुरु देव जी, सध विधि दीन्ह वताय ।

जो चाहो निज धाम को,

श्वास उश्वासों ध्याय ॥१३॥

जन ‘दरिया’ सद्गुरु मिले, कोई पूर्व के पुण्य ।

जड्ड पलट चेतन किया, प्राण मिलाया \* शुन्य ॥१४॥

‘दरिया’ सद्गुरु शब्द से, गति-मति पलटै अंग ।

कर्म काल मनके मितै, हरि भज भये सुरंग ॥१५॥

नहीं था राम रहीम का, मैं मति हीन अजान ।

‘दरिया’ शुद्ध-बुद्धि ज्ञान दे,

सद्गुरु किया सुजान ॥१६॥

सीता था बहु जन्म का, सद्गुरु दिया जगाय ।

जन ‘दरिया’ गुरु शब्द से,

सब दुख गये विलाय ॥१७॥

सद्गुरु शब्दों मिट गया, हरिया संशय शोक ।  
 औपपत्ति वे हरि नाम का, वन मन किया गिरोम ॥१८॥  
 'हरिया' सद्गुरु कृपा करि, शब्द जमाया एक ।  
 ज्ञानव ही चेतन मया, नेवर सुखे अनेक ॥१९॥  
 'हरिया' गुरु पूरे मित्रे, नाम दिखाया नूर ।  
 निशा मई सुख ऊपमा, किया निशाना दूर ॥२०॥  
 रंजी शास्त्र-ज्ञान की, भंग रही जपटाय ।  
 सद्गुरु एक ही शब्द से, दीन्ही तुरत उदाया ॥२१॥  
 शब्द महा सुख ऊपमा, मया अवेशा मोहि ।  
 सद्गुरु ने कृपा करि, खिडकी दीन्ही खोहि ॥२२॥  
 वैसी सद्गुरु तुम करी, मुझ से कछु न होय ।  
 निप-भाडे निप काढ़ करि, दिया अमीरस मोया ॥२३॥  
 गुरु आये पन गर्भ कर, अन्तर कृपा उपाय ।  
 तपवा से सीतल मया, सीता किया अमाय ॥२४॥  
 गुरु आये पन गर्भ कर, शब्द किया प्रकाश ।  
 बीज पढा था सुमि में, मई फल फल भाश ॥२५॥

गुरु आये धन गर्ज कर, कर्म कड़ी सब खिर ।

भरम बीज सब भूनिया, उग न सकते फेर ॥२६॥

साधु सुधारे शिष्य को, दे—दे अपना अंग ।

'दरिया' संगति कीट की, पलट्टर भया भिरंग ॥३७॥

यह 'दरिया' की वीनती, तुम सेती महाराज ।

तुम भृङ्गी में कीट हू, मेरी तुमको लाज ॥२८॥

विष छुड़ावे चाह करि, अमृत देवे हाथ ।

जन 'दरिया' नित कीजिये, उन सन्तनको साथ ॥२९॥

उन सन्तन के साथ से, जिवडा पावे जक्ख ।

'दरिया' ऐसे सन्त के, चित्त चरणां में रक्ख ॥३०॥

वाड़ी में है नागरी, पान दिशान्तर जाय ।

जहां वह सूखे बेलडी, पान वही विनशाय ॥३१॥

पान बेल से बीछड़े, परदेशां रश देत ।

जन 'दरिया' हरिया रहै, उस हरी बेल के हेत ॥३२॥

कुआँ परदेशां फिरै, अड धरै घर माहीं ।

निश दिन राखे हेत से, तासों विनशत नाहि ॥३३॥

अनङ्ग अङ्ग को डास वे, अन्तर रासे हेत ।  
 पाक फूट परि पक ह, सैष आप दिशि जेत ॥३५॥  
 अनङ्ग बसे आकाश में, मीची मूरत निवास ।  
 'हरिया' साधु जमत में, मूरत सिकर पिब पास ॥३५॥  
 कोयल आने मूढ के, परि आपुनां अङ्ग ।  
 निश-दिन रासे हेत सै, वासों पडे न खंड ॥३६॥  
 मूढ काम समकृत महीं, मोह माया सेवै ।  
 बुन बुनवि कोयली, अपना करि जेवै ॥३७॥  
 चौमाशे मृतु जान कर, पुष्पी को अल देत ।  
 कबहुक आवै मृतु जिना, उस पातक के हेत ॥३८॥  
 पन हर बयें आय करि, वेस पुपीहा पाव ।  
 क्यों हरिया सबमूढ बयै, वेस मण्डिला भाव ॥३९॥  
 महा प्रताप सिर पर लपे, छपा रस पीऊ ।  
 'हरिया' बधा कण्ठ गुरु, मोये ही मीऊ ॥४०॥  
 जन 'हरिया' गुरुवैष श्री, (मोहि) ऐसे किया निहाव  
 भैसे सूखी बेलडी, परप करि हरियाल ॥४१॥

सद्गुरु सा दाता नहीं, नहीं नाम सरीखा देव ।  
 शिष्य सुमिरण साचा करै, हो जाय अलख अभेव ॥४२॥  
 जन दरिया सद्गुरु करी, राम नाम की रीझ ।  
 अमृत बूठा शब्द का, उगा पूरब बीज ॥४३॥  
 सद्गुरु वरषै शब्द जल, पर उपकार विचारि ।  
 'दरिया' सूखी अवनि पर, रहै निवाना वारि ॥४४॥  
 सद्गुरु के एक रोम पर, बाहुं वैर अनन्त ।  
 अमृत लै मुखें में दिया, राम नाम निज तन्त ॥४५॥  
 सद्गुरु वृक्ष समान हैं, फलें से प्रीति न कोय ।  
 फल तरु से लागै रहै, रस पी परिपक्व होय ॥४६॥  
 सद्गुरु पारस की कनी, दीरघ दीसै नाय ।  
 'जन दरिया' पट्-द्रव्य-धन, सब आयै उन मांय ॥४७॥  
 मीन तलफती जल बिना, सागर मांहि सुमाय ।  
 जन दरिया एसी करी, गुरु कृपा मोहि आय ॥४८॥  
 भव जल बहता जात था, संशय मोह की बाढ़ ।  
 'दरिया मोहि गुरु कृपाकर; पकड़ बांह लिया काढ़ ॥४९॥

## स्मरण का ध्यंग—

ममो—नमो—इति गुरु ममो, नमो, नमो सब सम्यक् ।  
 अन 'हरिया' बन्धन करे, नमो नमो भगवन्त ॥१॥  
 राम भक्ति गुरु शब्द ही, तौ पत्तटि मनु—वेद ।  
 'हरिया' धाना क्यों रहे, सु—पुत्र बूठा मेहा ॥२॥—  
 'हरिया' नाम है निरमला, पूरख—अप्य अपाय ।  
 कहे सुमे सुख ना, नहे, सुमरे पावे स्वाद ॥३॥  
 हरिया सुमरे राम को, करम सरम सब, स्तोय ।  
 पूरा मुद्द सिद्ध पर तपे, विष्णु न प्यपि, कोय ॥४॥  
 'हरिया' सुमिरे राम को, कर्म अर्म सब पूर ।  
 निश तारे सहने मिटे, ओ निरमल सु ॥५॥  
 राम बिना फीका सगे, क्रिया—शास्त्र—ज्ञान ।  
 'हरिया' दीपक कहा करे, उदय भवा निम मान ॥६॥  
 'हरिया' सुरज ऊगिया, भैन सुजा भरपूर ।  
 भिन अन्धे देखा नहीं, उख से साहब दूर ॥७॥

‘दरिया’ सूरज ऊगिया; चहुँ दिश भया उजास।

राम प्रकाशे देह में, [ती] सकल भ्रम का नाश ॥८॥

आन-धर्म दीपक-जिसा; भ्रमत्त होय विनाश।

दरिया दीपक क्या करै; आगे रवि प्रकाश ॥९॥

दरिया सुमिरे राम को, दूजी आश निवार।

एक आश लगा रहै, कदै न आवे हार ॥१०॥

दरिया नरतन पाय कर; किया चाहै काज।

राव रंक दोनों तरै, बैठे नाम जहाज ॥११॥

नाम जहाज बैठे नहीं, आन करै सिर भार।

‘दरिया’ निश्चय बहेंगे, चौरासी की धार ॥१२॥

जन्म अस्वारथ नाम विना, भावे जान अजान।

जन्म मरण जम काल की, मिटै न खँचा तान ॥१३॥

मुसलमान हिन्दू कहा, षट् दरशन रंक-राव।

जने दरिया निज नाम विन,

सब पर जम का डाव ॥१४॥



६४ रामाजी दरिबाब महाशय की अविश्रुत गिरी देवता की धर्म

स्वर्ग-मृत्यु-पापसिं तर्क, धीमे लोक विस्तार ।

मन दरिया, निम आम भिन ।

। सभी काज को चार ॥१५॥”

‘दरिया’ पर उन पाय कर, कियी न राम उषीर ।

बोक उवारम आइया, सो जेय चले सिर मार ॥१६॥”

मो कोई साधू गृह में, माहि राम भरपूर ।

‘दरिया’ कह उस दास की मैं घरखों की घूर ॥१७॥

बाहर बाना मेय का, माहि राम का राज ।

कह दरिया ध सापना, हैं मेरे सिर ठाम ॥१८॥

राम सुमिर रामदि मिला, सो मेरे सिर मोर ।

‘दरिया’ धेय बिपारिये, सिर मेर की ठौर ॥१९॥

‘दरिया’ सुमरे राम को, कोटि-कर्म की शानि ।

मम और काले का मय मिटै ।

ना काहू की कोनि ॥२०॥”

‘दरिया’ सुमिरे राम को, आठेन को आधार ।

काया काशी काषिती, कषन होत न बार ॥२१॥

दरिया राम सम्भालतां, - काया-कंचन सार ।

आन-धर्म-और भ्रम सब, डारे तिर-से भार ॥२२॥

दरिया सुमिरै रामको, सहज तिमिर का नाश ।

घट भीतर होवै चानणां, परम ज्योति परकाश ॥२३॥

सद्गुरु संग न संचरा, राम नाम उर नाहिं ।

ते घट मरघट सारखा, भूत ब्रह्मै ता मांहि ॥२४॥

राम नाम ध्याया-जहीं, बहुत ही हुवा अकाज ।

दरिया काया नगर में, पंच भूत का राज ॥२५॥

पंच भूत का राज में सब जग लागा द्वन्द ।

जन 'दरिया' सतगुरु विना ,

मिल रहा अन्धा-अन्ध ॥२६॥

सब जग अन्धा राम विन, सूकै न काज अकाज ।

राव रंक अंधा सवै, अन्धों ही का राज ॥२७॥

'दरिया' सब जग आन्धला, सूकै सो बेकाम ।

सूकता जबही जानिये , जाकी दरशै राम ॥२८॥



‘दरिया’ दूजे धर्म से, संशय मिटै न शूल ।

राम नाम रटता रहै, सब धर्मों का मूल ॥३७॥

लख चौरासी भुगत कर, मानुष देह पाई ।

राम नाम ध्याया नहीं, फिर चौरासी आई ॥३८॥

‘दरिया’ नाके नाम के, विरला आवै कोय ।

जो आवे तो परम पद, आवागमन न होय ॥३९॥

‘दरिया’ राम अगाध है, आत्म को आधार ।

सुमिरत ही सुख ऊपजै ,

सहज ही मिटै विकार । ४० ।

दरिया राम संभालता, देख किना गुण होय ।

आवागमन का दुख मिटै, ब्रह्म परायण सोय ॥४१॥

मरना है रहना नहीं, जामे फेर न सार ।

जन ‘दरिया’ भय मानकर ,

अपना राम संभाल ॥४२॥

कहा कोई वन वन फिरै, कहा लियां कोई फौज ।  
मन 'हरिया' निम नाम दिन,

दिन इस मन की मौख ॥४३॥

हरिया आत्म मन मरा, क्यों कर निरमल होय ।

साधुन लागे प्रेम का, राम नाम मल धोय ॥४४॥

'हरिया' इस संसार में, सुखी एक है सन्त ।

पिये शुधारस प्रेम से, राम नाम निज वन्त ॥४५॥

राम नाम निश-दिन रटै, दूजा नाहिं दाय ।

'हरिया' ऐसे सन्त की, में बलिहारी आय ॥४६॥

'हरिया' सुमिरन राम का, वेस्वठ भुन्ती खेत ।

धन्य धन्य ये सन्तजन,

मिन्हा लिया मन मेस ॥४७॥

'हरिया' सुमिरन राम का, कीमत जसै न कोय ।

टुक एक पटमें संघरी,

तो पांच पस्तु मन होय ॥४८॥

‘दरिया’ सुमिरे राम को, साकट नांहि सुहात ।  
बीज चमक्के गगन में, गधिया मारे लात ॥४६॥  
फिरी दुहाई शहर में, चोर गये सब भाज ।  
शत्रु फिर मित्रज भया, भया राम का राज ॥५०॥  
जो कुछ थी सोई कही, मिट गई खैचा तान ।  
चोर पलट कर शाह भया,  
फिरी राम की आन ॥५१॥

॥ इति ॥

## अथ विरह का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सब सन्त ।  
 मन 'हरिया' बन्धन करै, नमो नमो भगवन्त ॥१॥  
 'हरिया' हरी किरपा करी, विरहा दिया पठाय ।  
 यह विरहा मेरे साथ को, सोता किया अमाय ॥२॥  
 विरह बियापी वह में, किया निरंतर पास ।  
 वाजा धेनी धीन में, सितके शांस अशांस ॥३॥  
 कदा हाव तेरे दास का,  
 निस-दिम वुस में माहि  
 पिन-सेती परचो नहीं, विरह सठावे माहि ॥४॥  
 हरिया विरही साथका, ठन पीना मन सूख ।  
 रेन न आवे नींदही, दिपस न जामे सूख ॥५॥  
 बिरहन पिठ के कारने, दूंदन धन- खंड आय ।  
 निश भीठी पिठ नामिखा, दर्द रहा सिपटाय ॥६॥

राम श्री हरियाव महाराज की अनुभव गिरा विरह का अंग १०१

---

विरहन का घर विरह में,

ता घट लोहु न मांस ।

अपने साहव कोरने ,

सिसके शांसी शांस ॥७॥

॥ इति ॥



## अथ शूर का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो ,

नमो नमो सब सन्त ।

भन दरिया बन्दन करै ,

नमो नमो भक्तवन्त ॥१॥

इप्पी स्वागी बहु मिले , हिरसी मिले अनंत ।

‘दरिया’ एसा ना मिला ,

राम रता कोई सत ॥२॥

पंडित ज्ञानी बहु मिले , वेद ज्ञान परवीन ।

‘दरिया’ एसा ना मिला ,

राम नाम सब लीन ॥३॥

बक्ता भावा बहु मिले , करते लीपा तान ।

‘दरिया’ एसा ना मिला ,

नो सन्मुख मेले बाण्य ॥४॥

दरिया वान गुरु देव का, वेधै भरम विकार ।  
बाहर घाव दीखै नहीं ,

भीतर भया सिमार ॥५॥

दरिया वान गुरु देव का ,

कोई भेलै सूर सधीर ।

लागत ही व्यापै सही , रोम रोम में पीर ॥६॥

सोई घाव तन पर लगै , उड्डु संभालै साज ।

चोट सहारे शब्द की , सो शूरां सिरताज ॥७॥

चोट सहै उर सैल की मुख ज्यो का त्यों नूर ।

चोट सहारै शब्द की ,

‘दरिया’ सांचा शूर ॥८॥

‘दरिया’ शूरा गुरुमुखी , सहै शब्द का घाव ।

लागत ही सुधि वीसरे , भूलै आन सुभाव ॥९॥

‘दरिया’ सांचा सूरमा , सहै शब्द की चोट ।

लागत ही भाजत भरम ,

निकस जाय सब खोट ॥१०॥

‘दरिया’ सस्तर बांध कर , बहुत कड़ाई शूर ।  
शूरा तब ही खानिये ,

अनी मिले मुख शूर ॥११॥

सब ही कटक शूरा मदीं ,

कटक मांदि कीइ शूर ।

‘दरिया’ पड़े पतंग क्यों

जब बाँधे मर शूर ॥१२॥

पड़े पतंगा अमिन में , वेद की नाहिं सभल ।

‘दरिया’ शिप सवगुरु मिले ,

तो ही जाय भिदान ॥१३॥

मया उजाळा गैप का दौंढे देख पतंग ।

‘दरिया’ आषा भेट कर ,

मिले अगिन के रंग ॥१४॥

‘दरिया’ प्रेमी आत्मा , आपै सवगुरु संभ ।

सवगुरु सेठी गच्छ ले , मिले शब्द के रम ॥१५॥

‘दरिया’ प्रेमी आत्मा , राम नाम धन पाया ।

नरधन पा धनवंत हुआ , भुला पर आया ॥१६॥

शूरां - खेत बुहारिया , सतगुरु के विश्वास ।  
 सिर ले सौंपा राम को, नहिं जीवन की आस ॥१७॥  
 दरिया खेत बुहारिया , चढ़ा दई की गोद ।  
 कायर कांपै खड़ वड़ै , शूरा के मन मोद ॥१८॥  
 शूर वीर सांची दशा , भीतर सांचा सूत ।  
 पूठ फिरै नहिं मुख मुड़ै ; राम तना रजपूत ॥१९॥  
 साध शूर का एक अंग , मना न भावै झूठ ।  
 साध न छांडै राम को ,  
 रन में फिरै न पूठ ॥२०॥  
 शूर वीर की सभा में , कायर बैठे आय ।  
 सुरातन आवै नहीं कोटि भांति समुभाय ॥२१॥  
 शूर वीर की सभा में , जो कोह बैठे शूर ।  
 सुनत बात सुख ऊपजै , चढ़ै सवाया नूर ॥२२॥  
 आगे बढ़ै फिरै नहीं, यह शूरा की रीत ।  
 तन मन अरपै राम को ,  
 सदा रहे अघ जीत ॥२३॥

'हरिया' सस्वर बाध कर, बहुत कर्हार्नि शूर।

शूरा तब ही धानिये,

अनी मिले मुख नूर ॥११॥

सब ही कटक शूरा नहीं,

कटक मांदि कोइ शूर।

'हरिया' पड़े पतंग ज्यों

जब बाँझि नर तूर ॥१२॥

पड़े पतंगा अग्नि में, वेद की नाहिं समास।

'हरिया' शिष सतगुरु मिले,

तो हो जाय निहास ॥१३॥

मया उजाता गैय का दौंटे वेत्त पतंग।

'हरिया' आपा भेट कर,

मिले अग्नि के रंग ॥१४॥

'हरिया' प्रेमी आत्मा, आवै सतगुरु संग।

सतगुरु सेठी शम्भु ले, मिलै शम्भु के रंग ॥१५॥

'हरिया' प्रेमी आत्मा, राम नाम धन पाया।

नरधन पा धनसंत हुआ, सृला पर आया ॥१६॥

साध स्वर्ग चाहै नही , नरकां दिश न जाय ।

पार ब्रह्म के पार लग ,

पटा गैव का खाय ॥३१॥

पटा पवड़िया ना लहै , पटा लहै कोइ शूर ।

सारिवयां साहव ना मिलै ,

भजन किये भरपूर ॥३२॥

दरिया सुमिरन राम का , शूरा हँदा साज ।

आगे पीछे हीय नहीं ,

वाहि धनी को लाज ॥३३॥

दरिया सो सूरा नहीं , जिन देह करी चकचूर ।

मन को जीत खड़ा रहै ,

गै वलि हारी शूर ॥३४॥

सिंघु वजा शूरा भिड़ा , विरद वखाने भाट ।

हला मेरु धूजी धरा ,

खुली स्वर्ग की बाट ॥३५॥

शूर न जानै कायरी, सूरतन से हेत ।  
 पुरमा - रुपुजा हो पड़े, वहु न छाँडि खेत ॥२४॥  
 शूर सदा है सनमुखी, मन में नाहीं शंक ।  
 आषा अरपै राम को, तो बाल न दानै बंक ॥२५॥  
 शूर वीर सांची बशा, कबहु न मानै डार ।  
 अनी मिलै आगे पसे, सनमुख केसे सार ॥२६॥  
 शूरां के तिर श्याम हैं, साधां के तिर राम  
 दूमी दिश साके नहीं,  
 पड़े सो फरदा काम ॥२७॥  
 शूर पड़े संग्राम को, मन में संक न कोष ।  
 आषा अरपै राम को, होनी होय सो होय ॥२८॥  
 शूरां खेठ बुहारिया, मरम मनी कर घूर ।  
 आय पिरामा राम जी,  
 दुर्मन भाजा शूर ॥२९॥  
 पीछे पार परे नहीं, शूरा मदा सुमाव ।  
 हँ करिया आगे पसे, कायर खेले दाव ॥३०॥

# अथ नाद परिचय को अंग साखी

नमो-नमो-हरि गुरु नमो ,  
नमो-नमो सब सन्त ।  
जन 'दरिया' वन्दन करै ,  
नमो-नमो भगवन्त ॥१॥  
'दरिया' स्मरै राम को , आठ प्रहर आराध ।  
रसना में रस ऊपजै , मिश्री जैसा स्वाद ॥२॥  
रसना सेती रुतरा , हृदय कीया वाश ।  
'दरिया' वर्षा प्रेम की ,  
पट-ऋतु वारह मास ॥३॥  
'दरिया' हृदय राम से , जो कबु लागे मन्त्र ।  
लहरें ऊठै प्रेम की , श्रावण वर्षा घन्न ॥४॥  
जन 'दरिया' हृदय विचे , हुआ ज्ञान प्रकाश ।  
हौज भरा जहं प्रेम का ,  
तहं लेत हिलोरा दास ॥५॥



बाट सुखी मव जानिये, अंतर मया उभास ।

नो कुछ पी सोही बनी,

पूरी मन की आश ॥३६॥

हरिया सांचा शूरमा, अरि दल घाले शूर ।

राज अरपिया राम का,

नगर बसा मरपुर ॥३७॥

शूर वीर सभमुख सदा, एक राम का दास ।

जीवन मरन चित भेट कर,

किया अह में वास ॥३८॥

काया मद्र ऊपर चढ़ा, परशा पर निर्भर ।

बस राज मिरमय मया,

अनहद पुरा निशान ॥३९॥

॥ इति ॥

‘हरिया’ मेह उतंग कर, पहुंचा त्रिकुटी सन्धि।

दुख भागा सुख ऊपजा,

मिटा भर्म का द्वन्द्व ॥१२॥

अनन्तहि चंदा ऊगीया,

सूरज कोटि प्रकाश।

विन वादल वर्षा घणी,

छः ऋतु वारह मास ॥१३॥

बङ्क नाल की सुधि गहै,

कोई पहुंचै विरला संत।

अमी भरै नीवत घुरै,

भिल मिल ज्योति अनन्त ॥१४॥

‘हरिया’ मन प्रसन्न भया,

बैठा त्रिकुटी छाजै।

अमी भरै विगसै कंवल,

अनहद ध्वनि गाजै ॥१५॥

हरय सेवी ऊरै, सूक्ष्म प्रेम की लहर ।  
 नामि कंठ में संचरै, सहन मरीचै डहर ॥६॥  
 नामि कंचन के मीठरे, भंवर करव गुजार ।  
 रूप न रेश न रस्य है,  
 ऐसा अगम विचार ॥७॥  
 नामी परिचय ऊपजै, मिट जाय सभी विनाद ।  
 किछे छूटै प्रेम की, देखे अगम अगाध ॥८॥  
 नामि कंचन से ऊतरा, मेरु दण्ड तल आय ।  
 सिद्धकी खोली माद की,  
 मिला ब्रह्म से भाय ॥९॥  
 'हरिया' चद्रिया गगन फो, मेरु उलंग्मा दण्ड ।  
 सुख उपमा स्वामी मिला,  
 भेटा ब्रह्म अस्सड ॥१०॥  
 महानाल की सुधि गई, मेरु दण्ड की घाट ।  
 'हरिया' चद्रिया गगन फो,  
 छांग्या अयपट घाट ॥११॥

धुरै नगारा गगन में, वज्रै अनहद तूर ।

जन 'दरिया' जहं थिति रची,

निश-दिन वर्षे नूर ॥२२॥

जन 'दरिया' जाय गगन में,

किया सुधा रस पान ।

गंग वही जहं अगम की,

जाय किया अस्नान ॥२३॥

अमी भरी विगतत कंवल,

उपजत अनुभव ज्ञान ।

जन 'दरिया' उस देश का,

भिन-भिन करत चखान ॥२४॥

सुरत गगन में बैठ कर,

पति का ध्यान संजीय ।

नाड़ि-नाड़ि हूं हूं विपै,

'र' रं कार ध्वनि होय ॥२५॥

'दरिया' त्रिकुटी सधि में

(मन) ध्यान धरै कर धीर ।

अवश चलत है सुपमना,

चलत प्रेम की सीर ॥१६॥

धनै सुरसरी अममकी, हृदय माहिं समाय ।

मन 'दरिया' वा सुपमना,

रोम रोम हो जाय ॥१७॥

'दरिया' नाद प्रकाशिया,

सो धनी कहीं न जाय

धन्य-धन्य व साधना, वहाँ रहै ली जाय ॥१८॥

'दरिया' नाद प्रकाशिया, पूरी मनकी आश ।

धन धै गति गगन तेअ पुंम प्रकाश ॥१९॥

दरिया नाद प्रकाशिया, कियो निरन्तर वास ।

पार ब्रह्म परशा सही, गई दर्शन पावे दास ॥२०॥

मन 'दरिया' जाय गगन में, परशा वेन अनाद ।

असध बिसरी अघ धरै चित्तिया मोर-विगत ॥२१॥

‘दरिया’ त्रिकुटी महल में, भई उदासी मोय ।

जहं सुख है तहं दुख सही ,

रवि जहं रजनी होय ॥३१॥

‘दरिया’ मन रंजन कहै, सुखी होत सब कोय ।

मीठे अवगुन ऊपजै, कड़वा से गुण होय ॥३२॥

मीठे राचै लोग सब, मीठे उपजै रोग ।

निर्गुन कड़ुवा नीम सा,

‘दरिया’ दुर्लभ जोग ॥३३॥

त्रिकुटी के मंभ्र वहत है, सुख की सलिता जोर ।

जन ‘दरिया’ सुख दुख परै,

वह कोई देश जो और ॥३४॥

त्रिकुटी मांहि सुख घना, नाहीं दुःख का लेश ।

जन ‘दरिया’ सुख-दुख नहीं,

वह कोई अनुभव देश ॥३५॥

बिन पाबक पाबक जलै, बिन सूरज प्रकाश ।

चाँद विमा नई चाँदना,

अन 'हरिया' का बाश ॥२६॥

नौषत बामि गमन में, बिन बादल घन गाम ।

महल्ल निराजे परम गुरु,

'हरिया' के महाराज ॥२७॥

कँचन का गिर बेस कर, लोमी मया उदास ।

अन 'हरिया' चाके बनिस,

पूरी मन की आश ॥२८॥

ब्रह्म अग्नि ऊपर जलै, चलत प्रेम की बाय

'हरिया' सीतल आतमा,

कम् कम्द अल आय ॥२९॥

कदा कोई कृपा करै, कदा रहै कोई कूठ ।

अन 'हरिया' बानक पना,

राम ठपोठी पूठ ॥३०॥

मन बुद्ध शित अहंकार की ,  
है त्रिकुटी लग दौड़ ।

जन दरिया इनके परे , ब्रह्म सुरत की ठौर ॥६॥

मन-बुध-चित-हंकार यह ,  
रहें अपनी हृद माहि ।

आगे पूरन ब्रह्म है , सो इनको गम नाहि ॥७॥

मन-बुध-चित अहंकार के ,  
सुरत सिरोमन जान ।

ब्रह्म सरोवर सुरत के ,  
दरिया संत प्रमान ॥८॥

मन बुध-चित अहंकार यह ,  
रहें सुरत के माहि ।

सुरत मिली जाय ब्रह्म में ,  
जहं कोई दूजा नाहि ॥९॥

‘म’ मा मेरू से वावड़ै , त्रिकुटी लग ओंकार ।  
अन ‘दरिया’ इनेक परे, ररंकार निरधार ॥१०॥



## अथ ब्रह्म परिचय का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सब सन्त ।

मन हरिया बन्दन करै, नमो नमो मगधन्त ॥

हरिया भिकुटी संधि में, महा जुद्ध रत्न पुर ।

कायर बन पूठा फिरै, सुन पहुँचे, कोइ शूर ॥१॥

हरिया मेरु उखंधिया, भिकुटी पैठा आय ।

जो बई से पूठा फिरै, वो विषयीं रत्न स्थाय ॥२॥

हरिया मन निज मन मय, भिकुटी मंरु सभाय ।

जो बई से पाछे फिरै,

वो मन का मन हो जाय ॥३॥

हरिया देखे होय पर, भिकुटी संधि मंकार ।

भिराकार एकै दिसा, एकै दिसा आकार ॥४॥

निष्कार आकार बिच, हरिया भिकुटी संधि ।

उरे अस्थान जो सुरत का,

उरे सो मन का बंध ॥५॥

‘र’ रंकार धुन हौद में, गरक भया कोई दास ।  
 जन दरिया व्यापै नहीं,  
 नींद भूख और प्यास ॥१७॥

जन ‘दरिया’ आकाश लग, ओंकार का राज ।  
 महासुन्नतिस के परे, रंकार महाराज ॥१८॥  
 ‘दरिया’ सुरति सिरोमनी, मिलि ब्रह्म सरोवर जाय ।  
 जहं तीनों पहुंचै नही, मनसा-वाचा-काय ॥१९॥  
 काय अगोचर मन्न अगोचर, शब्द अगोचर सोय ।  
 जन ‘दरिया’ लव लीन होय,

पहुंचेगा जन कोय ॥२०॥

धरती गगन पवन नही पानी,  
 पावक चंद न सूर ।

रात दिवस की गम नहीं,  
 जहं ब्रह्म रहा भरपूर ॥२१॥

रंकार सतगुरे ब्रह्म, ‘दरिया’ चेला सुर्त ।

जैसे मिल तैसा भया,

ज्यों संचे मांही भर्त ॥२२॥

‘हरिया’ त्रिकुटी हट लग, कोइ पहुँचै संत सयान।

आगे अनहद ब्रह्म है, निराधार निरवान ॥११॥

हरिया त्रिकुटी के परे, अनहप ब्रह्म अज्ञेस।

जहा सुरत गैली गई,

अनु भव पद को देख ॥१२॥

रतन अमोक्षक परस कर, रहा जौहरी थाक।

‘हरिया’ तई कीमत नहीं,

उनमुन मया अथाक ॥१३॥

इडा पिंगला सुपमना, त्रिकुटी संकार।

हरिया पुरन ब्रह्म के, यह भी उन्ली वार ॥१४॥

सुरत उखट आठों प्रहर, करत ब्रह्म आराध।

‘हरिया’ तब हो देखिये,

जागी सुन्न समाध ॥१५॥

सुरत ब्रह्म का ध्यान घर, जाय ब्रह्म में पर्य।

जन ‘हरिया’ जई एकसा,

दिनस एक सौ वष ॥१६॥

सुरत मिलि जाय ब्रह्म से ,

अपनो इष्ट संभाल ।

जन 'दरिया' अनु भौ शब्द ,

जहं दिखे काल अकाल ॥२८॥

सुरत मिलि जाय ब्रह्म से ,

मन बुध को दे पूठ ।

जन 'दरिया' जहं देखिये ,

कथनी वकनी भूठ ॥२९॥

'दरिया' जहं लग गगन है ,

जहं लग सुरत निवास ।

इनके आगे सुन्न है ,

जहं प्रेम भाव प्रकाश ॥३०॥

दरिया अनहद अगन का ,

अनु भौ धूवां जान ।

दूरी सेती देखिये , परसे होय — पिछान ॥३०॥

‘हरिया’ सुरति सर्पनी, धत्री ब्रह्म के मांय ।  
जाय मिथी परब्रह्म से, -

निर्भय रही समाय ॥२३॥

‘हरिया’ बेसत ब्रह्म को, सुरत भयी मय-भीत ।  
तेज पुन रवि अगन बिन,

अह कोई उष्य न सीत ॥२४॥

पाप पुत्र सुख दुःख नहीं,

जह कोई कम न काल ।

अन हरिया अह पढत है,

हीरो भी टकसाळ ॥२५॥

सुरत निरत परभा भया,

अरस-परस मिल एक ।

अन हरिया शानक बना,

मिट गया सन्म अनेक ॥२६॥

तज बिकार आकार तज, निराकार की प्याय ।

निराकार में पैठकर, निराधार ली जाय ॥२७॥

अगम दरीचा अगम घर ,

जहं कोई रूप न रेख ।

जहं 'दरिया' दुविधा नही ,

स्वामी सेवक एक ॥३८॥

शुन्य मण्डल में प्रगटा , प्रेम कथा प्रकाश ।

वकता देव निरंजना ,

श्रंता दरिया दास ॥३९॥

पंछि उड़ै गगन में ,

खोज मंडै नाहिं माहिं ।

दरिया जल में मीन गति ,

मारग दरसै नांही ॥४०॥

मन-बुध-चित्त , पहुंचै नहीं ,

शब्द सकै नहिं जाय ।

'दरिया' धन वै माधवा ,

जहां रहे लौं लाय ॥४१॥

मान बढ़ा अनुभव शब्द, बुर घेशान्तर जाय ।  
 अनहद मेरा साहसा, घट में रहा समाय ॥३२॥  
 प्रथम ध्यान अनु भौ करै, जा से उपमै हान ।  
 'दरिया' बहुते कुरत हैं, कषनी में गुजरान ॥३३॥  
 अनु मौ कूठी घोषरी, निरगुन सख्या नाम ।  
 परम जोत परसै मई,  
 ठी पूषा से क्या काम ॥३४॥  
 भाखों से दीसै नहीं, शब्द न पावे जान ।  
 मन-बुध-तर्ह पहुँचे नहीं,  
 कौन कहै सेनाख ॥३५॥  
 मान मिलै पर मान से,  
 पर कर ध्यान अहंदा ।  
 दरिया दसै प्रसन्न को, म्यारा दीसै पिंदा ॥३६॥  
 मान करम सुख बुख नहीं  
 नहि कोई पुषय न पाप ।  
 दरिया दसै सुख गढ़, मई आपदि ऊपर आप ॥३७॥

जीव जात से वीछुड़ा, घर पच तत्त का भेख।  
'दरिया' निज घर आइया,

पाया ब्रह्म अलेख ॥४७॥

जात हमारी ब्रह्म है, मात-पिता है राम।

गृह हमारा शुन्न मे, अनहद में विश्राम ॥४८॥

॥ इति ॥



हरिया सुन्न समाप की,  
महिमा पनी अनन्त।

पहुँचा सोई जानसी,  
कोई-कोई बिरला संत ॥४२॥

एक-एक को ध्याय कर, एक-एक आराध।  
एक-एक से मिल रहे,

आका नाम समाप ॥४३॥

मात्र मिले पर भाव स पर भाये पर भाय।  
'हरिया' मिल कर मिल रहे,

तो भावा गवन भराय ॥४४॥

पाच सत्त गुन तीन से, आत्म मया उदाश।  
सुरगुन निरगुन से मिला,

चौधे-पद में वास ॥४५॥

माया तहां न संभरे, जहां ब्रह्म का खेल।  
अन 'हरिया' कैसे बनि,

रवि-रमनी का मेला ॥४६॥



## अथ हेम उदाम का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो ,  
नमो नमो सब सन्त ।

जन दरिया बन्दन करे ,  
नमो नमो भगवन्त ॥

कबहुक भरिया समुद्र सा, कबहुक नारीं खाठ ।

जन 'दरिया, इत उवरता,  
ते कहिये किर कांट ॥१॥

किर कांटा किस काम का,  
पल्लव करे बहु रंग ।

जन 'दरिया' ईसा भन्ना,  
जद-वद एके रंग ॥२॥

एक-रंग उल्लटी दशा, भीतर मरम न भास ।

जन दरिया भिन्न दास का,  
उन मन मता मराल ॥३॥

दरिया हंसा ऊजला, बगुलहु उज्ज्वल होय ।

दोनों एकहि सारिखे,

(पर) चेजे पारख जोय ॥४॥

दरिया बगुला ऊजला, उज्ज्वल ही होय हंस ।

सरवर मोती चुगै, वाके मुख में मंस ॥५॥

आका चेजा ऊजला, वाका खाज निषेद ।

जन 'दरिया' कैसे बने, हंस बगुल के भेद ॥६॥

जन दरिया हंसा तना, देख बड़ा व्यवहार ।

तन उज्ज्वल मन ऊजला,

उज्ज्वल लेत अहार ॥७॥

बाहर से उज्ज्वल दशा, भीतर मैला अंग ।

ता सेती कौवा भला,

तन मन एकहि रंग ॥८॥

बाहर से उज्ज्वल दशा, अंतर उज्ज्वल होय ।

दरिया सोना सोल्हवां,

कांट न लागे कोय ॥९॥

मान सरोवर मोठी चुगी, बूझा पार्हीं खान ।

'हरिया' सुमिरे राम को,

सो निज ईसा मान ॥१०॥

मान सरोवर पासिया, छीनर रहे उदास ।

वन हरिया भग राम को,

जब लग पिंजर शांस ॥११॥

॥ इति ॥

## अथ स्वप्न का अंग

गो नमो हरि गुरु नमो ,

नमो—नमो सब सन्त ।

जिन दरिया बन्दन करें , नमो नमो भगवन्त ॥

दरिया सोता सकल जग , जागत नाही कोय ।

जागे में फिर जागना , जागा कहिये सोय ॥१॥

साध जगावे जीव को , जो कोइ उठे जाग ।

जागे फिर सोवै नही , जन 'दरिया' बड भाग ॥२॥

माया मुख जागे सबै , सो सूता कर जान ।

'दरिया' जागे ब्रह्म दिश , सो जागा परमान ॥३॥

दरिया तो सांची कहै , भूठ न मानो कोय ।

सब जग स्वपना नीद में , जान्या जागन होय ॥४॥

साख्य जोग नवधा भगति , यह स्वप्न की रीत ।

'दरिया' जागे गुरु मुखी ,

(जाकी) तत्त नाम से प्रीत ॥५॥

'हरिया' सतगुर कृपा कर, शब्द बनाया एक ।  
जागत ही चेतन मया, नतर खुवा अनेक ॥६॥

॥ राग भैरव ॥

सब जम सोवा सुध नहिं पावे ।

धौलै सो सोवा धर इवे ॥७॥

संशय मोह भरम की रैम ।

अंध धुंध होय सोते एन ॥१॥

जप-तप-संयम औ आचार ।

यह सब सुपने के न्यौहार ॥२॥

तीथ दान अम प्रतिमा सेवा ।

यह सब सुपना जेना वसा ॥३॥

कइना सुनना हार औ जीत

पखा पटी सुपनी निपरीत ॥४॥

चार धरन और आभम चार ।

सुपना अन्तर सब ध्यौहार ॥५॥

खट दरसन आदि भेद भाव ।

सुपना अन्तर सब दरसाव ॥६॥

राजा राना तप बलवन्ता ।

सुपना माही सब वरतन्ता ॥७॥

पीर औलिया सबै सयाना ।

खाव मांहि वरतै विध नाना ॥८॥

काजी शैयद औ सुलताना ।

खाव माहिं सब करत पयाना ॥९॥

साख्य जोग और नौधा भक्ति ।

सुपना मे इनकी इक बिरती ॥१०॥

काया कसनी दया औ धर्म ।

सुपने सुर्ग और बन्धन कर्म ॥११॥

काम क्रोध हत्या पर नाश ।

सुपना माहीं नर्क निवास ॥१२॥

आदि भवानी शंकर देवा ।

यह सब सुपना लेवा देवा ॥१३॥



ब्रह्मा-विष्णु दश औंकारा ।

सुपना अन्तर सब न्यौंकारा ॥१४॥

उद्भिन्न स्वेदज नेरख अण्डा ।

सुपन रूप परते प्रह्लादा ॥१५॥

उपमे परते अरु बिनसावै ।

सुपने अन्तर सब दरसावै ॥१६॥

स्वाग ब्रह्म सुपना ध्यौंकारा ।

नो नामा सो सब से न्यारा ॥१७॥

नो कोइ साय मामिया पावै ॥

सो सतगुर के शरमे आवै ॥१८॥

कृत-कृत बिरजा ओम समागी ।

गुर मुख चेत शब्द मुख नामी ॥१९॥-

संशय मोह भरम नित नाश ।

आत्म राम सहज परकाश ॥२०॥

राम संभाल सहज धर ध्यान ।

पाछे सहज प्रकाशै ज्ञान ॥२१॥

जन 'दरिया' सोई वड़ भागी ।

जा की सुरत ब्रह्म संग जागी ॥२२॥

॥ इति ॥

## साध का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सब सन्त ।

जन दरिया पन्दन करै, नमो नमो भगवन्त ॥१॥

दरिया लच्छन साधका, क्या गिरही क्या मेस ।

नि कपटी निरसक रहि, बाहर भीतर एक ॥२॥

सतगुरु को परशा नहीं, सीखी शब्द सुहेत ।

दरिया कैसे नीपजे, तेह बिहूना खेत ॥३॥

सच शब्द सत गुरुमुखी, मत गजद मुख दंत ।

यह तो तोई पोल गढ़, वह छोई करम अनंत ॥४॥

दांत रहै हस्ती बिना, तो पोल न टुटै कोय ।

कै कर धारे कामिनी कै खेलारा होय ॥५॥

साध कश्यो भगवंत कश्यो, कहे ग्रथ और यद ।

दरिया जहै न गुरु पिना, तस नाम का भेद ॥६॥

१ वर—अथर्व यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्व वेद  
नामो नमो का और शब्दों का महाशब्द न चापर पूर्वक  
प्रमाण प्रकृत मान है ।

राजा वांटै परगना, जो गढ़ को पति होय ।  
 सतगुरु वांटै राम रस, पीवै विरला कोय ॥७॥  
 मतवादी जानै नहीं, ततवादी की बात ।  
 सूरज ऊगा उल्लुवां, गिनै अंधारी रात ॥८॥  
 भीतर अंधारी भीत-सी, बाहर ऊगा भान ।  
 जन दरिया कारज कहा, भीतर बहुली हान ॥९॥  
 सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करै ब्रह्म की बात ।  
 दरिया बाहर चांदना, भीतर काली रात ॥१०॥  
 बाहर कुछ समझै नही जस रात अंधेरी होत ।  
 जन दरिया भय-कुछ नहीं,  
 जो भीतर जागे जोत ॥११॥

## अथ चिन्तामणि का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सष सन्त ।  
अन 'हरिया' बन्दन करे, नमो नमो भगवन्त ॥१॥  
चिन्तामनि चौकस घड़ी, मही रंक के हाथ ।  
ना काहू के सग भिखे, ना काहू से बात ॥२॥  
'हरिया' चिन्तामनि रत्न, भस्पो स्वान पे माय ।  
स्वान सूप फानै मया, बह टूका ही घाय ॥३॥  
'हरिया' हीरा सहस वस्त, जस मन कषन होय ।  
चिन्तामणि एक भली, ता सम तुलै न कोय ॥४॥

॥ इति ॥

## अथ अपारख का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो ,

नमो नमो सब सन्त ।

जन 'दरिया' वन्दन करै ,

नमो नमो भगवन्त ॥१॥

हीरा हला हल क्रोड़ का , जाका कौड़ी मोल ।

जन 'दरिया' -कीमत विना ,

बरतै डावां डौल ॥२॥

हीरा लेकर जौहरी , गया गवारै देश ।

देखा जिन कंकर कहा ,

भीतर परख न लेश ॥३॥

दरिया हीरा क्रोड़ का , कीमत लखै न कोय ।

नवर मिलै कोई जौहरी ,

तवही पारख होय ॥४॥

आई पारस खेतन भया, मन रे झीना मोक्ष ।  
 मांठ बाप मीठर पसा,

मिट गई दांदा डीन ॥५॥

कंकर बांधा मांठडी, कर हीरो का नाम ।

सोला कंकर नीसग, फूठा यही स्वभाव ॥६॥

॥ इति ॥

## अथ उपदेश का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो ,  
नमो नमो सब सन्त ।

जन 'दरिया' वन्दन करै ,  
नमो नमो भगवन्त ॥१॥

जन 'दरिया' उपदेश दे , जाके भीतर चाय ।  
नातर गैला जगत से, बक-बक मरे बलाय ॥२॥

'दरिया' बहु बकवाद तज, कर अनहद से-नेह ।  
औंधा कलशां ऊपरै , क्यों वपवै मेह ॥३॥

विरही प्रेमी मोम दिल्, जन 'दरिया' निष्काम ।  
आशिक-दिल-दीदार का, जा से कहिये राम ॥४॥

जन 'दरिया' उपदेश दे , भीतर प्रेम सधीर ।  
ग्राहक होय कोई हीगका, कहा दिखावै हीर ॥५॥

'दरिया' गैला जगत से, समझ और मुख से बोल ।  
नाम रतन-की गांठडी , ग्राहक विन मत खोल ॥६॥



‘हरिया’ मैला जगत को, क्या कीजै समझाय ।

बहना है दिश उत्तर को,

दक्षिण दिश को जाय ॥७४॥

‘हरिया’ मैला जगत को, कैसे कीजै सीख ।

सो कोसां वाहन करै, वाहन न मानै बीख ॥७५॥

हरिया मैला जगत को, कैसे कीजै हेत ।

जो सो बेरा वाणिये, सोहू रेत की रेत ॥७६॥

‘हरिया’ मैला जगत को, क्या कीजै सुखमाय ।

सुखमाया सुखमै नहीं,

फिर सुखम सुखम ठनमाय ॥७७॥

‘हरिया’ मैला जगत को, क्या कीजै समझाय ।

रोम नीसरे वेद मे, पत्थर पुभन जाय ॥७८॥

मेढ़ मती संसार की, हारे गिने न हार ।

वेसा वेसी परबत चढ़े, वेसावेसी साढ़ ॥७९॥

‘हरिया’ सो अंधा बिचे, एक सुमाको जाय ।

यह तो बात देखी कहे, वा के मारीं दाय ॥८०॥

‘दरिया’ सारा अंध को, कहै देख देख कुछ देख ।

अंध कहै सूझै नहीं, कोइ पूरवला लेख ॥१४॥

कंचन कंचन ही सदा, कांच-कांच सो कांच ।

‘दरिया’ भूठ सो भूठ है,

सांचा-सांच सो सांच ॥१५॥

जन ‘दरिया’ निज सांचका, सांचा ही व्यौहार ।

भूठ भूठ ही नीवडै, जामें फेर न सार ॥१६॥

दरिया सांच न संचरै, जब घर घालै भूठ ।

सांच आन परगट हुवै,

जब भूठ दिखावै पूठ ॥१७॥

जन दरिया इस भूठ की, डागल उपर दौड़ ।

सांच दौड़ चौगान में, सो संतां सिर मौर ॥१८॥

कानों सुनी सो भूठ सब, आंखों देखी सांच ।

‘दरिया’ देखे जानिये, यह कंचन यह कांच ॥१९॥

साध पूरुष देखी कहैं, सुनी कहैं नहीं कोय ।

कानों सुनी सो भूठ सब, देखी सांची होय ॥२०॥

'दरिया' आगे सांच क, झूठ कित्ती इक पात ।  
 जैसे उन्ने मानु के, रात अधारी जात ॥२१॥  
 दरिया सांचा राम है, और सकल ही झूठ ।  
 सनमुख रहिय राम से, व सपहीको पूठ ॥२२॥  
 'दरिया' सांचा राम है, फिर साचा है संत ।  
 नह तो शाना मुक्ति का, यह मुख राम कहत ॥२३॥  
 'दरिया' गुरु दरियाव की, साच भई दिस नहर ।  
 संग रहै सोई पियै, नहिं फिरै तृपाया बहर ॥२४॥  
 साच सरोवरै राम अल, राम द्वेष कुछ नाय ।  
 दरिया पीषि प्रीति कर, सो विरपत हो जाय ॥२५॥  
 जन दरिया गुन गाय ले, बरता अंग शरीर ।  
 बाल्हदारी बस अंग की, संचा निकसै सीर ॥२६॥  
 साधु जन का एक अंग, परते सहज सुमाय ।  
 पी दिसा न संचरे, निवन अर्द्रां दलकाय ॥२७॥  
 'दरिया' माँके पौनके, इक पंखी आवै जाय ।  
 ऐसे साधु जगत में, बरते सहज मयाय ॥२८॥

मच्छी-पंछी साधका, दरिया मारग नाहीं  
अपनी इच्छासे चलैं, हुकम धनी के मांही ॥२६॥  
साधु चन्दन वावना, (जाके) एक राम की आस।  
जन दरिया इक राम विन,  
सब जग आक पलास ॥३०॥

॥ इति ॥

## अथ पारस का अंग

ममो ममो हरि गुरु नमो ,

नमो नमो सब सन्त ।

भन 'हरिया' वन्दन करै ,

ममो नमो भगवन्त ॥१॥

भन 'हरिया' पट्ट-धातु का , पारस कीया मांष ।

परशा सी कंषन भया , एक रम एक मांष ॥२॥

'हरिया' छुरी कसाव की , पारस परी आय ।

सोद पक्षट कंषन भया ,

आमिप मत्वा न भाय ॥३॥

सोद काला भीठर कठिन , पारस परी सोय ।

उर नरंमी अति निरमला , वाहर पीना होय ॥४॥

पारस परशा जानिये , जो पखटे अंग-अंग ।

अंग अंग पलटा नहीं , तो ई कूठा संग ॥५॥

पारस जाकर लाइये . जाके अंग में धात ।  
क्या लवै पापाण को , घस-घस होय संताप ॥६॥  
'दरिया' कांटी लोह की , पारस परशै सोय ।  
धातु वस्तु भीतर नही , कैसे कंचन होय ॥७॥

॥ इति ॥

## अथ मेघ का अंग

नमो नमो हरि गुरु नमो , नमो नमो सष सन्त ।  
जन 'दरिया' पन्दन करै, नमो नमो ममवन्त ॥१॥

'दरिया' काटी मेघ सष , भीतर घात म प्रेम ।  
कली जगावै फपट की , नाम धरावै हेम ॥२॥

'दरिया' काध दूध का , बाने सो बनभाय ।  
दूध फाट कांभी मई, तई गुन कडां समाय ॥३॥

'दरिया' कांभी मेघ है , फाड़ि काधा दूध ।  
अडग पडम फर आठमा , मेटे साखी सुध ॥४॥

बाहर बाटे बढत है , 'दरिया' जगत और मय ।  
तू बढता संग मत्त बढ , रढता सादष वस्त ॥५॥

'दरिया' बिल्ली गुरु किया, उगवल पगु को देख ।  
असे को विसा मिला , पेसा जगत और मेख ॥६॥

पौकी बिठी काल की, दरिया कलु के मय ।  
हन सष ही को पूठ द, समुख सादिष देख ॥७॥

दरिया संगत भेष की, हुई मिटावै साट ।

दा घालै राम विच, करदैं वारह बाट ॥८॥

दरिया' स्वांगी भेष का, आगा पाछा अंग ।

से कपड़ा पास विन, लागत नाही रंग ॥९॥

दरिया संगी साध का, अन्तर प्रेम प्रकाश ।

राम भजै साचे मते, दूजे द्वंद्व निकास ॥१०॥

प्रथम हम यो जानते, स्वाग धरै सो साध ।

सद्गुरु से परचा भया, दीसी मोटी विराध ॥११॥

दरिया संगी स्वांग का, जा का विकल शरीर ।

मतलब देखै आप का, नही जाने पर पीर ॥१२॥

'दरिया' साध और स्वांग का,

क्रोड़ कोश का बीच ।

राम रता साचा मता,

स्वांग काल की कीच ॥१३॥

'दरिया' परशै साध को, तो उपजे साची सीख ।

जो कोई परशै भेष को, ताहि मंगावै भीख ॥१४॥



साध स्वाममें आंतरा, मैसा दिवश और राव ।

इनके आशा अगत की, उनको राम सुभाव ॥१५॥

साध स्वांग अस आंतरा,

मेवा झूठ और साध ।

मोती-मोती फेर बहु,

इक कंषन इक काध ॥१६॥

साध स्वांग अस आंतरा,

अस कामी निष्काम ।

मेप रवा ते भीख में,

नाम रवा ते राम ॥१७॥

मेप बिनु का नाम का, कायर को डरपाय ।

‘हरिया’ सिपा ना डरे,

जदां राम तई जाय ॥१८॥

मेप बिनु का नाम का, वेस्तव डरे कुरंग ।

हरिया सिपा ना डरे, भीतर निर्मय अंग ॥१९॥

तन पर भेष बनाय के, मकर पकड़ भया सूर ।  
संग लगाया लग रहै, दूर किया होय दूर ॥२०॥  
दरिया ऐसा भेष है, जैसा अड़वा खेत ।

बाहर चेतन की रहन, भीतर जडु अचेत ॥२१॥

स्वाग कहै मैं पेट भराऊं, डहकाऊ संसार ।

राम नाम जाने विना, बोरुं कालीधार ॥२२॥

‘दरिया’ सब जग अंधरा, सूक्त न काज अकाज ।

भेष रता अंधा सबै, अंधाई का राज ॥२३॥

माला फेरे क्या भया, मन फाटे कर भार ।

‘दरिया’ मन को फेरिये, जामें बसे विकार ॥२४॥

जो मन फेरे राम दिस, कल विष नाशै धोय ।

‘दरिया’ माला फेरते, लोगदिखावा होय ॥२५॥

कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय ।

जन ‘दरिया’ निज नाम विन,

पार न पहुंचे कोय ॥२६॥

पाँच सात सास्त्री कही , पद गाया दस शीय ।  
दरिया फारज नासरै , पट मराई होय ॥२७॥  
साँस ओग पपील गति , सिद्ध पढ़े बहु आय ।  
बाकल लाग मिर पटै , मजिद म पहुँचे जाय ॥२८॥  
भक्ति सार बिहम गति , जई इच्छा ठई जाय ।  
श्री सवगुरु रक्षा करै , बिग्न न व्यापै ताय ॥२९॥

॥ इति ॥

## मिश्रित साखी

नमो नमो हरि गुरु नमो ,

नमो नमो सब सन्त ।

जन दरिया वन्दन करै , नमो नमो भगवन्त ।

दरिया सब जग आंधरा , सूझै सो बेकाम ।

भीतर का नेतर खुला, तब ही दरशै राम ॥१॥

दरिया सब जग आंधरा , सूझै नही लगार ।

औपध है सत्संग का , सतगुरु वोवन्हार ॥२॥

दरिया गुरु किरपा करी , शब्द लगाया एक ।

जागत ही चेतन भया , नेतर खुला अनेक ॥३॥

दरिया भागे भरम सब , पाया राम महवूव ।

जाके भान उगै नहीं , दीपक करना खूव ॥४॥

आन धरम दीपक दशा , भरम तिमर होय नाश ।

दरिया दीपक क्या करै ,

(जाके) राम रवी परकाश ॥५॥

दरिया सूरज ऊगिया, सब भ्रम गया विनाय ।  
उर में गंगा परगनी, सरवर काहे नाय ॥६॥

दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर ।  
जिन अंधे बेसा महीं, तिन से साहब दूर ॥७॥

दरिया सूरज उगिया, चहुँ दिश मया उजाश ।  
राम प्रकाश देह में,  
तो सकल मरम का नाश ॥८॥

पाय बिसारे राम को, अष्ट दोट है सोय ।  
रवि दीपक दोनों बिना, अंधकार ही होय ॥९॥

पाय बिसारे राम को, बैठा सब ही खोय  
दरिया पड़े अनाश चढ़, रासनहार न कोय ॥१०॥

पाय बिसारे राम को, महा अपराधी सोय ।  
दरिया तीनों लोक में, हसा भ दूजा कोय ॥११॥

पाय बिसारे राम को, तीन लोक तल सोय ।  
मन दरिया अघ मीच का,

दिन दिन दूना होय ॥१२॥

बड़ के बड़ लागै नही , बड़ के लागै बीज ।

दरिया नान्हा होय कर ,

राम नाम गह चीज ॥१३॥

रसना अन्तर वाहिवे , लोक लाज सब खोय ।

दरिया पानी प्रेम का ,

सीच सहज बड़ होय ॥१४॥

दरिया तीनों लोक में , देखा दोय विज्ञान ।

गुजराती गुजरात में , गलतानी गलतान ॥१५॥

गुजराती गलतान की , दरिया यह पहिचान ।

आन-रता गुजरात सब ,

कोई राम रता गलतान ॥१६॥

सोई अंध कवीर का , दादू का महाराज ।

सब सन्तन का वालमा ,

‘दरिया’ का सिरताज ॥१७॥

हरिया तीनों लोक में, हूँडा सब ही धाम ।

वीथ ब्रत-विधि करत बहु,

बिना राम किन काम ॥१८॥

तीन लोक चौदह भवन, हरिया देसा जोय ।

राम सरीसा राम है,

इसा न दूजा कोय ॥१९॥

तीन लोक चौदह भवन, हूँडा सब ही धाम ।

हरिया देसा निरत कर,

राम सरीखा राम ॥२०॥

हरिया परसे नाम के, दूजा दिया न जाय ।

तन मन आतम धारकर,

रास्तीजे हर मांय ॥२१॥

हरिया सुमिरै राम को,

(जाकी) पारख कीजे आय ।

भवन दब नेतर दलै,

बह रसना दब जाय ॥२२॥

दरिया सतगुरु शब्द ले , करै राम संयोग ।  
 ज्ञान खुलै अरवल बढै , देही रहै निरोग ॥२३॥  
 दरिया प्रेमी आतमा , करै राम का गाढ़ ।  
 आवै उवांसी चोगुनी , भाजन लागै हाड़ ॥२४॥  
 कंचन भाजन विप भरा , सो मेरे किस काम ।  
 दरिया वासन सो भला ,  
 जा में अमृत राम ॥२५॥  
 जो काया कंचन मई , रतनों जड़िया चाम ।  
 दरिया कहै किस काम का ,  
 जो मुख नाही राम ॥२६॥  
 राम सहित मध्यम भला , गलत कोढ़ होय अंग ।  
 उत्तम कुल की त्याग कर ,  
 रहिये उनके संग ॥२७॥  
 कस्तूरी कूंडे भरी , मेली ऊड़े ठांव ।  
 दरिया छानी क्यों रहै ,  
 साख भरै सब गांव ॥२८॥



कुंडा आना चाम का, भीतर मरा कपूर।

दरिया वासन क्या करै, नस्तु दिखावि नूर ॥२६॥

मन दरिया पुन पाप के, भीये वीरां जूक।

करै दिखावा और को, आप समाहै गूक ॥३०॥

पाप पुन सुख दुख की, भरट भरत है साख।

मन दरिया रह राम बग,

वहा सवही को राख ॥३१॥

जीव बिलम्बा जीव से, कारण सरे न कीय।

मन दरिया सतगुरु मिलै,

तो ब्रह्म बिलम्बन होय ॥३२॥

जीव बिलम्बन फूठ है, मिस मिल बिलुई जाय।

ब्रह्म बिलम्बन सांघ है,

रह वर माहि समाय ॥३३॥

सकल आदि सब के पर, है अविनाशी राम।

उपनि-२२२ बिनसर्ज, माया रूपी काम ॥३४॥

दरिया दश-दरवाज में, ता विच पढ़त निमाज ।  
रौ ममो इक रटत है,

और सकल वेकाज ॥३५॥

दरिया खेती नीपजी, सिरोपान गया शूख ।

हरियाली मिट कन भया,

भीतर भागी भूख ॥३६॥

रवि शशि चालै पूर्व दिश, पच्छिम कहै सब लोय ।

‘दरिया’ यह गत साध की,

लखै सो विरला कोय ॥३७॥

समुद खार गंगा गदल, जल गुनवत्ता सीत ।

रवि तेज शशि छिद्रता, दरिया संता रीत ॥३८॥

‘दरिया’ दीपक राम का, गगन मंडल में जोय ।

तीन लोक चौदह भवन,

सहज उजाला होय ॥३९॥

दरिया राजस दूर कर, ररंकार लौ लाय ।

राम छांड राजस गहै, भौ भौ पर ले जाय ॥४०॥

शब्द सुहाया बाशदाह , साधन सैना मान ।

सैना सहै आवसी ,

जो षट् आनि सुबतान ॥४१॥

दरिया लखन साध का ,

क्या गिरही क्या मंग

नि कपटी निरपेक्ष रह ,

बाहर भीतर एक ॥४२॥

रहनी करनी साध की , एक राम का ध्यान ।

बाहर मिलता सी मिलै ,

भीतर आत्म ज्ञान ॥४३॥

ठरपर छाना फल नहीं, पिरथी से बनराय ।

सतगुरु छाना शिष नहीं ,

दूर देशान्तर आय ॥४४॥

दरिया संमत साधकी , सहै पनटे बंस ।

कीट छांड मुका चुगै ,

होय काग से हंस ॥४५॥

सांची संगत साध की , जो कर जानै कोय ।

दरिया ऐसी सो करै ,

(जेही) कारज करना होय ॥४६॥

दरिया संगत साध की , सहजै पलटै अंग ।

जैसे संग मजीठ के , कपड़ा होय सुरंग ॥४७॥

दरिया संगत साध की , कल विष नाशै धोय ।

कपटी की संगत किये , आपहु कपटी होय ॥४८॥

सतगुरु को परसा नही , सुमिरा नाही राम ।

ते नर पशु समान हैं ,

शांस लेत वेकाम ॥४९॥

माया माया सब कहै , चीन्है नांही कोय ।

जन दरिया निज नाम विन ,

सब ही माया होय ॥५०॥

गिरह माहिं धंधा घना , भेष माहिं हलकान ।

जन दरिया कैसे भजूं , पूरन ब्रह्म निदान ॥५१॥

फूलों में फल मान कर, भली विभूती जाय।

अधि शीतल सुर्मपिता, ननपा भक्ति उपाय ॥५२॥

फूलों में फल मान कर, जाय विभूती येद।

ता से तो मनुनां मना,

सफल त्याग फल लेद ॥५३॥

हरिया धन बहुता मिला, तू नहिं मानत मोहिं।

ता से निनन रहित है,

सांन कहत है तोहिं ॥५४॥

जन हरिया अंग साध का,

शीतल अपन शरीर।

निर्मल वशा कमोदिनी, मित्रे मिटावै पीर ॥५५॥

संकट पड़े मर साध को, सब संतन के सोय।

हरिया सहाय करै हरी, परचै मानै लोग ॥५६॥

बातों में ही पद गया, निकस गया दिन रात।

मुहजत अप पूरी मई,

आन पढी जम घात ॥५७॥

दरिया औवध राम रस , पीये होत समाध ।

महा रोग जीवन मरन ,

तेहि की लगै न व्याध ॥५८॥

दरिया निरगुन राम है , सरगुन सतगुर देव ।

यह सुमिरावै राम को ,

वो है अलख अभेव ॥५९॥

जारी गावै कृष्ण की , हड्डी जरावै शीत ।

दरिया कैसे जानि हैं , राम नाम की रीत ॥६०॥

दरिया अमल है आसुरी , पिये होत शैतान ।

राम रसायन जो पिये ,

सदा छाक गलतान ॥६१॥

नारी आवै प्रीत कर , सतगुरु परसै आन ।

दरिया हित उपदेश दे ,

माय बहिन धी जान ॥६२॥

नारी जननी जगत की , पाल पोस दे पोष ।

मूरख राम विसार कर , ताहि लगावै दोष ॥६३॥

ररां ती रब आप है , ममा मोहम्मद् जान ।  
 दोय हरफ में मारना , सब ही वेद पुगन ॥६४॥  
 ररंकार अनड्ड की , दरिया परस्व अनाज ।  
 और इष्ट पहुँचे नहीं , जहाँ राम का राज ॥६५॥  
 शिव ब्रह्मा और विष्णु का , ये ही उरे मंडान  
 नन दरिया इन के परे ,  
 निर्जन का मिशान ॥६६॥  
 दरिया वही गुरुमुखी , अविनाशी भी दाट ।  
 सम्मुख हीय सौदा करे ,  
 सहजहि सुने कषाट ॥६७॥  
 अरंड आक अरु पास ठरु , होता पन्दन संग ।  
 मांठ गठीला घोषरा , पत्तटा नहीं अम ॥६८॥  
 ठमय करम पंधन करे , नाम करे भय दान ।  
 दरिया उसे दास के , परते स्वचा मान ॥६९॥  
 दरिया बुखिया नष जगी , पखा पखी यकाम ।  
 सुखिया नष ही होयगा राज निरंज राम ॥७०॥

दृष्ट न मुष्ट न अगम है,

अति ही करड़ा काम ।

'दरिया' पूरन ब्रह्म में,

कोई सन्त को विसराम ॥७१॥

॥ इति ॥



पद [१]

राग भैरव

आदि अनादि मरा सारै । टका ।

दृष्टि न मुष्टि है अगम अगोचर ,

यह सब माया उन्हीं सारै ॥१॥

जो बन माली सीधे मूल ,

सहजे पिये डाल फल फूल ॥२॥

जो नरपति को गिरद बुझावे ,

सेना सकल महज ही आवे ॥३॥

जो कोई करे मानु प्रकाशा ,

तो निश तारा सहजदि नाशा ॥४॥

गरुड़ पंख जो घर में लखे ,

सर्व जाति रहन नहीं पावे ॥५॥

हरिया सुमिरै एकहि राम ,

एक राम सारै सब काम ॥६॥



पद [१]

राग भैरव

आदि अनादि मेरा साईं ।टेका

दृष्टि न मुष्टि है अगम अमोचर,

यह सब माया उन्हीं मारिं ॥

जो बन माली सींचे मूल,

सहजे फिरे ढाल फल फूल ॥२

जो नरपति को गिरह बुझाने,

सेना सकल सहज ही आवै ॥३

जो कोई करे मानु प्रकाशा,

तो निरा तारा सहजहि नाशा ॥४

गरुड़ पंख जो घर में लावै,

सप जाति रहन नहीं पावै ॥५

हरिया सुमिरे एकहि राम,

एक राम सारि सब काम ॥६॥

कोटि करम जाके उत्पत कार ,  
 किला कोटि वरतावनहार ॥१६॥  
 आदि अंत मध्य नही जाको ,  
 कोई पार न पावै ताको ॥१७॥  
 जन दरिया के साहब सोई ,  
 ता पर और न दूजा कोई ॥१८॥

### पद [३]

जाके उर उपजी नहीं भाई ,  
 सो क्या जाने पीर पराई ॥टेक॥  
 व्यावर जाने पीर की सार ,  
 बांझ नार क्या लखै विकार ॥१॥  
 पतिव्रत पति को व्रत जानै ,  
 व्यभिचारिन मिल कहा वखानै ॥२॥  
 हीरा पारख जौहरी पावै ,  
 मूरख निरख के कहा बतावै ॥३॥

- कोटि तेज जाके-तपै रसोय ,  
रहष कोटि जाक नीर समाय ॥८॥
- पूय्नी कोटि फुल्लवारी गंध ,  
सुरत कोटि जाके लाया बंध ॥९॥
- घंर सुर जाके कोटि चिराक ,  
ब्रह्मी कोटि जाके राधे पाक ॥१०॥
- अनेत सव भौर खिलवत खाना ,  
लख चौराखी पक्षे दिखामा ॥११॥
- काटि पाप कापे बल खीन ,  
कोटि घरम भाग भाधीन ॥१२॥
- मागर काटि जाके फलशधार ,  
दुपन कोटि जाक पनिहार ॥१३॥
- कोटि सतोप जाक मरा भटार ,  
कोटि कुयरे जाक माया धार ॥१४॥
- कोटि स्वग जाक सुख रूप ,  
कोटि नक जाक अंध कूप ॥१५॥

हं जल विन कंवला वंहु अनंत ,

जहं वपु विन भौरा गोह करंत ॥१॥

प्रनहद बानी अगम खैल ,

जहं दीपक जलै विन बाती तेल ॥२॥

जहं अनहद शब्द है करत घोर ,

विन मुख बोले चात्रिक मोर ॥३॥

विन रसना गुन उदत नार ,

पांव विन पातर निरत कार ॥४॥

जहं जल विन सरवरें भरा पूर ,

जहं अनंत जोत विन चंद सूर ॥५॥

बारह मास जहं ऋतु बसंत ,

ध्यान धरें जहं अनंत संत ॥६॥

त्रिकुटी सुखमन चुवत छीर ,

विन बादल बरपै मुक्ति नीर ॥७॥

अमृत धारा चलै सीर ,

कोई पीवै विरला संत धीर ॥८॥

कहा कहे तेरा वेद पुराना,  
 भिन है सफल अगत भरमाना ॥२१॥

कहा कहे तेरी अनुभव बानी,  
 भिनते मेरी शुद्धि मुल्लामी ॥२२॥

कहा कहे ये मान बढ़ाई,  
 राम बिना सप ही बुस दाई ॥२३॥

कहा कहे तेरा सांख्य और याम,  
 राम बिना सप बंधन रोग ॥२४॥

कहा कहे इन्द्रन का दुस,  
 राम बिना बेना सप बुस ॥२५॥

दरिया नहे राम गुरुमुखिया,  
 हरि विन दुखी राम संग सुखिया ॥२६॥

प पान हर कुवुध कांकड़ा ,  
 सहज सहज झड़ जाई ,  
 डी गांठ रहन नही पावै ,  
 इकरंगी होई आई ॥२॥

इकरंग हुआ भरा हरि चोला ,  
 हरि कहै कहा दिलाऊं ।  
 मे नाहीं मेहनत का लोभी ,  
 वकसो मौज भक्ति निज पाऊं ॥३॥

किरपा कर हरि बोले वानी ,  
 तुम तो हो मम दास ।  
 दरिया कहै मेरे आतम भीतर ,  
 मेलौ राम भक्ति विश्वास ॥४॥

पद [५]

आदि अंत मेरा है राम ,  
 उन विन और सकल बेकाम ॥१॥



मागा घान करावै साई,

कोकठ हारके दद न साई ॥४॥

राम नाम मरा प्राक्त-अघार,

सोई राम रस पीवनहार ॥५॥

उन 'हरिया' जानैगा सोई,

[जाके] प्रेम की माल कलेमे पोई ॥६॥

### पद [४]

जो धुनियां तौ भी मे राम तुम्हारा,

अपम कमीन आवि मति हीना,

तुम तौ हो सिरताज हमारा ॥टेक॥

काया का अथ सुन्द मन मुटिया

सुपमन तांत चढ़ाई

गगन मंडल में धनुषा बैठा,

मेर सतगुरु कला सिस्वाई ॥१॥

पाप पान हर कुवुध कांकड़ा ,

सहज सहज झड़ जाई ,

धुंड़ी गांठ रहन नहीं पावै ,

इकरंगी होई आई ॥२॥

इकरंग हुआ भरा हरि चोला ,

हरि कहै कहा दिलाऊं ।

मैं नाहीं मेहनत का लोभी ,

वकसो मौज भक्ति निज पाऊं ॥३॥

किरपा कर हरि बोले वानी ,

तुम तो हो मम दास ।

दरिया कहै मेरे आतम भीतर ,

मेलौ राम भक्ति विश्वास ॥४॥

पद [५]

आदि अंत मेरा है राम ,

उन विन और सकल बेकाम ॥१॥

कदा करूं तेरा वेद पुराना,  
 दिन है सकल अगत मरमाना ॥२॥  
 कदा करूं तेरी अनुभव बानी,  
 भित्तें मेरी शुद्धि मुत्तानी ॥३॥  
 कदा करूं ये मान बढ़ाई,  
 राम बिना सब ही दुख दारै ॥४॥  
 कदा करूं तेरा साँझ भौंर याम,  
 राम बिना सब पथन रोम ॥५॥  
 कदा करूं इन्द्रन का दुख,  
 राम बिना वैवा सप दुख ॥६॥  
 'दरिया' करै राम गुरुमुखिया,  
 हरि विन दुखी राम संम सुखिया ॥७॥

पद [२]

॥ राग पंचम ॥

पति प्रता पति मिली है नाम,  
 जद गगन गंडल में परम नाम ॥ टैक ॥

हं जल विन कंवला बहु अनंत ,

जहं वपु विन भौरा गोह करंत ॥१॥

अनहद बानी अगम खैल ,

जहं दीपक जलै विन बाती तेल ॥२॥

जहं अनहद शब्द है करत घोर ,

विन मुख बोले चात्रिक मोर ॥३॥

विन रसना गुन उदृत नार ,

पांव विन पातर निरत कार ॥४॥

जहं जल विन सरवरें भरा पूर ,

जहं अनंत जोत विन चंद्र सूर ॥५॥

बारह मास जहं ऋतु वसंत ,

ध्यान धरै जहं अनंत संत ॥६॥

त्रिकुटी सुखमन चुवत छीर ,

विन बादल वरपै मुक्ति नीर ॥७॥

अमृत धारा चलै सीर ,

कोई पीवै विरला संत धीर ॥८॥

ररकार धुन अरूप एक ,

सुरत गही उनही की टक ॥६॥

जन 'हरिया' बैराट धूर ,

अहं विरला पहुँचे संत सूर ॥१०॥

### पद [७]

बल बल ये हंसा राम सिंघ ,

बामड़ में क्या रखो बंध ॥टेक॥

अहां निर्जन घरती बहुत धूर ,

अहं साक्ति बस्ती दूर दूर ॥१॥

प्रीप्प श्रुतु में तपे भोम ,

अहं आत्म दुस्त्रिया रोम रोम ॥२॥

सूख प्यास बुख सहे आन ,

अहं मुकताहल नहीं खानपान ॥३॥

जउवा नारू दुखित रोग ,

जहं में ते वानी हरप सोग ॥४॥

माया वागड़ वरनी यह ,

अव राम सिंध वरनूं सुन लेह ॥५॥

अगम अगोचर कथ्या न जाय ,

अव अनुभव मांहीं कहूं सुनाय ॥६॥

अगम पंथ है राम नाम ,

ग्रह वसो जाय परम धाम ॥७॥

मान सरोवर विमल नीर ,

जहं हंस समागम तीर तीर ॥८॥

जहं मुकताहल बहु खान पान ,

जहं अवगत तीरथ नित स्नान ॥९॥

पाप पुत्र की नही छोत ,

जहं गुरु शिष्य मेला सहज होत ॥१०॥

गुण इन्द्री मन रहे थाक ,

जहं पहुंच न सक्के वेद बाक ॥११॥

अगम देश जहं अभयराय,  
जन दरिया सुरत अकेली जाय ॥१२॥

### पद [८]

बल सूवा तरे आव राज,  
पिभरा में बैठा कौन काष ॥टेक॥

बिन्ही का दुख रहै जोर,  
मारे पिभरा तोर तोर ॥१॥

मरन पहने मरो धीर,  
जो पावे मुका सहज धीर ॥२॥

सतगुरु शम्भु हृदये में धार,  
सहजा सहजा करो उधार ॥३॥

प्रम प्रबाह पसै नव आम,  
नाद प्रकाश परम लाम ॥४॥

फिर ग्रह बसानो गमन जाय,  
महं बिन्ही मृत्यु मपहुंघै आय ॥५॥

आम फलै जहं रस अनंत ,  
 जहं सुख में पावो परम तंत ॥६॥  
 फिरमिर वरसै नूर ,  
 बिन कर वाजे ताल तूर ॥७॥  
 जन दरिया आनंद पूर ,  
 जहं विरला पहुंचै भाग सूर ॥८॥

पद [६]

राग बिहंगड़ा

नाम बिन भाव करम नहीं छूटै ॥१॥

साध संग और राम भजन बिन ,  
 काल निरंतर लूटै ॥१॥

मल सेती जो मल को धोवै ,  
 सो मल कैसे छूटै ॥२॥

प्रेम का सावुन नाम का पानी ,  
 दीय मिल तांता टूटै ॥३॥





तगुरु विन सोजी नही कोई ,  
 फिर फिर गोता खावै ॥१॥  
 वेतन मुरन जड़ को सेवै ,  
 वड़ा थूल मत गैला ।  
 देह अचार किया कहा होई ,  
 भीतर है मन मैला ॥२॥  
 जप तप संजम काया कसनी, सांख्य जोग व्रत दाना ।  
 याते नहीं ब्रह्म से मेला ,  
 गुण हर करम बंधाना ॥३॥  
 वकता होय होय कथा सुनावै ,  
 खोता सुन घर आवे ।  
 ज्ञान ध्यान की समझ न कोई ,  
 कह सुन जनम गवावै ॥४॥  
 जन 'दरिया' यह वड़ा अचंभा ,  
 कहे न समझै कोई ।  
 भेड़ पूंछ गहि सागर लाधै ,  
 निश्चय डूवै सोई ॥५॥

पद [११]

मैं तोहि कैसे विसरूं देवा ।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा ,

तेभी बंधि सेना ॥ टक

शेष सहस्र मुख निशदिन प्याये ,

आवम ब्रह्म न पावे

पाद सूर तेरी भारती रावे ,

हृदय मक्ति न आवे ॥१॥

अनंत जीव जाकी करत भावना ,

भरमव विकल आयाना ।

गुरु प्रवाप अखंड लिब लागी ,

सो वृद्धि माहि समाना ॥२॥

बैकुण्ठ आदि सो अंग माया वा ,

नरक अल अंग माया ।

पार ब्रह्म सो तो अमम अगोचर ,

कोई पिरला अखल जखाया ॥३॥

जन दरिया यह अकथ कथा है ,

अकथ कहा क्या जाई ।

पंछी का खोज मीन का मारग ,

घट घट रह समाई ॥४॥

### पद [१२]

जीव वटाऊ रे वहता भाई मारग माई ।

आठ पहर का चालना ,

घडी इक ठहरै नाई ॥१॥

गरभ जनम बालक भयोरे , तरुनाये गर्भान ।

वृद्ध मृतक फिर गर्भ वसेरा ,

[तेरा] यह मारग परमान ॥२॥

पाप पुत्र सुख दुख की करनी ,

वेडी थारे लागी पांय ।

पंच ठगो के वस पड़यो रे ,

कव घर पहुंचै जाय ॥३॥

चौरासी वासो बस्यो रे,

अपना कर कर मान

निश्चय निश्चय होय गोरे,

पद पहुँचै निर्वाण ॥४॥

राम बिना तो ठौर नहीं रे।

जई भाषै तई कात।

जन 'हरिया' मन उल्लट भगत सँ,

अपना राम सम्मान ॥५॥

पद [१३]

राग सोरठ

इ कोई संत राम अनुरागी।

जाकी सुरत सादस से लागी ॥ टक ॥

अरस परश पिपके रंग राती

होय रहीं पति प्रता ॥१॥

नियां भाव कछु नही समझै ,

ज्यों समुंद समानी सल्लिता ॥२॥

गिन जाय कर समुंद समानी ,

जहं देखै जहं पानी ।

काल कीर का जाल न पहुंचै ,

निर्मय ठौर लुभानी ॥३॥

बांवन चंदन भौरा पहुंचा ,

जहं बैठे तहं गंदा ।

उड़ना छोड़ के थिर हो बैठा ,

निश दिन करत अनंदा ॥४॥

जन दरिया इक राम भजन कर ,

भरम वासना खोई ।

गुरस परस भया लोहू कंचन ,

बहुर न लोहा होई ॥५॥

## पद [१४]

साधो राम अनूपम धानी ।  
 पूरा मिला तो वह पद पाया ,  
 मिट गई खिन्हा तानी ॥१६॥  
 मूल चांपट्ट आसन बैठा ,  
 ध्यान धनी से लाया ।  
 उबटा नाद कवल के मारम ,  
 गमना माहि समाया ॥१७॥  
 गुरु के शब्द की कुंची सेवी ,  
 अनंत कोठरी सोनी ।  
 प्र सोक पर कलश विराजे ,  
 ररंकार धुन बोनी ॥२॥  
 जहँ बसंत अमाष अमम सुख सागर ,  
 वेस सुरत बोराई ।  
 मस्तु धनी पर बरतम ओषा ,  
 उबट अपूठी भाई ॥३॥

सुरत शब्द मिल परचा हुआ,

मेरु मध्य का पाया ।

ता में पैस गगन में आया,

वहं जाय अलख लखाया ॥४॥

जहं पग विन पातर, कर विन वाजा,

विन मुख गावै नारी ।

विन वादल जहं मेहवरसै है,

ढुमक ढुमक सुख क्यारी ॥५॥

जन 'दरियाव' प्रेम गुण गाय,

वहं मेरा अरट चलाया ।

मेरु डंड होय नाल चली है,

गगन वाग जहं पाया ॥६॥

पद [१५]

साधो ऐसी खेती करई,

जासे काल अकाल न मरई ॥टेक॥



रसना का हल्ल बैल मन पचना ,

बिरह भोम तई बाई

राम नाम का बीजा घोया ,

मेरे सतगुरु कला सिखाई ॥१॥

ऊना बीज भया कुछ मोटा ,

हिरदा में उड़ढाया ।

किया निनाख भरम सब खोया ,

जई प्रेम नीर बरसाया ॥२॥

नाभी माहि भया कुछ कीरघ ,

पोटा सा दरसाना ।

अध बँवल में सिरा निकासा ,

गगन नाद गरजाना ॥३॥

मेरु रूँड होय हाँडी निकसी ,

ता ऊपर प्रकाशा

बीज गुयाया बिरह भोम में ,

फल लामा आकाशा ॥४॥

परथम जहां शंस्र धुन उपजी ,  
मन की अति रति जागी ।

गानै गगन सुधा रस वरसै ,  
नौवत वाजन लगी ॥५॥

त्रिकुटी चढ़ा अनंत सुख पाया ,  
मन की ऊनत भागी ।

ऊँचै ज्ञान ध्यान सत वरतै ,  
जहां सुपमन चूने लागी ॥६॥

चढ़ आकाश सकल जग' देखा ,  
जुगती थो सो जानी ।

सम्पत मिली विपत सब भागी ,  
ब्रह्म जीत दरसानी ॥७॥

जम गया दूध ब्रह्म कन निपजा ,  
सुरत अवेरन हारी ।

हुई रास तब वर तन लागा ,  
आनंद उपजा भारी ॥८॥

निपझा नाञ्ज मयन मर रास्ता ,  
ता मय सुरत समाई ।

जन 'हरिया' निर्भय पद परशा ,  
तई काल त पहुँचै आई ॥६॥

पद [१६]

बापल कैसे बिसरा आई ।

जदी में पति संग रत्न खेळूंगी ,  
आपा घरम समाई ॥टेक॥

सतगुरु मर किरपा कानो, उचम घर परनाई ।  
अब मेरे साई को शरम पड़ेगी ,  
दोगा घरल लमाई ॥१॥

भे जानराय में बानी मोली ,  
यां निमल में भेती ।

चे बखताणं में बोझ न जानूँ ,  
भेद न सकुँ सहेती ॥२॥

थे ब्रह्म भाव में आत्म कन्या ,  
समझ न जानूं बानी ।

‘दरिया’ कहै पति पूरा पाया ,  
यह निश्चय करि जानी ॥३॥

### पद [१७]

साधो मेरे सतगुरु भेद बताया ,  
तासे राम निकट ही आया ॥ टेक ॥

मथुरा कृष्ण अवतार लिया है ,  
धुरै निसाना धाई ।

ब्रह्मादिक शिव और सनकादिक ,  
सब मिल करत बधाई ॥१॥

गगन मंडल में रास रचा है ,  
सहस गोपि इक कंथा ।

शब्द अनाहदराग छती सौ ,  
बाजा बजै अनता ॥२॥

अकाश दिशा एक इन्ती उल्टा,  
राई मान दर बाजा ।

ता में होय गगन में आया,  
सुनै निरंतर बाजा ॥३॥

सर्प एक बालक उनि हार,  
विष तज अमृत पीबै ।

कृष्ण धरण में नौटे दीन होय,  
अमर जुगन जुग जीबै ॥४॥

अह इडा पिमला राम उधारै,  
धवन सुर थकाना ।

बहती नदिया धिर होय बैठी,  
कनजुग किया पयाना ॥५॥

राधा हरि सत मामा सुदर,  
मिली कृष्ण मल लागी ।

अरस परस होय स्नेहन लागी,  
अप जाय दुपिभा भागी ॥६॥

आइ प्रतीत और भया भरोसा ,

भीतर आतम जागी ।

दरिया इकरंग राम नाम भज ,

सहज भया वैरागी ॥७॥

### पद [१८]

साधो एक अचंभा दीठा :

कडुवा नीम कहै सब कोई ,

पीवै जाको मीठा ॥ टेक ॥

बूंद केमाहीं समुंद समाना, राई में परवत डौलै ।

चींटी केमाही हस्ती वैठा, घट में अघटा ओलै ॥१॥

कूंडा माही सूर समाना, चंद्र उलट गया राहू ।

राहु उलट कर तार समाना ,

भोम में गभन समाऊ ॥२॥

त्रिन के भीतर अग्नि समानी ,

राव रंक वस वोलै ।

उलट कपाल तिन मारिं समाना,  
 नाज तराशु तोली ॥१॥  
 सतगुरु भिल्ले तो अर्थ बताये,  
 जीवः ब्रह्म का मेला ।  
 जन 'हरियाव' पद को परसै,  
 सो है गुरु में खला ॥४॥

### पद [१६]

अब मेरे सतगुरु करी सहाई ।  
 भरम भरम बहु अवधि गंवाई,  
 मैं आपदि में पित पाई ॥टेक॥  
 हिरनी आप सिष पर रोका, दरप सिपनी हारी ।  
 सोवा साह होय कर निर्भय,  
 बस्तु करै रखनारी ॥१॥  
 अजगर उड़ा शिखर को डाका,  
 गरुड़ धकित होय बैठा ।

भोम उलट कर चढ़ी आकाशा,  
गगन भोम में बैठा ॥२॥

सिंह भया जाय स्याल अधीना,  
मच्छा चढ़े आकाशा ।

कुरम जाय अगना से सीता,  
देखे खलक तमाशा ॥३॥

राजा रंक महल में पौढ़ा, रानी तहां सिधारी ।  
जन 'दरिया' वा पद को परसै,  
ता जन की वलिहारी ॥४॥

### पद [२०]

मुरली कौन वजावै हो, गगन मंडल के बीच ॥टेका॥

त्रिकुटी सगम होय कर, गंग जमुन के घाट ।

या मुरली के शब्द से, सहज रचा बैराट ॥१॥

गंग जमुन विच मुरली बाजै, उत्तर दिश धुन होय ।

उन मुरली की ढेरहि सुनि सुनि,

रही गोपिका मोहि ॥२॥



जहा अघर डाली ईसा बेठा , धूमत मुहा हीर ।  
 आनंद चकवा फेला करत है , मानसरोवर तीर ॥३॥  
 शम्भु धुम मृदंग वाजे , बारह मास पसेव ।  
 अनहद ध्यान असेद आतुर , परत सषही संत ॥४॥  
 कान्ह गोपी नृत्य करत , चरण वपुं दि बिना ।  
 जैन विन दरियाब दखै , आनंद रूप घना ॥५॥

पद [२१]

॥ राग भैरो ॥

कदा कहुं मरे पिठ की घात ,  
 मोर कहुं सोइ भ्रम सुहाव ॥६॥

जय मैं रही थी कन्या छारी ,  
 तब मर करम हवा सिर भारी ॥१॥

जय मरी पिठ से मनसा दौड़ी ,  
 सत गुरु आन सगाई जोड़ी ॥२॥

तब मैं पिउ का मंगल गाया,  
जब मेरा स्वामी ब्याहन आया ॥३॥

हथ लेवा दे बैठी संगी,  
तब मोहिं लीनी बांये अंगा ॥४॥

बन 'दरिया' कहै मिट गईं दूती,  
आपो अरप पीव संग सूती ॥५॥

### पद [२२]

ऐसै साधु करम दहै ।

अपना राम कबहुं नहिं विसरै ,

वुरी भली सब सीस सहै ॥ टेक ॥

हस्ती चलै भुंसै बहु कूकर ,

ता का औगुन उर न गहै ।

बाकी कव हूँ मन नहीं आनै ,

निराकार की ओट रहै ॥ १॥

पति को पाय मया धनवन्ता,  
निराधन मित्र तन धुरा कह ।

शास्त्री कब हूँ न मन में खनै,  
अपने धनी संग जाय रहै ॥२॥

पति को पाय मई पतिव्रता  
बहु स्थमिचारिन हसि करै ।

शाके संग कब हूँ नहि जायै,  
पति से मिलकर विवा अरै ॥३॥

हरिया राम भगै जो भाषू,  
मगत मत्स्य उपहास करै

नाका शोष न अंतर जानै,  
पद्म नाम महात्म मर सागर ठरै ॥४॥

पद [२३]

“राग विलावल”

राम भरोसा राक्षिण, ऊनित नहि कारै ।

पूरन द्वारा पुरसी, कल्पे मठ मारै ॥टेक॥

कोई कहै अमृत समुद्र मांहि ,  
वड़वा अग्नि क्यों सोखत ताहि ॥३॥

कोई कहै अमृत शशि में वास ,  
घटै वढ़ै क्यों होइ है नाश ॥४॥

कोई कहै अमृत सुरगां मांहि ,  
देव पिथें क्यों खिर खिर जांहि ॥५॥

सब अमृत बातों की बात ,  
अमृत है संतन के साथ ॥६॥

'दरिया' अमृत नाम अनंत ,  
जा को पी-पी अमर भये सब संत ॥७॥

### पद [२६]

साधो अरट वहाँ घट माहीं ।

जो देखा ताही को दरसै ,

आदि अंत कछु नाहीं ॥ टेक ॥

अरघ उरघ पट कंबल विष, करतार विपाया ।  
 सतगुरु मित किरपा करी, कोई बिरले पाया ॥१॥  
 तीन लोक खोदह भवन, केवल मर पुरा ।  
 हीभिरां से हामिर सदा, दूरां से दुरा ॥२॥  
 पाप पुन्य होय रूपे हैं, उन्हीं की माया ।  
 साधन के बरतन सदा, मरमै मरमाया ॥३॥  
 जम हरिया एक राम मंत्र, मजमे की बारा ।  
 जिन यह मार उठाइया, उनके सिर मारा ॥४॥

पद [२५]

राग गुढ "

अमत नीचा कहे सय कोई,  
 पीये पिना अमर नहीं होई ॥१॥  
 कोई कहे अमत बसै पताल,  
 एक अंत नित छासै काल ॥२॥

कोई कहै अमृत समुद्र मांहि ,  
वड़वा अग्नि क्यों सोखत ताहि ॥३॥

कोई कहै अमृत शशि में वास ,  
घटै वढ़ै क्यों होइ है नाश ॥४॥

कोई कहै अमृत सुरगां मांहि ,  
देव पियें क्यों खिर खिर जांहि ॥५॥

सब अमृत बातों की बात ,  
अमृत है संतन के साथ ॥६॥

'दरिया' अमृत नाम अनंत ,  
जा को पी-पी अमर भये सब संत ॥७॥

### पद [२६]

साधो अरट वहाँ घट माहीं ।  
जो देखा ताही को दरसै ,  
आदि अंत कछु नाहीं ॥टेक॥

अरध उरध विष अमृत कूवा,  
मन पीने काइ। दासा।

ठनटी मास गगन को चाली,  
सहज भरै आकाश ॥१॥

[आका] खतन बैन खलै नहि होलै,  
अलस निरंजन माली।

इच्छा बिना वशों दिश पीपै,  
सहज होत दरियाली ॥२॥

नैपे हुई तभी मन परचा,  
कन की रास बढ़ाई।

सुरत सुंदरी संग महीं छोड़ै,  
टारी त्रै म जाई ॥३॥

अगम अय कोई विरला जान,  
भिन खोजा ठिन पाया।

मन दरिया कोइ पुरा जोमी,  
कासे भाद समाया ॥४॥

पद [२७]

साधो अलख निरजन मोई ।

गुरु परताप राम रम निर्मल ।

और न दृजा कोई ॥८॥

सकल ज्ञान पर ज्ञान दयानिधि ,

सकल जोत पर जोती ।

नाके ध्यान सहज अब नाश ,

सहज मिटै जम छोती ॥९॥

नाकी कथा के सरवन तेती ,

सरवन जाग्रत होई ।

ब्रह्मा विष्णु महेश अरु दुर्गा ,

पार न पावै कोई ॥१०॥

सुमिर सुमिर जन होई हैं राना ,

अति भीना से भीना ।

अजर अमर अक्षय अविनाशी ,

महावीन परवीना ॥११॥



अनंत सेव भाके आश पियासा,  
 अगन मगन थिरभीरै ।  
 अन 'हरिया' हासन के दासा,  
 महा कृपा रस पीरै ॥४४॥

### पद [२८]

सेतों क्या गृहस्थ क्या त्यागी ।  
 चेहि बेसु तेहि बाहर भीतर,  
 घट घट माया खामी ॥टेक॥  
 माटी की भीत पवन का थंभा,  
 गुण औगुण से छाया ।  
 पाँच तत्त आकार मित्राकर,  
 सहस्रों मूह बनाया ॥१॥  
 मन मयो पिता मनसा भई माई,  
 पुत्र सुत्र दोनो भाई ।

आशा तृष्ण वहिनें मिलकर,

गृहकी सोंज बनाई ॥२॥

मोह भयो पुरुष कुबुध भई घरनी,

पांचो लडका जाया ।

प्रकृति अनंत कुटंबी मिलकर,

कलहल बहुत उपाया ॥३॥

लड़कों के संग लड़की जाई,

ता का नाम अधीरी ।

वन में वैठी घर घर डोलै,

स्वारथ संग खपी री ॥४॥

पाप पुत्र दोउ पाड़ पड़ोसी,

अनंत वासना नाती ।

राम द्वेष का बंधन लागा,

गृह बना उत्पत्ती ॥५॥

कोई गृह मांड गृह में वैठा,

वैरागी वन वासा ।

अन दरिया इफ राम भजन बिन,  
घट घट में पर बासा ॥६॥

पद [२६]

रेखता

सतमुख से शम्भु ले रसना से रत्न कर,  
हिरदे में भ्रान कर ध्यान जाये  
पट कंचन यष कर नामि कंचल छेद कर,  
काम को लोप पाताल जाये ॥१॥  
जई साईं को सीस ले अमके सिर पाव दे,  
मेरु मष होय आकाश जाये ।  
अगम है वाग जई निगम गुल सिद्ध रहा,  
दास 'दरियाय' हीदार पाये ॥२॥

## पद [३०]

॥ छईं सही ॥

राम नाम नहिं हिरदे धरा .

जैसा पशुवा तैसा नरा ॥१॥

पशुवा नर उद्यम कर खावै ,

पशुवा तो जंगल चर आवै ॥२॥

पशुवा आवै पशुवा जाय ,

पशुवा चरै औ पशुवा खाय ॥३॥

राम नाम ध्याया नही भाई ,

जनम गया पशुवा की नाई ॥४॥

राम नाम से नाही प्रीत ,

यह सब ही पशुवों की रीत ॥५॥

जीवत सुख दुख में दिन भरै ,

मुवा पछे चौरासी पड़ै ॥६॥

जन दरिया जिन राम न ध्याया ,

पशुवा ही ज्यों जनम गवांया ॥७॥

## पद [३१]

साधो हरि पद कठिन कइानी ।

काजी पंडित मरम न जानै ,

कोइ कोइ बिरजा आनी ॥ टफ

अलह की जइमा अगइ को गइना ,

अअरको अरना , विन मोतमरना

अपर को धरना , अलस को अस्तमा ,

नेन विन देखना , विम पानी पट मरना

अमिअ सुं मिलना , पांन विन चलना ,

विन अगिन तन रहना

कस्तु विन पामना , तीरथ विन न्हाबना ।

पंच विन जाबना , रूप न रेस बंद नहिं सिमृत

नहिं पात बरन कुल्ल काना

अन दरिया गुरु मम तें पाया ,

निरमय पद निरबाना ॥

पद ३२

दरिया दरवारा, खुल गया अजर किवाडा ॥१॥

चमकी वीज चली ज्यों धारा,

ज्यो विनलीविच तारा ॥१॥

खुल गया चंद वन्द बदरी का,

घोर मिटा अंधियारा ॥२॥

लौ लगी जाय लगन के लारा,

चांदनी चौक निहारा ॥३॥

सुरत सैल करै नभ ऊपर,

वंक नाल पट फाड़ा ॥४॥

चढ़ गई चांप चली ज्यों धारा,

ज्यों मकड़ी मकतारा ॥५॥

में मिली जाय पायपिड प्यारा,

ज्यों सलिता जल धारा ॥६॥

देखा रूप अरूप अलेखा ,

ता का पार न पारा ॥७

‘हरिया’ दिज दरवेस भये तप ,

उतरे भोगल पारा ॥८

॥ इति ॥

## गुरु महिमा

नमो नमो हरि गुरु नमो .

नमो नमो सब सन्त ।

जन दरिया बन्दन करै , नमो नमो भगवन्त ॥

नमो नमो निराकार निरंजन हो अविनाशी ।

तेज पुंज प्रकाश , घटो घट आप प्रकाशी ।

नमो प्रेम अवतार धन्य मोहि दर्शन दीन्हा ।

काग पलट कर हंस करि शरणागत लीन्हा ।

जिल मिल वर्षत नूर तेज तन होत अपारा ।

ज्ञान ध्यान गुणवन्त , ऐसा गुरु पीर हमारा ॥

भगवत ज्यौ अवतार , कली से सन्त कहाया ।

अनन्त ही जीव उद्धार , नाम जपि नाम समाया ।

गुरु प्रेम पुरुष सत सन्त , सत्त ही सन्त बताया ।

अकरम कर्म छडाया . नाम से मोहि लगाया ।



## दोहा

पुण घट्ट कृपा निधि, दीन बन्धु दावार ।  
 मन 'दरिया' बन्दन करै, परख कमल विस धार ॥  
 गुरु देवन का देव है, गुरु सप और न कोय ।  
 जन 'दरिया' कर बन्दना,  
 परख कनक वित पोष ॥

## चौपाई

नमो नमो गुरु प्रम ब्याना,  
 अम्भ मरख की भेटी ज्ञासा ।  
 नमो नमो मत गुरु जी स्वामी,  
 दीन बन्धु तुम्ह अन्तरपामी ॥१॥  
 नमो नमो गुरु देव गुसाई,  
 बन्दन करत दास सिर नाई ।  
 प्रेम पुरुष मजन भर पुरा,  
 तेज जिज्ञा मिल अर्पत भूरा ॥२॥

प्रकठ कलीमें ज्यों औतारा ,

दीन दयाल गुरु देव हमारा ।

पकड़ वाह मोहि शरण लीन्हा ,

काग पलट गुरु हंसा कीन्दा ॥३॥

राम नाम निज तत्त्व पढ़ाया ,

पढ़तहि जीव परम सुख पाया ।

गुरु है सदा मुक्ति के दाता ,

शरण राख लिया दीजग जाता ॥४॥

प्रेम पुरुष कृपा प्रभू कीन्ही ,

राम भजन की शिक्षा दीन्ही ।

पूरा सद्गुरु हमने पाया ,

ज्ञान ध्यान गुह्य भेद बताया ।

जीव शिव का मेला किन्हा ,

दे गरु ज्ञान शरण में लीन्हा ॥

## दोहा

सद्गुरु प्रेम दयाल की, महिमा कही न जाय ।  
 हरिया देख्या दूषता, भव अल क्षिया विराय ॥१॥

प्रेम पुरुष पूरा मित्रे, पूर्य दिया बताय ।  
 अप हरिया मिभय मया, भव हर लागत नाय ॥२॥

## चौगढ़

सद्गुरु मिथ्या सकल दुख भागे ,  
 राम नाम सुमिरन को लागे ।

सद्गुरु मिथ्या कटी भम वेढी ,  
 राम भजन में सुरता जोड़ी ॥१॥

चोड़या जगत जाल का फन्दा ,  
 सद्गुरु मुक्तो करनिया बदा ।

कशनी वे कंपन कर लीदा ,  
 निपय विकार सकल तम दीन्दा ॥२॥

गुरु विन कर्म कौन छुडावै ,

गुरु विन जीव महा दुख पावै ।

गुरु विन जीव भटक बहु मरिये ,

लख चौरासी फेरा फिरिये ॥३॥

दुख पावत बहु कष्ट अपारा ,

सद्गुरु मिले तो भव जल पारा ।

आन देव को फिर फिर ध्यावै ,

ताते जीव अधोगति जावे ॥४॥

## दोहा

सद्गुरु प्रेम दयाल जी , भरमत दिया छुड़ाये ।

दरिया नाम—निरजना , जाकी सेव लगाय ॥

राम नाम निज मन्त्र दे , भेद कह्यो समझाय ।

प्रेम परुष परताप से . 'दरिया' वद्व ममाय ॥

## चौपाई

सद्गुरु मिया सुपि सब आई ,  
 राम नाम से करी समाई ।  
 सद्गुरु मिया महा तत्व पाया ,  
 तब ही तबमें सुरत समाया ॥१॥  
 सुरत शब्द मिल आनन्द हुआ ,  
 सो सुख छांड़ि जाय नहीं जूबा ।  
 अन्तर पढ़वा सब ही सुनिया ,  
 भिन से बिहड़िया , उन से मिलिया ॥२॥  
 सद्गुरु आप क्यो सुत चेला ,  
 अगम पन्थ का पकड़ी गेला ।  
 सद्गुरु साथ पठाने बाटू ,  
 ब्रह्म देश का सुन्या कपाटू ॥३॥  
 अरम करम का सुन्या शैला ,  
 ब्रह्म देश गया मेरा हंसा ।

ब्रह्म देश का दर्शन करिया ,

प्रेम उमंग आनन्द में भरिया ॥४॥

रग रग रोम भया रंकारा ,

टग टग कण्ठ शब्द शणकारा ॥

बोले गहर गंभीर दशाख ,

रोम रोम में भया ऋणकारा ॥५॥

माश छः मुख सेती जपिया ,

कण्ठ कमल में रग रग रुपिया ॥

नवमें मास हृदय प्रकाशा ,

राम राम जपि श्वास उशासा ॥६॥

मास ग्यारवे नाभि में आया ,

विष्णु देव का दर्शन पाया ॥

नाभि स्थान रखा त्रय माशा ,

लागी मोहि दरश की आशा ॥७॥

अब तो ध्यान कूच कर चाल्यो ,

मेरु दरुण विच मारग डाल्यो ॥

मेरु-दुय्य का मारग बँका,  
 सदगुरु शब्द दिया जहाँ बँका ॥८॥  
 त्रिकुटी घाट जहाँ मैं आया,  
 श्रेयबन्धी का स्नान कराया ।  
 श्रयवेष्टी में माया कल्पै,  
 पूरा है तोहि वस्तु कल्प ॥८॥

### दोहा

जन दरिया त्रिकुटी बँदे, मन्को उपरै धाम ।  
 पड़े अपूठा नमत से, अमृत नित सर्पाय ॥

### चौपाई

गुरु प्रताप महीं मन मेरा,  
 सदगुरु हस्त शीश पर पूरा ।  
 उमम उमग कर शब्द हीस्परसे,  
 गुरु प्रताप धरु जब वरी ॥

## दोहा

ममो मेरु से वाहुँड़, त्रिकुटी तक ओंकार ।  
 'दरिया' आगे ब्रह्म है, रंकार निरधार ॥

## चौपाई

शुन्न शिखर पर हंसा जाई,  
 आनन्द अगम अगोचर पाई ।  
 सहस्र पंख का कवल प्रकाशा,  
 झिलमिल जोतिरु अनन्त उजासा ॥  
 रंग वरण वाको है नांही,  
 कहा सुण्या कलु जावे नांहीं ।  
 हरशण कियां आनन्द वण आवै,  
 गुरु गम विना भेद नही पावै ॥  
 ब्रह्म अनूपम सागर स्वामी,  
 अनन्त रूप धन अन्तरजामी ।  
 कहा रूप जो कहुं बखाना,  
 गावत वेद अनन्त पुराणा ॥



## दोहा

ब्रह्म—योग परिषय मया, सब्गुरु के परताप ।  
 हर्ष बहुत सुरता सखी, मयो अनामी आप ॥  
 प्रेम पुरुष मोटा मिक्षया, मोटी दियो बठाय ।  
 अब दरिया शरखा मई, छोटा करत न जाय ॥

## चौपाई

अगम बात अब कही सुनाई,  
 हरिजन ईसा मेह बवाई ।  
 बाडी बाम परनि बिनु वेसा,  
 अपर सरोवर अमृत पसा ॥  
 अमृत अनुभव निज हम पीया,  
 गुरु प्रताप आनन्द हम लीया ।  
 मनवा ईसा करत कित्तौरा,  
 सुख सागर मोती बहुवेरा ॥

सद्गुरु हम को सुखिया-किया ,

नाम अमीरस हम को दीया ।

तेज पुंज प्रकाश उसीका ,

दुख भया दूर दिन काट सुशीका ॥

### रभैनी

सद्गुरु राम जपाया रे, अब आनन्द मेरे आया रे ।

अवतेज पुञ्ज मुख नूरारे, श्री सद्गुरु समर्थ पूरारे ।

मैं राम अमी इस पियारे ,

मुझे प्रेम प्रीति से दियारे ॥

अब आनन्द भया अपारा रे ,

मारा सतगुरु भव जल तारारे ॥

अब गिगन मण्डल घर छाया रे ,

अनन्द नाद वभाया रे ।

अलख ब्रह्म मोदि दर्श्या रे,  
गुरु कृपा सेति में परस्पा रे

त्रिवेणी पर ठाया रे,  
सुख मद्र संख बजाया रे

वहां मोति जिह्वा मिल जागे रे,  
बहा गीरी पयटा बाजे रे

बह अपरंपार अपारा रे,  
निराकार राम निरपारा रे।

विम बाहल बन घोरा रे,  
बोले है चात्रिक मोरा रे॥

वहां विम मुल मारी गावे रे,  
कर विनु ठाल बजावे रे।

निरठ करठ विनु घरया रे,  
अलख पुरुष के शरया रे।

वेम वशों दिग छोहेरे,  
कोई बिरखा हरि मन बोवे रे॥

तन की ताप जब भागी रे ,

तव सुरत राम से लागी रे ।

दूगुरु जी जहां मैं देख्या रे ,

निराकार राम जी पेख्यारे ।

दर्शन देख सुख पाया रे ,

आनन्द बहुत अघाया रे ॥

### दोहा

रूदूगुरु के परताप से , परस्या आतम देव ।

संशय सब ही मिट गया ,

हो गया अलख अभेव ॥१॥

परस्या सतगुरु प्रेम जी, रहा न अन्तर कोय ।

सुरता मिल गई राम में ,

बहुरिन दूजी होय ॥२॥

राम नाम सदगुरु दिया ,

किया विकर्म विनाश ।

हरिया अथ आनन्द भया,  
सागी नाम सुप्यास ।

संस्तु १७ साल में वर्ष ६० में जाय ।

राम सागर की तीर, महिमा करी वखाय ।

॥ इति ॥





## अथ श्री पूरणदास जी महाराज की संक्षिप्त वाणी

नमो नमो गुरु देव जी, नमो राम महाराज ।  
नमो नमो सब सन्त को ,  
जन पुरण के सिरताज ॥१॥

### चौपाई

राम शब्द , सुमिरण आया ।  
जागी सुरत , अरु जीव जगाया ॥  
निर मल नैन , अगम का खोल्या ।  
राम राम , रसना से बोल्या ॥१॥  
राम रसायन पीया प्याला ,  
ऐसे अवधू होय मत वाला ।  
हृदय हिल मिल जल व्यूँ मीना ,  
निरगुण शब्द निरंतर चीन्हा ॥२॥



हृदय भीम निरंजन राया ,

वासू उज्जट नाम वल आया ।

भवंरि कंबल विच निरमल बाशी ,

हरिधन जुमव प्रह्व की भानी ॥१॥

### दोहा

घोरघट घाटक चाटे औघट , निकट पंथ वैराट्ट ।

बांसे बली प्रेम की धारा, सुली मेरकी घाट्ट ॥२॥

मेरू दड तल मारग पाया ,

उसट प्रह्व आकाशा आया ।

अमम भोगमै मगर जगाया ,

महां से उपना वहां ही समाया ।

असरूप कला ले ऊगा सूर ,

बनै असंख अनादव तूरा ॥३॥

मिल मिल नोव प्रह्व प्रकाशा ,

अन्द विभा महां पंद उमासा

इंद्रग ताल , गूधरूँ वाजै ,

निज मन निजपुर जाय विराजै ॥५॥

इला पिंगला तारी लावै ,

सुपमन सुख से प्याला पावे ।

पिया पियाला मन मतवाला ,

पकड़या पेड़ छोड़िया डाला ॥६॥

विन रसना बहु गावे नारी ,

पग विन पातर नाचे प्यारी ।

गावे नारी राम रिभावै ,

रोग रंग वैराग वजावे ॥७॥

गिगन मंडल विच गंग खलक्के ।

विन वादल जहां वीज भलक्के ॥

विन वादल , वादल वहां वरपै ॥

विन नियना निर्मल पद दर्शै ॥८॥

जोत अखंड वजै नहां तूरा ।

मार समाय भिड़े रण शूरा ।

मुपरी वीण बजे, घट माई ।

ठा पट बीच विराजे साई ॥६॥

पाल विना सप ही रस मरना ।

आठम रहे परमा उम शरणा ॥

तरुवर बीच पंखी होय भेजा ।

एक गुरु एक कहिये चेजा ॥१०॥

चेजा भंवर भित्ता कूर जावे ।

ररठा गुरु भकेजा पावे ॥

गुरु गम अगम बरमेरा ।

आशाममल मिटया 'बही' फेरा ॥११॥

पेसी सार सकुन जुम माई ।

सतगुरु विना छड़े कोइ नाही ॥

भव यह जीव सतगुरु संम आवे ।

मोघ बुबारा सरज ही पावे ॥१२॥

## छन्द-पाद

ऐसा ब्रह्म विलास, आत्म अवास ।

अवगत निवास कथते पूरण दास ॥

॥ इति ॥

## अथ रामसतगुरुदेवजी की आरती चौपाई

कर मन आरती घेष निरंजन,

आरागमन सकल धु ल भजन ।

प्रथम सेष सतगुरुजी कीजे,

तन मन अरप चरण चित दीजे ॥

राम राम रसना त्रिष जामी,

हृदय ग्योति प्रद्व की जागी ।

नाम कैवल त्रिष नाद पनाया,

मरण्या सहर गगन मरनाया ।

शहर अनादव (पर) गंजल चारा,

चडा प्रीकुटी प्राण्य हमारा ॥

आदि-अनादि राम पर मेरा,

कृष्ण दास चरखा का देरा ।

अथ श्री कृष्णदासजी महाराज कृत गुरु महिमा

विनयः—

नमो राम निर्वाण ब्रह्म, तत गुरु सबही सन्त ।  
 जन कृष्णदास कर जोड़ के, वन्दन बहुत करन्त ॥  
 सतगुरु जन दरियाव सहि मन मान्या मेरे,  
 शूर-वीर सत वैष्ण कहो कुण पूठा फेरे ।  
 मिटा भर्म अन्धेर, किया गुरु जान उजाला,  
 अथवा अमल भरप्र, सदा सङ्ग शिष्य मत्तवाला ।  
 राम नाम नित प्रीति शिष्यगण सुमिरै सारा ।  
 नैन-वैष्ण हरि हेत, सदा साहब का प्यारा ।  
 खबरदार हुँशियार पार पुरुषोत्तम पागी,  
 'दरिया' सेरू उलझ सुरति ब्रह्म चरणा लागी ।

॥ दोहा ॥

निराकार आकार विच, जहां दरिया का वाश ।  
 अगम अगोचर गम किया, देख्या किसने दास ॥

## चौपाई

शिष्य ! मनको नारेख मेन्द्रि गुरु घरखा आगे ।

प्रेम प्रीति निष्ठास चाह मुक घरखा लागे  
 क्यायन्त गुरुवेव, अनन्त फल दर्शन पाया ।

भरम—कर्म अप पाप, मिटै गुरु दर्शन पाया  
 जप धीरव प्रव दान पुण्य फल सुकृत किया ।

सकल—धर्म की याद परम गुरु दीया  
 होम यज्ञ आचार, शील समठा गुरु सेवा ।

बाखी कथा बिचार दीन बहु गुरु वेषा  
 सांस्य योग गुरुवेव, अर्थ अनुभव सुस्वरासी,

भक्ति—मुक्ति महामोक्ष, अमर अक्षय अनिनाशी  
 सकस मण्ड कज नीव तिरै गुरु दर्शन परस्या,

वारण तिरण उदार पार गुरु दर्शन दरस्या ।  
 सतगुरु शरखै आय, ज्ञान दिश आय अमासी ।

कोन दुखावे राह, नाय कर्मों की खाकी

सतगुरु आज्ञा माँग शिष्य मुख अमृत पीवे ।

जन्म-मरण मिट जाय, ज्योति मिल अक्षय जीवे ।

॥ दोहा ॥

भाग भला शिष्य गुरु मिला, दिल में रखे न दूज ।

‘किसनदास’ तन—मन अरप, गुरु समर्थ पद पूज ।

चौपाई

बार बार सतगुरु समझावै,

ऐसी जन्म बोहुरि नहीं आवै ।

राम—राम भजले शिष्य भाई,

मुक्ति होण की जुगति बताई ।

जन्मण—मरण मिटैगा तेरा,

सत का शब्द मान शिष्य मेरा ।

यूं सत शब्द मान शिष्य लीजै,

सतगुरु शब्द कहै सो कीजै ।



गुरु विन नाथ हाथ नहीं छाँधे,

गुरु विन पार कौन पहुँचायै ।

गुरु विन बंधे—बँके राय झूठा,

गुरुविन ताहय रहे झपूठा ॥

गुरु विन सप वीरय फिर आवै :

गुरु विन मुक्ति मुक्त नहीं पायै ।

गुरु विन पाश्च नाम निव पर्ये ।

गुरु विन सेवा स्वगे न लेखे ॥

गुरु विन मन मुक्त ज्ञान विचारे ।

गुरु विन भरम बहुत पचहारे ॥

गुरुविन कुस्य पर भेद बतायै ।

गुरु विन ठौर ठीक नहीं पायै ॥

गुरु विन अगम निगम कुस्य सोखे ।

गुरु विन दसु द्वार कुस्य खोले ॥

गुरु विन सूजा अगम गमायै ।

गुरु विन निज तत हाथ न आये ॥

गुरु विन हृद में कौन हलावै ।

गुरु विन वेद कौन बतावै ॥

गुरु विन योग—युक्ति नहीं पावै ।

गुरु विन मोक्षमुक्ति नहीं आवै ॥

गुरु विन अन्धा बहुत अलूजै ।

गुरु विनसत साहब नहीं सूजै ॥

गुरु विन मेक पहर फिर फूल्या ।

गुरु विन आपो आपण झूट्या ॥

गुरु विन योग नहीं वैरागी ।

गुरु विन त्यागी भी अनत्यागी ।

गुरु विन अजरी—वजरी करिहैं ।

गुरु विन भवसागर में फिरि हैं ॥

गुरु विन कौन अष्टाङ्ग कमावै ।

गुरु विन कौन प्रसिद्ध कहावै ॥

गुरु विन साध अगाध न होई ।

गुरु विन अन्नस्य ज्ञेयं नहीं कोई ॥

गुरु विन राम नाम कुछ ज्ञागै,

गुरु विन मन सूता कुछ भागै ॥

गुरु विन बहुत श्ले मये वीरा ।

मम की मार पड़े रहै पीरा ॥

मम सामर से पार उतारे ।

महा प्रलय सँ अनस्य उतारे ॥

वारण तिरण उद्धारण आया ।

भाग बढ़ा पूरा गुरु पाया ॥

शिष्य कर जोड़ लग्या गुरु परखा ।

हुपया, दया मया कर करखा ।

दया करी गुरु दर्शन दीया ।

तुमर परण शरण हम भीया ।

मैं मति हीन मार्ग नहीं भाग्या ।

पार ब्रह्म गुरु नहीं पहिचान्या ॥

मैं सूजा तुम मेद पठाया ।

तुम साहव में शरणे आया ॥

सैं कमीं, कुष्टी अहंकारी ।

पतित उद्धारण पर उपकारी ॥

तुम गुरुदेव अलख अदिनाशी ।

तुम विन कौन काटे यम फाँसी ॥

तुम गुरुदेव निरंजन निरभय ।

शिष्य का शत्रु किया गुरुसव व्यय ॥

तुम गुरु देव नाथ निर कारी ।

शिष्य भव डूवत लिया उवारी ॥

तुम गुरु देव महा सुख दीना ।

काग पलट हंसा कर लीना ॥

राम नाम मोताल चुगाया ।

वायश पलट शिष्य हंस कहाया ॥

## दोहा

बार बार गुरु गम अगम, अस्मत् अकल अनन्त ।  
 किरानदास गुरु गम अगम, गुरु ऐसा भवन्त ॥  
 अलस लेस में गुरु नहीं, गुरु है अगम अपार ॥  
 किरानदास पम्दन करे, ममो सिरजन इर ॥

## चौपहरे

गुरु विन बला कौन ठपरि,  
 गुरु विन भवसागर कुण्डरि ।  
 गुरु विन जीव कही क्यों जीवि,  
 गुरु विन सत अमृत कुण्ड पीवि ॥

## दोहा

गुरु विन अग्धा ये अकल, गुरु विन मुट्ट अमान ।  
 किरानदास मुठ गम बिना सभ नर पण समान ॥

## चौपाई

गुरु विन भटकत बहु दिन बीता,

गुरु विन स्वाँग रहा सब रीता ॥

गुरु विन शुद्ध—बुद्धि हाथ न आवै,

गुरु विन भुगत—भुगत मर जावै ॥

गुरु विन माया बहुत नचाया,

गुरु विन जोगी जगत हंसाया ॥

गुरु विन पट्ट दर्शन ठग बाजी,

गुरु विन मक्कर पण्डित् काजी ॥

गुरु विन जोर कहावै जोसी,

गुरु विन अन्त काल फिर रोसी ॥

गुरु विन करै कीर्तन रासा,

गुरु विन घर—घर फिरै उदासा ॥

गुरु विन भालर ताल घजावै,

गुरु विन माया बहुत मनवै ॥

## दोहा

नार पार गुरु गम अगम, अपगत अकल अनम्ये ।  
 किसानदास गुरु मम अगम, गुरु जैसा मगन्त ॥  
 अन्नस लेख मे गुरु नहीं, गुरु हे अगम अपार ॥  
 किसानदास कन्दम करै, नमो सिरजन शर ॥

## घोषार्ई

गुरु विम चेला कीब ठकरि,  
 गुरु विन मकसानर कुणवरि  
 गुरु विन भीम फरो क्यों जीवि,  
 गुरु विम सत अमठ कुण पीवि ।

## दोहा

गुरु विन अग्या वे अकल, गुरु विन मुद्र अग्रान ।  
 किसानदास गुरु मम पिना सव नर पद्य समान ॥

## चौपाई

गुरु विन भटकत बहु दिन वीता,

गुरू विन स्वॉग रहा सब रीता ॥

गुरु विन शुद्ध—बुद्धि हाथ न आवै,

गुरु विन भुगत—भुगत मर जावै ॥

गुरु विन माया बहुत नचाया,

गुरु विन जोगी जगत हंसाया ॥

गुरु विन पट्ट दर्शन ठग वाजी,

गुरू विन मक्कर पण्डित् काजी ॥

गुरु विन जोर कहावै जोसी,

गुरु विन अन्त काल फिर रोसी ॥

गुरु विन करै कीर्तन रासा,

गुरू विन घर—घर फिरै उदासा ॥

गुरु विन भालर ताल घजावै,

गुरू विन माया चहुत मनावै ॥



गुरु विन कुल मारग में यूठा,

गुरु विन राम न माने रुद्रा ॥

गुरु विन भ्रान—देन सप लूटे,

गुरु विन जीव कही क्यों लूटे ॥

गुरु विन परम पन्थ नहीं पावै,

गुरु विन ममत अगत सप जावै ॥

गुरु विन कौन सरोदा साभै,

गुरु विन गगन नाह किम माभै ।

गुरु विन धव सुर पर हेरे,

गुरु विन पैष परन कुण्य फेरे ।

गुरु विन निम निरवाण न पावै,

गुरु विन अपधि एधि गमावै ॥

गुरु विन पुण्य मव पार लंघावै,

कर कृपा कर्धार बवावै ॥

सम्भ हीन एतगुरु नहीं कीवै,

पारस छोड पथर क्यों लीवै ॥

## चौपाई

सतगुरु ऐसा कीजै साधू,

पाँचूं पेल परम तत्व लाधू ॥

सतगुरु ऐसा कीजै भाई,

परम ज्याति में ज्योति मिलायी ॥

जैसा गुरु तैसा शिष्य होई,

खर से खर बन्द्या सब कोई ॥

ज्यौ दीपक विन मन्दिर अंधारा,

यूँ सतगुरु विन साहब न्यारा ॥

‘किशनदास’ गुरु अधम उद्गारे,

आप तिरै औरो को तारे ॥

ऐसा है गुरु देव हमारा,

‘किशनदास’ सतगुरु का चेरा ॥

निराकार निर्भय नारायण,

‘किशनदास’ पहुँचा—पारायण ॥

## पद ( राग विद्मढ )

टेर—साधो घर ही में दर पाया ।

पर ही कीच मिथ्या अहिनाशी,  
मिल कर मरख मिटाया ॥ टेर ॥

पर में सतगुरु पर में बेजा,  
पर में सुमिरण प्यानी ।

पर में नाद अनाद गरजे,  
पर में हे सख छानी ॥ १ ॥

पर में देखल पर में देना,  
पर में सेवा—शुभा ।

पर में राग अमर मर मेरा,  
और न कोई शुभा ॥ २ ॥

पर में कथा मागदठ पर में,  
पर में अथ विचारा ।

पर में मक्ति मुक्ति पुनि पर में,

ऐसा गृह हमारा ॥ ३ ॥

घर में हवन यज्ञ भी घर में,  
घर में है व्रत—वासी ।

उड़सट तीरथ सो भी घर में,  
घर में मथुरा काशी ॥ ४ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर घर में,  
निरगुण माया तेरी ।

जिन किशनदास घर ही का घर में,  
भई महागत मेरी ॥ ५ ॥

पद [२]

सन्तो कीमत कही न जाई ।

वे कीमत वैरागी रामो,

जिसमें सुरत मिलई ॥ टेर ॥

वा हम नीच लूच भी नांही

ना मोटा ना मांदा -  
 ना हम मोम मोग भी नाही,  
 ना परपट ना खाना ॥ १  
 ना हम परख मयन भी मांहीं,  
 मांहीं मण्ड पसारा ।  
 मांहीं पांच तत्व गुण सीनु,  
 निर्गुण गुण से प्यारा ॥ २  
 ना हम दृष्टि—मुष्टि भी मांहीं,  
 रुप है न रूप न रेखा  
 चाप न ताप पाप पुण्य मांहीं,  
 अशा न शास अवेला ॥ ३  
 ना हम जन्म मरण भी मांहीं,  
 ना आना ना मोखा ।  
 'किरानदास' अविनव अविनाशी,  
 पाया ठीक ॥ ४

पद [३]

साधो हम किय मोंशर आया ।  
 अमरापुर स्थान हमारा पूरव लेख पठाया ॥टेरा॥  
 महा मलीन मलैच्छ मुल्क में,  
 जन्म हीन—घर जाया ।  
 आदि—अनादि अमर वर मेरा,  
 राम—नाम तत्व पाया ॥ १ ॥  
 भूला—भेक—जगत सब भूला,  
 भूला रङ्गरू राया ।  
 हिन्दू—तुर्क—उभय दल भूला,  
 अमर अङ्क विशराया ॥ २ ॥  
 षण्डित—जगत—वेद नित वाँचै,  
 मन माया—अलुभाया ।  
 निज पद छोड़ सिफत से लागा,  
 स्वप्ने -का सुख चाया ॥ ३ ॥

ना माटा ना मान्हा  
 ना हम सोम मोम भी मांही,  
 ना परघट ना धाना ॥  
 ना हम परख ममन मी मांहीं,  
 मांहीं मखड पसारा  
 मांहीं पांष तत्व गुख तीनु,  
 निर्गुख गुख से न्यारा ॥ १  
 ना हम दृष्टि—मुष्टि मी नांही,  
 नपु है न रूप न रेखा  
 नाप न ताप पोप पुष्य नांहीं,  
 अशा न बास अचेसा ॥ २  
 ना हम मम्म मरख मी मांहीं,  
 ना आना ना भाखा  
 'किशनदास' अविगत अविभाशी,  
 पाया ठीक ठिकार्या ॥ ३

ढेढ़ को ढेढ़ बखाणै ॥ ३ ॥

पर दारा रत ढेढ़,  
ढेढ़ परणी को त्यागै ॥

ढेढ़ सोवे दिन—रात,  
ढेढ़ जारी नहां जागै ॥ ४ ॥

गुरु द्रोही सो ढेढ़,  
ढेढ़ मत अपणा थापै ।

स्वांग सरावै ढेढ़,  
ढेढ़ वन्दगी उथापै ॥ ५ ॥

हरि विमुख सो ढेढ़ है,  
कहा रङ्ग कहा राव ।

राम भजन बिन 'किशनदास',  
सब ही ढेढ़ स्वभाव ॥ ६ ॥

उत्तमः—

उत्तम शील सन्तोष, उत्तम सत सुमिरण साचा ।



राम द्वेष अभिमान इर्ष्या,  
 आपा आप बन्धाया ॥ ४  
 कृष्णदास गुरुदेव दयाकर,  
 निम्न पद मोहिं पढाया ॥ १५

कवित—

हरि निमुस सो देह,  
 - देह सो करखी बूका ।  
 अमस मंसै सो देह,  
 देह कुकर्मा बूका ॥ १ ।  
 न्याये न बांखे देह,  
 देह मरमाद मिटावे ।  
 दया धर्म बिन । देह,  
 देह मत भक्ति न भावे ॥ २ ।  
 रस माजस्य सो देह,  
 देह गुण अपगुण मामै ।  
 देह करै ना टेक,

देढ़ को देढ़ बखाणै ॥ ३ ॥

पर दारा रत देढ़,

देढ़ परणी को त्यागै ॥

देढ़ सोवे दिन—रात,

देढ़ जारी नहां जागै ॥ ४ ॥

गुरु द्रोही सो देढ़,

देढ़ मत अपणा थापै ।

स्वाँग सरावै देढ़,

देढ़ बन्दगी उथापै ॥ ५ ॥

हरि विमुख सो देढ़ है,

कहा रङ्ग कहा राव ।

राम भजन बिन 'किशनदास',

सब ही देढ़ स्वभाव ॥ ६ ॥

उत्तमः—

उत्तम शील सन्तोष, उत्तम सत सुमिरण साचा ।

उत्तम कह हक नाम, उत्तम अमृत मुक्त-वाचा ॥१॥  
 उत्तम राम आराध, काम दल मञ्जन शूरा ।  
 उत्तम तत्व धीवार, ज्ञान अदय रत पुरा ॥२॥  
 उत्तम वे पीठ वान, उत्तम भर्माद न भेटे ।  
 उत्तम महीं आशुन्द, उत्तमअवगत पद भेटे ॥३॥  
 उत्तम गुरु गम पाय, उत्तम शिष सुनिरख जागा ।  
 उत्तम तलके मेरू, उत्तम पूरम घर पाया ॥ ४ ॥  
 उत्तम इन्द्रिय भीठ, उत्तम सो निरमल काया ।  
 उत्तम भैसा अदीव, उत्तम घट अघटा पाया ॥५॥  
 उत्तम चन्द सम मान, उत्तम है सब से ऊँचा ।  
 उत्तम न कामे छोट, उत्तम सब ही से सुखचा ॥६॥  
 उत्तम एक निज नाम, उत्तम सब ही को तारे ।  
 उत्तम सज्ज वे अङ्ग, आपकी शरख उबारै ॥ ७ ॥  
 'कृष्णानुशास' सब उत्तम है, समी प्रद के नीच ।  
 जिन में मन जो उत्तम है, हरुण्ड आराधे धीन ॥८॥

## अथ राम-रक्षाः—

शिष्य के शीश पर दस्त गुरु देव का,

रमै नव खण्ड सत—शब्द लीयां ।

देश—परदेश औ राज का तेज में,

मडा मशाण से नाहिं वीयां ।

दिष्ट मल मुष्ट, छल छिद्र लागै नहीं,

राम रिछपाल, घर गांव वारे ।

जाण वेजाण और नाटकी चेटकी,

विघ्न के सन्त बन नांहीं सारे ॥

भूत अरु प्रेत, डाकनी-साकनी,

देख निज सन्त को दूर भागै ।

राहु अरु केतु बल वीर यत्न अरु योगनी,

सन्त घर गांव बल नहीं लागै ।

शरण साधार आधार एक रामको,

शब्द सत्-सार विहुँ लोक निरमय ।

फिरै सम्त दीदार चाहते सर्व चौकियां,  
चौकियों तीन सेष चौबी बढ-धा ।  
ब्रह्म की न्योतिमें जाय पैठा,  
दास 'किशनों' कहै विप्र कुण बापदा,  
काज भम मोष परं हार पैठा ॥

॥ इति ॥

---

॥ श्री राम ॥

अथ लिव को अंग ।

नमो राम निर्वाण ब्रह्म,  
सद्गुरु सब ही सन्त ।  
' किशनदास ' कर जोड़ि कै,  
बन्दन बहुत करन्त ॥ १ ॥

किशनदास अन्तर लगी,  
लिव डोरी इकतार ।  
अकड़ी का सा तार व्युं,  
खण्डै नहीं लिगार ॥ २ ॥

अकड़ी तारज ऊपरै,  
मोला पड़ै अनेक ।  
' किशनदास ' लिव तार कूं,  
विघ्न न व्यापै एक ॥ ३ ॥

जैसे चित्र की पूतली,  
ठार रही इक ठौर ।

यूँ लिये जागी 'किशनदास',  
निशवाशर अरु मीर ॥४॥

लियेजागी आगी बशा,  
सन मन निश्चल होय ।

( जे ) हाथ पाँव चले सुर चले,  
तो लिये नहीं जागी कोय ॥५॥

'किशनदास' जन पारीसा,  
उन मुन ध्यान एकन्त ।

पढ़मा केरा चन्द स्यूँ,  
दिन—दिन कला पधन्त ॥६॥

बपठ—बपठ देखी पधी,  
स्यूँ बाबन को रन्त ।

वाँच पधी सु समिट के,  
आय चनी ब्रह्मवद ॥ ७ ॥

जागी लिये तो 'किशनदास',  
रही अस्यद्धत तोय ।

देह छूटै वाचा थकै,  
तोई लिव खण्डित नहीं होय ॥८॥

नगत गुरु जगदीश है,  
जहाँ रहै लिव लाय ।

पग—पथ नांही 'किशनदास',  
सुरत रहै घर जाय ॥ ९ ॥

सुरत निरत मन पवन गहै,  
मन वाचा अरु काय ।

इता एकठा 'किशनदास'  
तो लिव मारग जाय ॥१०॥

सुरत निरत को गायबो,  
चाणी बहु विध ताल ।

मनबो नाचे 'किशनदास'  
देखे दीन दयाल ॥ ११ ॥

दुनियां से दिल न मिलै,  
लिव लग रहे कोई सूर ।



यू सिप छागी 'किशनदास',

निशपाशर अरु भीर ॥४॥

सिपछागी आमी वशा,

तम मन निरपस होय ।

( जे ) हाय पाँच बस सुर बसे,

तो सिप नहीं छागी कोय ॥५॥

'किशनदास' मन पारीखा,

उन मुन ध्यान इकन्त ।

पढ़वा केरा बन्धु म्यू,

दिन—दिन कवा पपन्थ ॥६॥

बपठ—बपठ ऐसी वधी,

म्यू बावन को शब्द ।

पाँच पची सु समिट के,

भाय चडी मक्षयद ॥ ७ ॥

छामी सिप तो 'किशनदास',

रही अखयदत सोय ।

देह छूटै वाचा थकै,  
तोई लिव खण्डित नहीं होय ॥८॥

जगत गुरु जगदीश है,  
नहाँ रहै लिव लाय ।

पग—पथ नाहीं 'किशनदास',  
सुरत रहै घर जाय ॥ ९ ॥

सुरत निरत मन पवन गहै,  
मन वाचा अरु काय ।

इता एकठा 'किशनदास'  
तो लिव मारग जाय ॥१०॥

सुरत निरत को गायबो,  
वाणी बहु विध ताल ।

मनबो नाचे ' किशनदास '  
देखे दीन दयाल ॥ ११ ॥

दुनियां से दिल न मिलै,  
लिव लग रहे कोई सूर ।

पाँच पचीसों घेर करि,  
रहै सुरत को पुर ॥१२॥

सुरत ठार में 'किशनदास',  
पाँचू रहे सनाय ।

पट छूटे पिट ही पके,  
पण सिन मू की त्यो पाय ॥१३॥

सुरत साबठी 'किशनदास',  
प्रकटै पूरण माम ।

प्रेम प्रीठ समेह सों,  
रहै राम तिन लाय ॥१४॥

'किशनदास' तिन डोर सें,  
बाँचे पाषो भूठ ।

गूढ राम से ना बन्धे,  
सहम रहै अरघूठ ॥१५॥

एक मना बम मुन वशा,  
रहै राम तिन लाय ।

‘ किशनदास ’ करता के,

दर शरण दासज पाय ॥१६॥

पाँच पची सूँ राम रत,

गगन चढ़्या गुण जीत ।

‘ किशनदास ’ मन स्थिर थया,

नाका नाम अतीत ॥ १७ ॥

लिव की धाते ‘ किशनदास ’

कह्या न माने कोय ।

सो चौकस कर माँनसी,

जा उर बीती जोय ॥१८॥

स्वपने भागी अवस्था,

सूता सहज स्वभाव ।

लिव डोरी लागी रहै,

‘ किशनदास ’ उर आय ॥१९॥

( इति लिव का अङ्ग सम्पूर्ण )

## श्री सुन्दरदासजी पूजा—

॥ नमो यम गुरुदेव ज्ये भारती ॥

## चौपाई

भारती सुखभ्यो सिरमन हारा,  
 पलकन बिसरुं नाम तुम्हारा ।  
 सगुण सेवा ॐ कारा,  
 निरगुण नाम सकल विस्तारा ॥१॥  
 वेद किताब सुखे सब कोई,  
 राम भग्या बिन मुक्ति न होई ।  
 काया कथा पम पयाया,  
 गिगन मण्डन बिच मन मठ छाया ॥२॥  
 शकर शेष मिलाया सुख सागर,  
 हंसा हीर चुनि उष आगर ।  
 ध्रु प्रह्लाद सन्त सब आदू,  
 दात कपीर नाम देव दादू ॥३॥

सन्तदास जन प्रेम पठाया,

गुरु दरियाव शरण सुख आया ।

अनन्त सन्त जहाँ धरते ध्याना,

जहाँ 'सुखराम' किया विश्रामा ॥४॥

॥ इति आरती सम्पूर्ण ॥

## विरह को श्रद्धा —

अरेबा—निशदिम जोऊँ बाट, पीव पर आइये ।  
 चाहि तुम्हारी मोहि हरश दिख आइये ।  
 कैसे परिये धीर पीर है पीव की ।  
 हरि हौं ! बिन दरशन सुख राम कैसी मतगीम की ॥१०  
 तबफत रेख बिहाय, बिबश भाय तबफतवां ।  
 पीठ मई सब आयु विरहनी कल्पपतां ।  
 क्या न आवे तौय खबर नहीं लेव है ।  
 हरि हौं ! पूं विरहन सुखराम सम्बेशी वैत है ॥१०  
 आभी क्या बिचार सन्नोना क्यामधी ।  
 आया ही सुख होय सरे सब कामगी ।  
 बेरी अपछी भात दरश पिव दीनिये ।  
 हरि हां ! साध कहे सुखराम बिजम नहीं कीजिय ॥१०  
 राग रंग कृषि गांदि पाठ नहीं स्वावहीं ।  
 पाप्रक श्यु पित पाद, पीव कब आवहीं ।

दीजै दरश दयाल पीव मन—भावणा ।

हरि हाँ ! तलफत है सुखराम राम घर आवणा ॥४॥

जिस दिन विछड़े पीव, नहीं जख मोहिजी ।

दूभैर निश दिन जाय, दया नहीं तोयजी ।

अब तो आव दयाल अनथां नाथजी ।

हरि हाँ शरणागत ! सुखराम गहो पिव हाथजी ॥५॥

अथ विचार निशानी:—

छन्द गगर

सतगुरु शब्द सुरंग अब लागी,

सुमरण सोर विछाया है ॥

सिलग्पा सोर बलीडे लागा,

भ्रम कर्म जलाया है ।

सत गुरु कह्या सार मत हारे,

सुणरे ज्ञान गँवारा है ।

सतगुरु कहे राम भज रमता,



तो पढ़सी पो बारा है ॥१॥

रसना राम सुमर पद पूरा,  
 हृदय होत उजारा है ।  
 सोखइ कला सम्पूर्ण पन्दा,  
 माम कबल निस्तारा है ।  
 पीयठ प्रेम प्रास अब छकिया,  
 पर परा पढ़धा बिपारा ।  
 बाका मर्म कही कुसु भाये,  
 अमली क्यों आधारा है ॥२॥  
 कामी के मन काम बसत है,  
 ह्यु मन राम हमारा है ।  
 लोभी के मन लोभ बसत है,  
 भूखे भोजन प्यारा है ।  
 शरबे सन्त सबल के भाये,  
 अब डर नहीं जनाए है ।  
 पकड़धा पीब परम सुख बाता,

जाको वार न पारा है ॥३॥

कंचन काट कबू नहीं लागै,

सतगुरु मित्या सुनारा है ।

राम राम की रस चली अब,

मन मेरा बिणजारा है ।

गगन मण्डल में रस्त खुली जहाँ,

अमृत भरे अपारा है ।

सतगुरु शब्द लगी अब कूची,

खुल गया दशू दवारा है ॥४॥

राजा रंक एक रस बोले,

ऐसा काम करारा है ?

प्रगट प्राण रमे सुख सागर,

अनहद घुरे नगारा है ।

गगन मण्डल में वाजा बाजै,

लग्या शब्द भरणकारा है ।

दर्पण बिच भया ज्य दर्शना

वेसे वस्त्रण हारा है ॥५॥

पट्टिया सन्त कोई गुरु पूरा,  
तीन, लोक से न्यारा है ।

शशी अरु सुर अर्ध बिच ऊगा,  
ज्यां कोई तिमर न सारा है ।

गया ममुना मिली सरस्वती,  
तीनों बह इफधारा है ।

जहाँ स्नान किया मन मेर,  
मिठगया मैल हमारा है ॥६॥

अमृत गळ गमन में कुनि,  
खारे जग्या जपारा है ।

हूने दूध महारस मास्वण,  
पीव पीवन हारा है ।

बिच बिच बिच भीष बिच घेवन्न,  
बिन बिच प्राण हमारा है ।

ज्याँ 'सुखराम' कहत है सेवा,  
सनमुख सिरजन हारा है ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

अथ चतुरदासजी महाराज की संक्षिप्त गुरु महिमा

सतगुरु बन दरियाब पर,

भारूँ—नत—मन प्राण्य ।

पवित्र भीब पावन किया,

आदू आपसा गाँथ ॥१॥

आदू आपसा भाग,

आण मोहि दरशये लीया ।

बालक के मुख माँहि,

उल्ला मिशरी का दिया ॥२॥

मुख छोटा बड़ी पीम,

किसी बिष पाई नावै ।

पूसे मोनी रीत—भीन,

ताको रस आवै ॥ ३ ॥

बिधि रीत कैसे मखे,

महाँ—प्रेम प्रीति

सकल संभ्र साँह के सारे,  
ईको किसी विचार ॥ ४ ॥  
ईको किसी विचार,  
भार सब उनकी छाँने ।  
वै उलटा विड़द विचार,  
और सब सुलटा लाने ॥ ५ ॥  
साचा शिष्य दरियाव का,  
सब सुण लीज्यो कान ।  
कहूँ महिमा गुरु देव की,  
मेरा मुख उनमान ॥ ६ ॥  
सोही जन साचा जाणे,  
सत गुरु का शिष होय ।  
दूजी दूविधा वही जाणे,  
राग द्वेष दे धोय ॥ ७ ॥  
सुण महिमा गुरु देव की,  
दाजत दूजे सोय ।

सूरा सतुल राम सुं  
 स्या सतुल राम ॥ ८ ॥

मरु पश्ये हररे तद  
 दास काम के वाम म


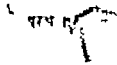
५१ राम हरु काश बनरा की,  
 मुद दरवा प दरवा ।

५२ दास हररगा  
 वापा वता पूरन ॥ ९ ॥

५३ राम मुद परना,  
 विर वना निर वाम ।

५४ राम काश दिवा निर गाम,  
 मुद ।

५५

श्री चतुर्दासजी महाराज की अनुभव गिरा राम २६५

---

दरिया में इमरत रस पीवै,

दरिया मांहि सभाणो ॥११॥

( इति संक्षिप्त—चतुर्दासजी महाराज की गुरु भक्ति )

---



॥ आरती ॥

चौपाई

ऐसी आरती राम तुम्हारी,  
 षरय शरय में सुरत हमारी ॥१॥

ज्ञान ध्यान का बाजा बाजे,  
 सुरत अनाहद अम्बर माजे ॥२॥

धुन बिच शहर सुध बाभारा,  
 गृह में काम रक्षा कनकारा ॥३॥

चन्द सूरज एकत्र पर व्रजे,  
 त्रिकुप्री मांही प्रक्ष विरामे ॥४॥

ईडा पियला राम उषारे,  
 सुसमख सेना पीव पषारे ॥५॥

मिल मिल उपोति प्रक्ष की जामी,  
 नुरा मरख अमका में भायी ॥६॥

जन 'हरका', गुरुदेव बताया,  
देव निरञ्जन देह में बताया ॥७॥

॥ इति ॥

## श्रुत करुणा का श्रेष्ठ ।

करुणा में मन पाइये,  
 पार ब्रह्म की भोग ।

करुणा में सुख उपजे,  
 हरि हृदय में सोज ॥ १ ॥

करुणा में मन मेट सी,  
 जगत पथ की पाल ।

करुणा ऐसी चीज है,  
 जम की करी निहाल ॥२॥

करुणा मित्रन सुराय का,  
 करुणा आप अलाह ।

करुण्य राम ,रहिम दिव,  
 मानों साष सलाह ॥ ३ ॥

बुरमठ में परमठ पटे,  
 करुणा में पर आप ।

करुणा में मन दीजिये,  
 जपिए हरिको जाप ॥ ४ ॥  
 करुणा से संकट मिटै,  
 करुणा में आनन्द ।  
 करुणा में सद्गुरु सदा,  
 काटे जम का फन्द ॥ ५ ॥  
 करुणा से साहव भजै,  
 करुणा आतम अङ्ग ।  
 करुणा प्रीति प्राण में,  
 कवहुँ न होय चित भंग ॥ ६ ॥  
 करुणा में विरहन लहै,  
 करुणा पावै प्रेम ।  
 करुणा में सोजी सदा,  
 करुणा नेहचल नेम ॥ ७ ॥  
 करुणा मे सब मल कटै,  
 करुणा दे दिल वीथ ।

## अथ करुणा का अङ्ग ।

करुणा में मन पाइये,  
पार धर की मौज ।

करुणा में सुख ऊपजे,  
हरि हृदय में सोज ॥ १ ॥

करुणा में मन मेट सी,  
जगत पथ की पाव ।

करुणा ऐसी चीम है,  
जग की करे निहाल ॥२॥

करुणा भिन्न सुदाय का,  
करुणा आप अलाह ।

करुण राम हरिम दिल,  
मानों साथ सजाह ॥ ३ ॥

धुरमत में परमत घटे,  
करुणा में पर आप ।

करुणा में मन दीजिये,  
जपिए हरिको जाप ॥ ४ ॥

करुणा से संकट मिटै,  
करुणा में आनन्द ।

करुणा में सद्गुरु सदा,  
काटे जम का फन्द ॥ ५ ॥

करुणा से साहब भजै,  
करुणा आतम अङ्ग ।

करुणा प्रीति प्राण में,  
कबहुँ न होय चित भंग ॥ ६ ॥

करुणा में विरहन लहै,  
करुणा पावै प्रेम ।

करुणा में सोजी सदा,  
करुणा नेहचल नेम ॥ ७ ॥

करुणा में सब मल कटै,  
करुणा दे दिल धोय ।

- करुणा में भरखा भरै,  
करुणा निरमल होय ॥ ८ ॥
- करुणा दीप न दीजिये,  
करुणा मोटी बात ।
- करुणा ब्रह्म, निज्ञाप में,  
रहता है दिन रात ॥ ९ ॥
- करुणा संजम सील है  
करुणा है तप दाम ।
- करुणा मारम मुक्ति की,  
करुणा केवल ज्ञान ॥ १० ॥
- ऐसी करुणा कीजिये,  
जामें निपटै माम ।
- दुखी करुणा हूब सी,  
जासी मम के माव ॥ ११ ॥
- करुणा से मन यूं जगै,

करुणा जोत प्रकाश ।

करुणा पलटै पँच तत,

करुणा-तृगुण नाश ॥ १२ ॥

करुणा से अनरथ तजै,

करुणा कर्म नशाय ।

करुणा में कृपा हुवै,

करुणा राम मिलाय ॥ १३ ॥

करुणा मे चेतन हुवै,

करुणा पलटै देह ।

करुणा जा घट रंचरे,

भागा भरम सनेह ॥ १४ ॥

करुणा है निज भक्त मे,

करुणा अवरन कोय ।

करुणा कीजै राम सूँ,

जिव का कारज होय ॥ १५ ॥

तनमें करुणा कीजिये,



जीने शरणा सोधि ।

करुणा में चित वीभिये,  
बाही जे मन मोद ॥ १६ ॥

करुणा प्यारी पीव कुं,  
करुणा करे निघार ।

करुणा देख निघात्र सी,  
रूपार प्रह मरतार ॥ १७ ॥

बाहर करुणा सब करे,  
भीतर करुणा मांहि ।

भीतर करुणा मो कर,  
सो मिलसी हार मांहि ॥ १८ ॥

राम भजे करुणा करे,  
सी करुणा है मून ।

राम मजे करुणा करे,  
निनकी मिटे न शून ॥ १९ ॥

करुणा कठिन मिटाय दे,

करदे कामल दास ।

करुणा विघ्न न संचरे,

करुणा काटे पास ॥ २० ॥

करुणा से भगवत भये,

करुणा से अवतार ।

करुणा से यूँ ऊधरे,

पाया हरि—दीदार ॥ २१ ॥

करुणा से प्रल्होदजी,

परतक रक्षा सथीर ।

करुणा से नामा लिभे,

करुणा दास कबीर ॥ २२ ॥

करुणा से दादू तिरै,

करुणा से रैदास ।

करुणा से दरियावजी,

किया ब्रह्म में वास ॥ २३ ॥

अब मुझ करुणा दीजिये,

सुण जो दीन दयाल ।  
 करुणा से हर को कहै,  
 भेटयो भरम अजाल ॥ २४ ॥  
 सब करुणा ससार की,  
 इष्ट भी मूठी थाल ।  
 हरि करुणा हरको कहै,  
 काट जम को जाल ॥ २५ ॥  
 हरि करुणा से हरि मिलै,  
 जग करुणा में जीष ।  
 कहै हरको हमको मिलै,  
 राम पियारा पीव ॥ २६ ॥

# अथ छन्द पचीसी सार

( १ )

गढ़—मढ़ महल अनेक,  
 जिणा घर बाजा वाजे ।  
 सब दुनिया पर हुकम,  
 तपत सिर आप विराजे ॥

चवर—छतर सिर फिरै,  
 करै कीरत जग सारा ।

माया—मुल्क अपार,  
 द्रव्य बहु भरे.....भण्डारा ॥

बड़े—बड़े—बड़ भूप,  
 नरां नर शीश निवावे ।

करै बहुत इदकार,  
 अनन्त आजीज्यां गावे ॥

अर्वं खर्वं दल जोड़ कर,

बहुता करे इमाम ।

पख सोष विचार करे,  
श्री हरको (वीर) रामबिना वेकाम ॥

( २ )

कंचन बरखी वेह,  
स्वरूप सुन्दर मुक्त सोहे ।

उत्तम कुल बड़ माम,  
देख सब ही मन मोहे ॥

श्रंग पोपाखा पूर,  
बाम—बगायत साभि ।

खान—पाम महराम  
सबन सिर मोर विराने ॥

हीरा जड अबाहर,  
कान कुपडस मल मोठी ॥

पना पेश : सोदठ,

सुजस संसार सुहाती ॥  
क्रिया कर्म सब दान,  
कर सभी गुणां को धाम ।  
पण सोच विचार, कहे यूँ,  
हरखो राम विना वेकाम ।

( ३ )

मिन्दर वर्या अनूप,  
खूब सुन्दर फिर गोखा ।  
लगे जाय असमान,  
भवर यह अजब जरोखा ॥  
जाजम दुलीचा सेज,  
सङ्ग सुन्दर सुख नारी ।  
महा मोहनी रूप,  
स्वरूप सब में इदकारी ॥  
वहु मेवा मिष्ठान्न,  
थाल कञ्चन पधरावै ।  
मनसा भोजन भोग,

ममत् सुख सबही पावै ॥

जग विनास ऐसो बरयो,  
स्वर्गादिक विघ्नमऽ ।

पण सोच विचार कहै यू,  
हरको राम बिना वेकाम ॥

( ४ )

जातौ परती परा,  
हीर नङ रतन जमानै ।  
पर दर चिथे संभार,  
सर्व चितराबख धावै ॥

काम धेनु फल नृस,  
पौत्र पारश का द्वारै ।  
मम ऐरावत राम,  
इन्दर ब्यू सोमा सारै ।

इदक अफसरा अमब नार,

नाना विधि गावै ।

गंधर्व गुण विस्तार,  
सुनत सबही सुख पावै ॥

सुख विशेष केलाश सम,  
पुनः वैकुण्ठां धाम ।

पण सोच विचार कहै यूँ,  
हरको राम विना वेकाम ॥

( ५ )

हाथां परवत तोल,  
समुद्र जल सब भर पीवै ॥

अनन्त जोधा बलवन्त,  
बहुत दिन जग मे जीवै ॥

शूर वीर सामन्त,  
सिंह ज्यूँ गहरा गाजै ॥

एक छत्र हवै राज,



स्वम की शोभा छानि ।

द्वज बादल के बीच,  
भीर नर पड़त न पावा ॥

सार साँच मसार,  
मिथोअै मनसा बावा " " ।

वीर पुरुष रथ में खड़े,  
करै युठ संग्राम ।

विद्य साँच विचार करै,  
अन हरको राम विना बेकाम ॥

( ६ )

उच्चम उच्चम से उच्चम,  
ऊँच से ऊँच कहनि ।

नाना विधि आचार,  
धारणा सभी निभावे ॥

शुद्ध प्रात स्नान,

सभी अंग मंजन करिहैं ।

बिन धोवे घर द्वार,  
पांव धरती नहीं धरिहैं ॥

आप स्वयं ही जाय,  
नीर डोली भर लावै ।

अपरस लेत <sup>है</sup> अहार,  
और की करी न खावै ।

पला समट नर नीसरै,  
छिवे न मृतक जाय ।

पिण सोच विचार कहै,  
जन हरको राम विना वेकाम ॥

(७)

करै यज्ञ अश्वमेध,  
नरपति सुर सबै जिमावै ।

तुला दान गज ग्रहण,

द्वार कन्या परशुवि ॥

क म मंरु सुमेरु,  
दाम कर मुक्ति विषारै ।

मोम दान मिष्टान्न,  
विधि वत् विघ्न निवारै ॥

कामधेनु मखि—दान,  
पुस्य पुनि करे सदाई ।

बिन्ता मखि कल मुस,  
दान कीन्हीं हपकाई ।

धौर धर्म विधियुत करै,  
नित उठ यही काम ॥

पय सीष विषार कहै,  
यू हरसो राम बिना बेकाम ॥

( ८ )

बीभी नुगत विषार,

पहर वाघम्वर डौले ।

घर आसन अवधूत,  
बोल धीमे स्वर बोलै ।

यस्ती वसे न वास,  
जगत की धरे न भ्रांसी ।

आबू गढ़ गिगनारै,  
करै जंगल में वासा ॥

मूल द्वार दृढ़ चाप,  
प्राण मस्तक में लावे ।

ध्रुव मण्डल लग देह,  
योग अष्टाङ्ग समावे ।

धोला केश न संचरै,  
सदा केश सिर स्याम ॥

पिण सोच विचार कहै,  
यूं हरखो राम विना बेकाम ॥

( ६ )

मारी ब्यू गिर मेर,  
घरख ब्यूं धीरम ठाँसै ।

सागर मिसा समाय,  
बाठ बुद्ध, बुद्ध की माँसै ।

सूरम ब्यूं ता वेन,  
चन्द उ्यू सम सीवज काया ।

निरमलता भिमि नीर,  
.. .. .. !

गुण माढ़ा में नरक,  
वर्क सब शास्त्र विपारे ।

जव सव मठ प्रनीय,  
सदा नर सुमता धारे ॥

मम प्रत्यक्ष सब बस क्रिया,  
ऐसो पुरुष अमान ।

विद्य सोप विपार करै यूँ,

हर को राम विना बेकाम ॥

( १० )

एक कर्म करै अनेक,  
बेष नाना विधि धारै ।

एक लोच सिर करै,  
एक सिर एजटा बधारै ।

एक लूण रस तजै,  
एक मन मान्यां खावै ।

एक सजै बहु स्वांग,  
एक लै कान फड़ावै ।

एक डिगम्बर रहै,  
एक संटक सह सारै ॥

एक विरक्त वैराग्य,  
एक बहु करै पसारै ।

अजरी बजरी स्वांग धरै,

भजे नहीं निज नाम ॥

पिया सोच विचार कहे,

यूं हरको राम बिना बकाम ॥

( ११ )

एक ~~रहे~~ एकन्त,

एक पर संभ पलावे ।

एक रहे पर माहिं,

एक बन की ठठ जावे ।

एक जीवत तन भटे,

एक भासन बहु सामि ।

एक सेवे आकार,

एक वैतीस आरापे ।

एक पड़े गिरीमरु,

एक पाताझा पूमे ।

एक कहे सतबेख,

एक आगम की सूत्रै ।

एक गुटका संग लै उडै,  
बडे सिद्ध जो नाम ।

पिण्ण सोच विचार कहै,  
यूं हर, को राम विना बेकाम

( १२ )

राम नाम तत सार,  
सर्व ग्रन्थन में गायो ।

सन्त अनन्त पिछाण,  
राम ही राम सरायो ॥

वेद पुराण उपनिषद्,  
कह्यो गीता में ओही ।

ब्रह्मा, विष्णु महेश,  
राम नित ध्यावै सोही ॥

ध्रु, प्रह्लाद कबीर,  
नामदे आदि प्रमाणी ।



सनकादिक मारद,  
शेष भोगेश्वर सारा भाखी ॥  
सो सद्गुरु प्रताप तें,  
कियो ग्रन्थ—विस्तार ।  
मज हरका तिहूँ लोक में,  
राम नाम तत्सार ॥

## श्री नानगदासजी कृत—

॥ श्री राम सद्गुरुदेवजी की आरती ॥

### चौपाई

करमन आरती राम निवाजै,

गगन भण्डल में धुन अनहद वाजै ॥१॥

प्रथम पूज गुरां का पाया,

दीन दयाल दया कर आया ॥२॥

रसना भजन हृदयहरि वासा,

नाभि कँवल निज नाद प्रकाशा ॥३॥

मनका पुहुप भाव की पूजा,

अलख निरंजन और न दूजा ॥४॥

ईड़ा, पिगला, सुपमन मेला,

पांचू पुरुष त्रिकुटी मेला ॥५॥

सुरत निरत में जाय समानै,  
जम 'लानगदास' आरती माये ॥६॥

॥ इति ॥

## अथ श्री नानकदासजी महाराजकी गुरुमहिमा । साखी—

नमो नमो गुरुदेवजी, नमो नमो श्री राम ।  
जन 'नानक' की वीनती, चरण कँवल विश्राम ॥

### छन्द—

दाता गुरु दरियाव सही गुरु देव हमारा ।

राम—राम सुमिराय पतित को पार उतारा ॥

राम नाम सुमिरण दिया,

दिया भगत हरि भाव ।

आठ प्रहर विसरो मती,

यूँ कह गुरु दरियाव ॥१॥

### चौपाई

किशनदास का कारन सारथा ।

शब्द अनाह्व पार उवाच्या ।

सुखी रामकी साची सेना,

वरया माही निर्मन देया ॥ १ ॥

बन पूरख सत पूरा व्याया,

राम राम कहि ब्रह्म समाया ।

जूगर सी का डर सप मेट्या,

राम राम कहि साहिब मेट्या ॥ २ ॥

### दोहा

शिष्य सारा सुमिरख करै,

सुमिरे ब्रह्म अगाध ।

मृत्यु लोक महिमा पखी,

धन्य साहिब का साध ॥ १ ॥

मित्र उखां का निरमत्ता,

सुद्धि बुद्धि सकल शरीर ॥ २ ॥

बन मानक के सिर तपै,

दरिया दास कवीर ॥२॥

दरिया दास कवीर है,  
ब्रह्म तेज प्रकाश ।

पण्डरपुर नामो वसे,  
कवीर काशी वास ॥३॥

जन दादू आमेरपुर,  
राहण दरिया दास ।

राहण नगर काशी पुरी,  
जहाँ सतगुरुजी का वास ॥४॥

आनन्द रूप दयालजी,  
सद्गुरु दरिया साह ।

नर क्यू चूके नानगा,  
राम भजन की राह ॥५॥

चौपाई

गुरु विन ज्ञान ध्यान नहीं होई,

गुरु बिन पार न पहुँचे कोई ।

गुरु बिन भक्ति मुक्ति नहीं पावे,

गुरु बिन शीघ्र अमति में आवै ॥१॥

गुरु बिन भ्रम परत नहीं छूटा,

गुरु बिन आनखेन घन सूटा ॥

गुरु बिन नाम नहीं प्रकाशे,

गुरु बिन भक्ति प्रीति नहीं भावै ॥२॥

गुरु बिन ज्ञान ऊपजै नाही,

गुरु बिन ज्ञान प्रकासे नाही ॥२॥

॥ दोह्र ॥

तन मन अरपय करत हूँ,

परय कमल की आश ।

मन नानक के सिर तपै,

दाता दरिया दास ॥६॥

## ॥ चोपाई ॥

(मनरे) ! सतगुरु आण वताया गेला,

उघड्या अंक पुरवला पहला ॥१॥

राम नाम सत सुमिरन लागा,

मन का भरम दूर तव भागा ॥२॥

सिमरो राम निरंजन राया,

परम पुरुष गुरु देव वताया ॥३॥

राम नाम सत सुमिरन जाने,

मन पवना घर एकै आनै ॥४॥

परशान प्रेम पियाला पीवे,

राम राम भज साधू जीवे ॥५॥

चरण गुरा का निशदिन परसै,

राम नाम सत सुमिरन दरशै ॥६॥

सद्गुरु शब्द साच कर झाले,

सहज सहज मन मारग चलै ॥७॥



॥ दोहा ॥

राम नाम सुमिरन करै,  
 राम मिशन की चाय ।  
 मन मानग गुरुदेव को,  
 निश दिन शीश मनाय ॥७॥

॥ चौपाई ॥

अनम मरन रोम है मोटा,  
 सत गुरु बिना ज्ञान सब खोटा ॥१॥  
 गुरु बिन ज्ञान कहाँ से सुकै,  
 गुरु बिन भरम्या पाधर पूकै ॥२॥  
 गुरु बिन नीब अगत अधिकारी,  
 गुरु बिन मक्ति मिले न प्यारी ॥३॥  
 गुरु बिन पार वद्व कौन पावै,  
 गुरु बिन नीब अगति में आवै ॥४॥

- गुरु विन वेद शासतर बाँचे,  
गुरु विन पंडित भूठ अर्राँचे ॥५॥
- गुरु विन तीरथ व्रत फिर आवे,  
गुरु विन ठीक ठोड़ नहीं पावै ॥६॥
- गुरु विन होम यज्ञ बहु थापै,  
गुरु विन किया कर्म कुण कापै ॥७॥
- गुरु विन भरम्या, भरम दढ़ावै,  
गुरु विन ध्यान सभी विसरावै ॥८॥
- गुरु विन ज्ञान हीन ज्युँ बोले,  
गुरु विन दसों द्वार कौन खोले ॥९॥
- गुरु विन साध सिद्ध नहीं होई,  
गुरु विन कीमत लखै न कोई ॥१०॥
- गुरु विन क्या गृहस्थ, क्या त्यागी,  
गुरु विन लाय घो घर लागी ॥११॥
- गुरु विन ध्यान जुगत कुण माणे,

गुरु विन ज्ञान कहीं से नाथे ॥१२

गुरु विन सिद्धि कहीं से आवै,

गुरु विन पार कौन पहुँचानै ॥१३॥

गुरु विन भटक भेप बहु धारे,

गुरु विन पार कौन उतारे ॥१४॥

गुरु विन जीव वहाँ से जागे,

गुरु विन सब सुमिरख कुण खागे ॥१५॥

गुरु विन पारब्रह्म कुण पेसे,

गुरु विन वेदद कैसे वसे ॥१६॥

गुरु विन पाँच तरफ कुण पावे,

गुरु विन त्रिकुटी कौन समानै ॥१७॥

गुरु विन कुण निम नाद वगावे,

गुरु विन अगम धेश कुण आवै ॥१८॥

गुरु विन ज्ञान ऊपजे नाहीं,

गुरु से ज्ञान प्रकाशे माहीं ॥१९॥

## दोहा

गुरु महिमा नाँग कहै, पारब्रह्म को दास ।  
आठ पहर निरंजन रता, एक ब्रह्म की आश ॥८॥  
दरिया पन्थी आइया, राम नाम सिर तास ।  
गुरु मुख साच संहालिया, यू कहै नानकदास ॥९॥

॥ इति गुरु महिमा का अङ्ग सम्पूर्ण ॥



अथ टेम जी महाराज कृत—

श्री सद्गुरुदेवजी की धारती

नमो नमो गुरु देव को, सद्गुरु सखी सन्त ।  
जन टेमदास मन्वन करे, नमो, निरंजन कल्प ॥१॥

आरति राम मुरी की कीजे

धुरति क्षमाय दरश सुख लीजे ॥ २ ॥

सद्गुरु शब्द दिया ठह सारा

वाते छूटा जगत पसारा ॥ २ ॥

मिट गया भ्रम भया ठगियाला ।

सहज भी सुक्या मुक्ति का तासा ॥३॥

बार बार से धुरता क्षामी ।

दिलकी काई सखी मागी ॥ ४ ॥

हृदय मांहीं प्रक्षका बाशा,

कोटि मानू का भया प्रकाशा ॥५॥

सैनक स्वामी एकहु रोई ।

‘टेम’ न दरशै हूजा कोई ॥ ६ ॥

। इति ॥

अथ अर्माँ धार्इजी कृत श्री सद्गुरु महिमा ।

साखी—

ममो—नमो परमात्मा,  
नमो अब्रस अमेव ।

ममो—नमो सब सम्त को,  
नमो—नमो गुरु देव ॥ १ ॥

नमो—नमो गुरु देव को,  
नमो शिखोकी नाथ ।

अन अर्माँ कर बन्दना,  
कर मोड़ नमाऊँ माथ ॥२॥

नमो नमो अमदीश को,  
सकल सुधारन काम ।

अन अर्माँ प्रखाम कर,  
निश—दिन सुमिऊँ राम ॥३॥

गुरु पारप गुरु परमपन,

गुरु हीरां की खान ।  
गुरु चिन्तामणि रतन है,  
गुरु—कल्प वृक्ष समान ॥४॥  
गुरु समुद्र गुरु नाव है,  
गुरु ही खेवन हार ।  
करम तर्णों बहु भार तें,  
गुरु उतारे पार ॥ ५ ॥  
सद्गुरु का गुण अनन्त है,  
कहा लग कहिया जाय ।  
मेरा तन की मोचड़ी,  
कहूँ गुरां के पाय ॥ ६ ॥  
कंचन मेरु सुमेरु गुरु,  
गुरु सम दूजा नांय ।  
गुरु सम दाता कोउ नहीं,  
तीन लोक के मांय ॥७॥  
मुख छोटा महिमा घणी,



क्या न आव पार ।

अर्वा डूबत काटिया,  
जमत मोह की धार ॥८॥

हरिया मन हरियाव है,  
टेम समुद्र में सीप ।

मोती निपने सीप में,  
नाम असपडत दीप ॥९॥

हरिया मान सरोवर,  
टेम सु ईसा जान ।

राम नाम मोती चुगे,  
और अहारन तान ॥ १० ॥

टेम रतन की पारखा,  
कीन्ही मन हरियाव ।

यह तो रतन अमोल है,  
जीना मुंमे माव ॥ ११ ॥

टेम हेम भा सोझवां,

कंचन कनक स्वरूप ।

जन दरिया परताप से,

परश्या ब्रह्म अनूप ॥ १२ ॥

टेमज चन्दन वावना,

में थी आक पलास ।

कृपा कर गुरु संग खिची,

जब हम मेदी वाश ॥ १२ ॥

हम हैं फाल्यो लोह को,

करम कीट अरु काग ।

गुरु पदवी दी हंसकी,

जाग्या मेरा भाग ॥ १४ ॥

गुप्त रह्या जन टेमजी,

ज्यु मक्की का धान ।

दुनिया भूली भरम सुं,

ऊपर छिणगा मान ॥ १५ ॥

पारस केरी टाल सम,

अर्मा डूबत कछा न आवे पार ।  
 दरिया जम दरियाव है, चमत मोह की धार ॥८॥  
 मोती निपने टेम समुंद्र में सीप ।  
 दरिया मान सरोवर, नाम अस्वच्छत दीप ॥९॥  
 राम नाम मोती चुगे, टेम सु हंसा मान ।  
 टेम रतन की पारस्ता, और अहारन साम ॥ १० ॥  
 मद तो रतन अमोल है, कीन्ही जन दरियाव ।  
 टेम देम या लीमा मूंगे भाव ॥ ११ ॥  
 सोलवां,

कंचन कनक स्वरूप ।

जन दरिया परताप से,

परश्या ब्रह्म अनूप ॥ १२ ॥

टेमज चन्दन वावना,

मैं थी आक पत्तास ।

कृपा कर गुरु संग लिवी,

जब हम मेदी वाश ॥ १२ ॥

हम हैं फाल्यो लोह को,

करम कीट अरु काग ।

गुरु पदवी दी हंसकी,

जाग्या मेरा भाग ॥ १४ ॥

गुप्त रखा जन टेमजी,

ज्यूं मक्की का धान ।

दुनिया भूली भरम से,

ऊपर छिणगा मान ॥ १५ ॥

पारस केरी टाल सम,

दीरघ था मम टेम ।

सो मण सोदा परश कर,

सबही होयना टेम ॥ १६ ॥

सीषाशम मेरे शीश का,

भूरत है गुरु देव ।

भरम सूझाना जीव को,

राम नाम दियो मेव ॥ १७ ॥

अखरुह रूप गुरु देवजी,

खरुह रूप ओ जीव ।

अमृत ले मुख में दियो,

राम नाम निज पीम ॥ १८ ॥

सद्गुरु का मुख फहा कहुँ,

कह्या न आवै अन्त ।

तीन लोक दीसे नहीं,

टेम सरीखा का सन्त ॥ १९ ॥

अमृत यँ आक पर,

पलटै अंग स्वभाव ।

अर्भां पदवी आमकी,  
दी टेम और दरियावें ॥२०॥

मैं मूरख मति हीन थी,  
नही समझ लव लेश ।

गुरु पूरा मिला टेमजी,  
दियो भक्ति उपदेश ॥२१॥

राज रीति में गरक थी,  
नही दास की रीत ।

पर उपकारी गुरु मिल्या ।  
कीन्ही साची प्रीत ॥२२॥

यां गुरां के दरश की,  
मैं बलिहारी जाय ।

साचा सद्गुरु टेमजी,  
राखी चरण लगाय ॥२३॥

जन ' अर्भां ' की वीनती,

॥ आरती ॥

॥ चौपाई ॥

इस विधि वेद की आरती कीमि ।

तन मन अरप बरा पित दिजो ॥ टेरे

मन माला सेवा सत गुरु की ।

कीन्हा तपत मिटै सब तन की ॥ १ ॥

धूप कर ध्यान, मन कर अंगारा ।

पित का चन्दन, तिलक गंभीरा ॥ २ ॥

मालर—सुरत शब्द—कर—डंका ।

बामि भीद, लंघे—गढ़—थंका ॥ ३ ॥

सुपमन—सीर शंखो—दक धामि ।

धाम की—पयटा गमन मे बामि ॥४॥

पौच कर बावी पुष्य चद्राऊ ।

दास 'अर्मा' मित्र हरि गुण्य माऊं ॥५॥

॥ इति—आरती—सम्पूर्ण ॥

पद ( मंगल )

सुराज्यो सिरजन हार,  
दीन होय कहत हूँ ।

पूरन ब्रह्म निधान,  
शरण में रहत हूँ ॥ १ ॥

पालो-पोखो आप,  
तात तुम मात जी ।

मस्तक राखो-हाथ,  
निरंजन नाथ जी ॥ २ ॥

विरद तुम्हारो आद,  
लज्या है आपने ।

छोरूँ होय कपूत,  
शरम है बापने ॥

सुरत निरत मन ल्याय,  
ध्यान धुन ध्याइये ।



शरणे राखी सुणों मन्त गुरुदेव ।  
 मन 'अमां' आपके, कुरु चरण की सेव ॥२४॥  
 भरम अघेरा गुरु देव का, रति जैसो—प्रकाश ।  
 मन 'अमां' जीव का, किया तिमिर का नाश ॥२५॥  
 कियो उजालो गुरु देवजी, रति जैसो परकाश ।  
 मन 'अमां' हान को, आयो मन निश्वास ॥२६॥  
 अमृत अस्तबिद्ध गुरु देवजी, शशि क्यों शीतल होय ।  
 मन 'अमां' मर रहा, बलिदारी गुरु होय ॥ २७ ॥

इन्द्र ज्युँ वूठा आय ।  
 तपत अंगारा जीवका,  
 दीना सभी बुझाय ॥२८॥  
 जन 'अर्माँ' गुरु देव की ।  
 महिमा करुँ बखाण ।  
 भरभ करम की नींद से,  
 सद्गुरु दीन्ही जगाण ॥२९॥  
 जन 'अर्माँ'-गुरु देव की ।  
 में बलिहारी जाय ।  
 घणा दिना की भूलथी,  
 राखी चरण लगाय ॥३०॥  
 जन 'अर्माँ' सद्गुरु मिल्या,  
 परशन हो गयो मन्न ।  
 बलिहारी गुरु टेमकी,  
 तपत बुझाई तन्न ॥३१॥

॥ इति सद्गुरु—महिमा—सम्पूर्ण ।

॥ आरती ॥

॥ चौपाई ॥

इस विधि देव की आरती कीमि ।

तन मन अरप परग पित दिमो ॥ टेरे

मन माना सेवा सत गुरु की ।

कीन्हा तपत मिटे सब तन की ॥ १ ॥

घुप कर ध्यान, मन कर अमारा ।

पित का पन्दन, तिलक गंभीरा ॥ २ ॥

मालर-सुरत शब्द-कर-डंका ।

बाहि नीद, लंघे-गढ़-धंका ॥ ३ ॥

सुपमन-सीर शंखो-वक छागि ।

हान की-पसटा मगन मे बाहि ॥४॥

पौष कर बावी पुष्य पढ़ाऊ ।

दास 'अर्मा' मित हरि मुस्य नाऊ ॥५॥

॥ इति-आरती-सम्पूर्ण ॥

## पद ( मंगल )

सुणज्यो सिरजन हार,  
 दीन होय कहत हूँ ।  
 पूरन ब्रह्म निधान,  
 शरण में रहत हूँ ॥ १ ॥  
 पालो-पोखो आप,  
 तात तुम मात जी ।  
 मस्तक राखो-हाथ,  
 निरंजन नाथ जी ॥ २ ॥  
 विरद तुम्हारी आद,  
 लज्या है आपने ।  
 छोळूँ होय कपूत,  
 शरम है वापने ॥  
 सुरत निरत मन ल्याय,  
 ध्यान धुन घ्याइये ।



कर सतगुरुजी का संग,  
 याद कर पीवने ॥ टेक ॥  
 चूक्यो अवकी वेर,  
 पाछे पिछताव सी ।  
 मिनख जनम नर देह,  
 बहुरी कत्र पावसी ॥२॥  
 सुतबोनता के हेत,  
 पचो दिन रातरे ।  
 जम जोरावर तार,  
 करे नित घातरे ॥ ३ ॥  
 मोह रह्यो लपटाय,  
 लोभ वश पड़ गया ।  
 जोड़या पाँच पचीस,  
 अठे घर गाडिया ॥४॥  
 तरो संगी नांय,  
 स्वारथी लोग है ।

पुण सन्ता की सीख,  
 मजन कर जोग है ॥५॥  
 जुरा पहुँची आय,  
 नीर नैना करे ।  
 या तन की नर आश,  
 अजू नही पर हरे ॥६॥  
 सन्त कश्यो समझाय,  
 ज्ञान हृदय भरो ।  
 मन 'अर्मा' भज राम,  
 धुर्मती परिहरो ॥७॥

## अथ शिष्य सम्प्रदायः—

श्री श्री वार—वार, एक सौ रु आठ वार ।  
 प्रगट रेण भये, सन्त दरियाव जी ॥ १ ॥  
 सूरज प्रकाश भयो, किरणाँ आभापथयो ।  
 वहत्तर (७२) शिष्य भये, प्रत्यक्ष निज भावजी ॥ २ ॥  
 जाँके अब नाम गांव, प्रकट वताळं ठाम ।  
 भिन्न—भिन्न याँके सब, जानत ज नामजी ॥ ३ ॥  
 चार ही वर्ण में, भक्त भय हरण में ।  
 काज सब करण में, निर्भय नामजी ॥ ४ ॥

## नामावलीः—

विजैराम            नेमीराम,  
                          तीसरे            जैचन्द राम ।  
 श्री चन्द,            लिखमेस,

पनः            हरमवा . गम ३ ।



असोमी, सुशालीराम,  
 उरमन मरानीराम ।  
 दस ये गुरु—भाई,  
 नागीर की धाम है ॥१॥  
 टाँकला में कृष्णदेव,  
 सायत सिण्डी मये ।  
 देवा दास मूँडवा में,  
 रोज अस्सीराम है ।  
 सुस्वराम फर्ताराम,  
 भेडते मशहूर नाम ।  
 सन्तोष, स्वरूपराम,  
 ईदये के गाव है ॥२॥  
 मगगाय मये नम,  
 खेडी के भागीरदार ।  
 दीडवाणे साल चन्द्र,

	सीताराम	टेमजी	॥
उदैराम	आकासर,		
	रामाचन्द	चांपासर	।
बनवारो	उरेड़चन्द,		
	गह्यो	दृढ़	नेम जी ॥३॥
जादूराम	हरादेव,		
	अमीराम		मनसाराम ।
मोदाणी	ये सांजूं माच,		
	सन्त	श्रेष्ठ	खेमजी ॥
वीकारो	गुलावदास,		
	मया	राम	ताके पास ।
दरियाव	गुरु	देव,	
	दादा	गुरु प्रेम	जी ॥४॥
ठाकुरसी	जी	कनीराम,	
	कुचेरे	मकान	कीन्हो ।
हरसोर	में	देवराम,	

स्वियाजी सो भजू में ॥  
 रामलोट देवादास,  
 भिर्याराम नूणियास ।

अगुराम, गंगाराम,  
 जोषपुर सञ्जु में ॥५॥

फोशोदास भंमल्लजू,  
 आबलीमें राग रहै ।

धन्नाराम सुङ्गीमाव,  
 गुरुदेव रजू में ।

भगवानदास जु,  
 परतापराय पास रहै ।

कहै राम राम स्वास,  
 पास भनू में ॥ ६ ॥

धुंदास मधु जाख,  
 हूंगर सी जी निरप माख ।

प्रमानन्द, हिरामन्द,

रहत सत्संग में ।  
 पूरण नानक पास,  
 नेतसी गुलाबी दास ।  
 कृपाराम बगतराम,  
 देवीचन्द रंग में ॥७॥  
 समन कुशालीराम,  
 हंसाराम मोतीराम ।  
 सतरे ये सन्तजन,  
 रेण के संग में ।  
 मदली पठाण खान,  
 दिल्ली को दिवान जाण ।  
 भयो भाव नीके सन्त,  
 पानीपत जंग में ॥ ८ ॥  
 सरदाराम हरी किशन,  
 वृताटी निवाश कियो ।  
 निवडी नवल राम,

मगत अक्षम है ।

मयपुर हजारी मल,  
साभर में सिरेमल ।

विशम किशनगड,  
वैष्णव सदम है ॥ ६ ॥

बाला, चेना, जहा, जामा,  
अमुना किस्तूरा माना ।

मकतुजा पन्ना पार्श्व,  
सेवठ अक्षम है ।

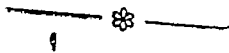
पहधर गुरु भाई,  
संम जाफ नव बाह ।

धईराम समा मीहि  
स्तुलै इयूं पक्षम है ॥ १० ॥

इति शिष्य-शास्त्र सम्पत् ॥

अथ दूसरा परिच्छेद ।

(राम नाम



श्री राममंत्र राजस्य माहात्म्य निरिभ्रांति ।

शान्ति भगवत्प्रसन्नं कल्याणकलोप ॥ पृष्ठमसहिता

मैं अपार कस्यथा सिन्धु अनादि-अनन्त, परात्पर पर  
 म्या-स्वरूप राम की बल्यथा परफं कपना अस्त करण एवं  
 वाचासे पवित्र करने के लिए, वह अपार सत्-सिद्ध-मानन्द मन  
 परम प्रभु से अदा -अभिल्ल स्वरूप राम नाम विषयक  
 यथा राज्य सप्रमाय कुञ्ज महिमा वर्धन करने के लिए प्रेरित  
 हुआ है। यह प्रेरण बसो प्रभु की है और यही अपनी शक्ति देकर  
 महिमा वर्धन करवाता है मैं तो उसके हाथ का शिष्यता मात्र  
 है। उत्तरी इच्छा हो तो चाहे जिससे चाहे तो करवा  
 सकता है।

अब शुद्धता विचारणीय विषय यह सम्मुख प्रस्तुत है  
 कि राम नाम की महिमा अपार है और उक्त यथा  
 वर्णन करने में शंभु, शारदा, नारद मुनिन्द्र योगिन्द्र एव,  
 वेद-शास्त्र भी असमर्थ है नहीं करते यथा नेत्रि-नेत्रि  
 उक्त मध्य मुक्त जैसे साधारण जीव द्वारा अस् (राम) अ

यथार्थ वर्णन कैसे हो सकता है । अतः इसका यथार्थ वर्णन ही ही नहीं सकता क्योंकि नाम और नामी अभेद होने से अनादि अनन्त हैं, वर्णनातीत हैं एवं अनिर्वचनीय हैं । परन्तु मैं तो केवल—

**स्वान्तः सुखाय'**

इस सिद्धान्तानुसार निम्न पक्तियों में श्री राम-नाम विषयक ( वास्तविक प्रशंसात्मक ) अनेक आर्ष ग्रन्थों एवं प्रसिद्ध भगवत् प्राप्त सत्पुरुषों के प्रमाण उद्धृत किये जाते हैं, सो राम-नाम प्रेम परावण भावुक भक्त, आशा हैं, अवश्य ही तर्क रहित होकर राम-नाम-उपासना में रुचि वृद्धि के अर्थ पढ़ कर, समझ कर और राम नाम तत्व की धारण करके अपना यथार्थ हित साधन कर सकेंगे ।

राम-नाम स्वतः स्वयं सिद्ध है, इस परम तत्व को कोई दूसरा भला कैसे सिद्ध कर सकता है, विचार पूर्वक देखने से प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है कि जिस बुद्धि से जो कुछ निश्चय किया जाता है, वह निश्चय करने वाली विवेकशीला चेतना उसकी अपनी अविनाश शक्ति है ।

अतः सभी शास्त्रों एवं मन्तों का अन्तिम निर्णय



पही है कि—

‘ वेद पुराण सन्त मत एहु,  
सकल सुकृति फल राम सनेहु ।

सब कर मत समनायक पहा,  
करिये राम पद पंकज निहा ॥’

इसप्रकार समस्त रूपेण बेशादि पुराणतम ग्रन्थों के  
आपस पूर्णक (मिमा प्रमायों के संबन्धों पर) पाठक  
बुद्ध ध्यान हैं—

विचारणीय निपय—

राम एव परं ब्रह्म राम एव परंतप ।

राम एव परं तत्त्वं श्री रामो ब्रह्म तारकम् ॥

अर्थ—

राम ही परब्रह्म है, राम ही परंतप है, राम ही परं  
तत्त्वं और राम ही तारक ब्रह्म है ।

ऊपर के श्लोक में श्री रामजी के दूसरे नाम आये हैं

परब्रह्म, परंतप, परंतत्त्व और तारक ब्रह्म । अतः अनेक शास्त्रों में जिस जिस जगह परब्रह्म, परतप, परंतत्त्व और ब्रह्म ये नाम और इन नामों की महिमा आई है उन सब वो रामजी की ही महिमा जाननी चाहिए, क्योंकि ऊपर के श्लोक में स्पष्ट वर्णन कर दिया गया है कि जाहे राम शब्द आवे चाहे परब्रह्म, परंतप परंतत्त्व और ब्रह्म आए एक ही बात है । इस पर भी शंका रह जाय तो सत् पुरुषों की सत्संग करके समाधान प्राप्त कर सकते हैं ।

अब राम नाम की और रामनाम के नामी राम जी की जिन जिन शास्त्रों में यथा शक्य महिमा देखी गयी है, सो नीचे लिखी जाती है । श्रीमद्भवद्गीता में रामजी की महिमा—इस प्रकार है और यहाँ परम् नाम से संकेत किया गया है । तीन लोक को बीज है 'र' रो म 'मो' दोय अक्षर यह वचन श्री अनन्त दरियाव महाराज के हैं कि 'र' और 'म' तीन लोक का बीज है, सो 'परम' शब्द में 'र' और 'म' दोनों हैं ही-

परमाप्नोति ( अ० ३।१६। )

पही है कि—

‘ वेद पुराण सन्त मत एहु,  
सकल सुकृति फल राम सनेहु ।

सष कर मत स्वमनायक एहा,  
करिये राम पद पंकज नेहा ॥’

इसलिये समस्त रूपेण वेदादि पृथक्पृथक् ग्रन्थों के  
आदर पूर्वक (निम्न प्रमाणों के संकलनों प्र.) पाठक  
बुन्द ध्यात हैं—

विचारणीय विषय—

राम एव परं ब्रह्म राम एव परंतप ।

राम एव परं सर्वं श्री रामो ब्रह्म तारकम् ॥

अर्थ—

राम ही परब्रह्म है, राम ही परंतप है, राम ही परं  
सर्व और राम ही तारक ब्रह्म है।

ऊपर के श्लोक में श्री रामजी के इस्तरे नाम आये हैं

आदि रहित परं ब्रह्म ।

‘ परमं यान्ति ’ १३।३४

परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं ।

‘ परं- वेत्ति ’ १४।१६

परब्रह्म को जानते हैं ।

इन सब सूत्रों का पूरा अर्थ श्रीमद्भगवद्गीता में देवना चाहें वे देख सकते हैं। यहाँ भ्रपका का कोई प्रसङ्ग नहीं है। ‘ यद्यपि प्रभू के नाम अनेक, सकल अयिक एकै एका । ’ है

‘ पर तत्त्व, राम जी ही हैं। राम जी सब से परे हैं ही । अतः नाम भेद से वस्तु भेद नहीं होता ।

अथ, आगे अनेक ग्रन्थों के प्रबल प्रमाण देखिये और मनन पूर्वक पढ़िये ।

॥ मन्त्र में ॥

श्री भगवान् की पवित्र वाणीरूप जो वेद है, उसके दो भाग हैं—मन्त्र और ब्राह्मण । ऋगादि चार संहिताएँ मन्त्र

परमात्मा को प्राप्त होता है ।

‘ परम्—दृष्ट्वा । २ । ५६ )

परमात्मा को मात्वात्कार करके निवृत्त हो जाता है ।

‘ पर भाषम् । ७ । २४ ।

‘ परम मानको अर्थात् अन्तर्मा भाष को ।

‘ परं पुरुषं । ८ । १० ।

परम पुरुष परमात्मा को ।

‘ परं ब्रह्म ’ १० । १२ ।

‘ अक्षरं परम वेदितव्यं । ११—१८ ।

जानने योग्य पर अक्षर ।

‘ परं निधानम् ’ ११ । ३८ ।

परम आश्रय ।

‘ अनादिमत—परम्—ब्रह्म ’ १३ । १२ ।

आदि रहित परं ब्रह्म ।

‘ परमं यान्ति ’ १३।३४

परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं ।

‘ परं- वेत्ति ’ १४।१६

परब्रह्म को जानते हैं ।

इन सब सूत्रों का पूरा अर्थ श्रीमद्भगवद्गीता में देखना चाहें वे देख सकते हैं। यहाँ भ्रमका का कोई प्रसङ्ग नहीं है। ‘ यद्यपि प्रभू के नाम अनेका, सकल अधिक एकते एका । ” है

‘ परं तत्त्व, राम जी ही हैं । राम जी सब से परे हैं ही । अतः नाम भेद से वस्तु भेद नहीं होता ।

अब आगे अनेक ग्रन्थों के प्रबल प्रमाण देखिये और मनन पूर्वक पढ़िये ।

## ॥ मन्त्र में ॥

श्री भगवान् की पवित्र वाणीरूप जो वेद है, उसके दो भाग हैं—मन्त्र और ब्राह्मण । ऋगादि चार संहिताएँ मन्त्र

भाग के मन्त्र हैं और तममें अथास्पात परंत्तक का प्रति  
पादन सुन्दर—सुन्दर वचनों में हुआ है। दिग्दर्शनार्थ—

‘वेदाहमेतं पुरुषं महाम्ब्रमादिस्त्वर्षं तमस परस्तात्’

(यजुर्वेद)

इसमें स्पष्ट ही तम महापुरुष और तमम् अथात् प्रकृति  
से परे बताया गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद के मासदीय सूक्त  
में कहा गया है कि—

मासदासीधो सदासीत्तदानीं

मासीद्रजो नी व्योमापरो यत ।

आनीदधातं स्वधया तदेकं

तस्माद्दान्यघ्नापर किंचनास ॥

अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में प्रकृति के दोना रूप-अथ  
और आरम्भ नहीं के समागम (नेष वा इवम्भो अस्मासीत्  
सेव सदासीत् शतपथ १०५।३)। तम समय वही एक परंत्तक  
पक्ष मौखिक पक्ष के बिना ही केवल अपनी शक्ति से जीवित  
था, उससे परे और कुछ नहीं था ।

## ब्राह्मण भाग में—

मन्त्र भाग के व्याख्यान स्वरूप ऐतरेय, शतपथ, षड्विंश, गोपथ आदि ग्रन्थ वेद के ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत हैं। इनमें परतत्त्व का वर्णन मन्त्रभाग की अपेक्षा अधिक विस्तार से हुआ है।

परतत्त्व का नारायण नाम वैदिक साहित्य में सर्व प्रथम ब्राह्मण भाग में ही मिलता है। पुरुष सूक्त का व्याख्यान करते हुए शतपथ ने कहा है—

पुरुषो ह नारायणो अकामयत अतितिष्ठेयं सर्वाणि भूतानि ।

अर्थात् नारायण पुरुष ने यह इच्छा की कि मैं सब भूतों को प्रकृतिसंबद्ध जीवों को—अतिक्रमण करके, अर्थात् उससे परे हूँ। परतत्त्व की इस अतिस्थिति के कारण उसकी श्रेष्ठता निःविशय है

वस्मादाहुर्विष्णुर्देवानां श्रेष्ठः ।

## आरण्यक में

ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञविधान के साथ—साथ ज्ञान और भक्ति का भी समावेश है। ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के प्रतिपादक अंश का स्वाध्याय—प्रवचन वीतराग महात्मा बहुधा अरण्य में (वन में) किया करते थे। इससे उस अंश का नाम आरण्यक पड़ा। आरण्यक ग्रन्थों में भी स्थूल-स्थूल पर परतत्त्व का वर्णन प्राक्जल भाषा में किया गया है। दिग्दर्शनार्थ—



‘ विरज पर आकाशादम आत्मा महान् प्रुव ,  
( बृहदारण्यक ४.४।१० )

इस वचन में परमात्मा का अश्रम्य परस, रजस अनाठ, प्रकृति से अवरण्ण और प्रससे परे बता कर—

‘ सर्वस्य वशी सर्वस्येशान सर्वस्याधिपति ,  
( बृहदारण्यक ४.४।११ )

इस वचन में उस समस्त विश्व का प्रनु शासक और मियामक बताया गया है।

उपनिषद् में—

ब्राह्मण भाग के उपासना-प्रतिपादक ग्रन्थों को उपनिषद् कहते हैं। इन्होंने तो परतन्त्र की इतनी बधा की है कि प्रवीत होने लगता है कि ये बसी के उपासक हैं और अपनी स्वबाधालिषों द्वारा बसी की सतत उवात्मा में मिरठ है। दिन्शानार्थ—

‘ पतद्व्येवासरं परम , ( कठ० १।२।१६ )  
वशी अधिमाटी परतन्त्र है ।

‘ एतदालम्बनं परम् ’ ( कठ० १। २। १७ )

यह ही सर्वोत्तम आलम्बन है।

‘ अक्षरं ब्रह्म यत् परम् ’ ( कठ० १। २। ३ )

अविनाशी ब्रह्म परतत्त्व है।

‘ अक्षरात् परतः परः ’ ( मुण्डक २। १। ४ )

प्रकृति से परे जीव से भी वह परे है।

‘ परात्परं पुरुषैति दिव्यम् ’ मुण्डक ३। २। ८ )

ज्ञानी व्यक्ति परात्पर पुरुष का सामीप्य पाता है।

‘ ब्रह्मविदाप्नोति परम् ’ ( तैत्तिरीय० २। १। १ )

ब्रह्मवेत्ता व्यक्ति परतत्त्व को प्राप्त करता है।

‘ यस्मात्परं नापरमस्मि किञ्चित् ’ ( श्वेताश्वतर० ३। ६ )

उससे परे और कुछ नहीं है।

‘ तत्त्वं नारायणः परम् ’ ( नारायणोपनिषद् )

नारायण ही परतत्त्व है।

रामायण में—

जिस रामायण के लिये यह सूक्ति प्रचलित है कि—

वेदवेद्ये परे पुंसि आते दशरथात्मने ।

वेद प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥

अर्थात् दशरथ भवन में वेदग्रन्थ परमपुरुष के अवतीर्ण होने पर वेद भी ऋषि पास्वीकि के द्वारा रामायण रूप से प्रकट हुआ था। वही रामायण में परतन्त्र का सम्यक निरूपण हुआ है। इस आदिश्र-म्य के सम्यक राम स्वयं भगवान् विष्णु ही हैं। इतने आदी मध्य अन्त से यह सीध है कि परतन्त्र श्री विष्णु ने ही राम रूप धारण किया था। विन्दरानार्थ —

‘ मवाक्षारायणो वेद ’ ( ६।११७ )

‘ स्वमोक्षार. परात्पर ’ ( ६।११७ )

इस वचनों में ऋषेय सृष्टि करते हुए करते हैं कि हे राम आप मातृव्य हैं, प्रकृत्वह्य हैं और परात्पर हैं ।

इसी प्रकार अप्यारामरामायण के अथोप्या कारण में यह तथा है कि ऋषि अत्रि ने श्रीराम को परतन्त्र मातृव्य बाल कर कनकी विधिपूर्वक पूजा की—

भुत्वा रामस्य वचने रामं शास्वा हरिं परम् ।

## स्मृति में—

साधारण धर्म, विशेष धर्म, वर्णाश्रम धर्म, आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त आदि विषयों पर प्रचुर प्रकाश डालने वाले धर्म-ग्रन्थों को स्मृति कहते हैं। यद्यपि सामान्य रूप से श्रुति-तर सभी ग्रन्थों को स्मृति कहते हैं तथापि विशेष रूप से—

‘ मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोङ्गिराः ’

( याज्ञवल्क्यस्मृति १।१।४ )

इत्यादि वचन के अनुसार मन्त्रादि महर्षियों द्वारा प्रणीत धर्म ग्रन्थ स्मृति रूप में व्यवहृत होते हैं। इनमें यथा-स्थान परतत्त्व का स्मरण किया गया है। उदहरणार्थ मनु-स्मृति का एक वचन है--

प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणीयसाम् ।

रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम् ॥ (१२।१२२)

अर्थात् समस्त जीव—निकाय के शासक, अणुस्वरूप जीवों से भी अधिक अणु, सुवर्णोपम वर्णविशिष्ट, निर्मल बुद्धि द्वारा प्राप्य पुरुष को परतत्त्व समझना चाहिए ।

## ब्रह्म सूत्र में—

अत्यन्त विस्तृत उपनिषद्—ब्रह्मणा वा एक मन्त्रेण महति ब्रह्मव्यासजी न प्रस्तुत किया था जिसका नाम ब्रह्म सूत्र है इस सूत्र ब्रह्म में ब्रह्म के नाम से रामजी का ही ब्युत्पत्ति है कई सूत्र ऐसे हैं जिनमें 'परं—शब्द का भी सामान्य प्रयोग है। जैसे

‘ परास्तु तच्छुभे ’ ( २।३।४१ )

ब्रह्म सूत्र में एक पराधिकार्या नामक स्वतंत्र अधिकांश है जिसमें मुक्ति पूर्वक यह सिद्धान्त स्थापित किया गया है कि ब्रह्म से परे और कुछ नहीं है।

## महा भारत में—

महामात—नामक व्याप्तकृत ब्रह्म अर्थवत् प्रसिद्ध है इसमें रयान—रयान पर परवत्सव की महिमा गायी गयी है बराबरकथ—

एष प्रकृतिरव्यक्ता कर्त्ता देव सनातन ।

परश्च सर्वभूतेभ्यस्तस्मात् पूज्यतमो हरिः ॥

समापर्व ३२४)

अर्थात् श्री भगवान् अवाङ्मतसगोचर मूल कारण हैं, जगत के सनातन कर्त्ता हैं और सभस्य भूतों से परे हैं, इससे वे पूज्यतम हैं। एव—

नीलोत्पलदलश्याम पद्मगर्भारुणेक्षण ।

पीताम्बरपरीधान लसत्कोस्तुभभूषण ॥

त्वमादिरन्तो भूतानां त्वमेव च परायणम् ।

परात्परतरं ज्योतिर्विश्वात्मा विश्वतोमुखः ॥ (वनपर्व)

हे नील कमल के समान वर्ण वाले, अरविन्द के अन्तःस्तल के समान अरुणाभ नयनधाले, पीताम्बर धारी, कौस्तुभविभूषित भगवान् । आप प्राणियों के उत्पादक और विनाशक हैं। आप में ही उनकी स्थिति है। आप इस विश्व की अन्तरात्मा हैं। आप सर्वव्यापक हैं, प्रकाश स्वरूप हैं और परात्पर हैं। इसी प्रकार—

अपि देवा न जानन्ति गुह्यमाद्यं गजुत्पत्तिम् ।

नारायणं परं देवं परमात्मानमीश्वरम् ॥  
 ज्ञानयोनिं हरिं विष्णुं मुमुक्षुषां परायणम्  
 परं पुराणं पुरुषं पुराणानां परं च यत् ॥ (ब्रह्मसंहिता)

अर्थात् वैश्वदेव भी परतत्त्व नारायण की नहीं जानते हैं, जो कि गुण भाव जगत्पति परमात्मा ईश्वर, येशो के रूपविता हरि, विष्णु विरचयगर्भोदि पूर्ण पुरुषों के भी पूज्य और सब से परे हैं ।

### पुराण में—

सर्ग प्रतिसर्ग, बंश सम्बन्ध और बंशानुचरित का प्रतिपादन करने वाले पुराण का नाम पुराण है । पहले व्यासजी ने एक पुराण संहिता बनायी थी—

पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थविशारदः ।

(विष्णु पुराण भा. १. १५)

इसी के आधार पर आम्बान्ध पुराण—संहिताएँ तथा सप्त विरचित हुईं जो महापुराण और उपपुराण के नाम से प्रसिद्ध हुईं । पञ्च पुराण आदि अठारह पुराण हैं, जिनमें भी

सद्भागवत मुकुटमणि है। इस सभी पुराणों में परंत्व के वैभव का वर्णन है। व्यासजी हाथ उठाकर धारम्भार घोषणा कर रहे हैं कि—

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुजमुत्थाप्य चोच्यते ।

न वेदान्तात् परं शास्त्रं न देवः केशवात् परः ॥

अर्थात् वेदान्ता से बढ़ कर कोई शास्त्र नहीं और भगवान् केशव से परे और कोई देव नहीं है।

विष्णु पुराण का वचन है—

त्वामाराध्य परं ब्रह्म याता मुक्तिं मुमुक्षवः ।

वासुदेवमनाराध्य को मोक्षं समवाप्नुयात् ॥ (१।४।१८)

अर्थात् हे भगवान् ! मुक्ति को कामना करने वाले अनेक जीवों ने परब्रह्म आपकी आराधना करके मुक्ति को प्राप्त कर लिया वासुदेव की आराधना किये बिना मोक्ष को कौन प्राप्त कर सकता है ?

आगम में—



आगम का अर्थ है ज्ञान प्राप्त कराने वाला। आगमयतीति आगम'। पाञ्चरात्र तन्त्र ये सब आगम (वैष्णव आगम) के पर्याय हैं। श्री विष्णुपासकों का—भागवतों का प्राचीन वैष्णव साहित्य पाञ्चरात्र शास्त्र कहलाता है, जिसकी श्रेष्ठ संहिताएँ १ सात्वतसंहिता २ जवास्वसंहिता और पौष्कर संहिता रामत्रय कहलाती हैं। समय पाकर पौराणिक साहित्य के समस्त पाञ्चरात्र साहित्य का भी अधिकधिक बिल्लार हुआ। इसकी १०८ संहिताएँ मानी जाती हैं। यद्यपि इससे भी अधिक संहिताओं की नामावली आजकल मिलती है।

पाञ्चरात्र में परंत्सव का येनच पुन पुन विचार पूर्वक समुप-  
बर्णित है। विम्बशान्तम्—

(अ) 'परमेतत् समाख्यातम्' (सात्वतसंहिता १।२६)

(आ) 'वासुदेवा पर प्रमु' (सात्वतसंहिता ३।५)

(इ) अप्रमेयमर्जं विष्णु शरत्वं त्वां गतोऽस्म्यहम् ।

गुह्यातीतं पर शान्तमग्मनामं सुरेश्वरम् ॥ (मद्य तन्त्र)

अर्थात् मद्य का नाम परं है। वासुदेव प्रमु हैं परंत्सव हैं।  
ये श्री विष्णु नामक परंत्सव की शरत्क व्याया हूँ जो अप्रमेय

हैं, त्रिगुणातीत हैं, शान्त हैं, सुरेश्वर हैं और जिनकी नाभि से ब्रह्मावास कमल का प्रादुर्भाव हुआ था ।

## आचार्यों की रचना में—

आचार्यों ने परंतत्त्व श्री भगवान् के प्रति अपनी स्तया-  
 खलियां समर्पित कर अपना सपर्याभाव प्रदर्शित किया है ।  
 उदाहरणार्थ—

दिव्यधुनिगकरन्दे परिमलपरिशोगसच्चिदानन्दे ।

श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥ (शंकराचार्य)

अर्थात् मैं श्रीमन्नारायण के उन चरणारविन्दों को प्रणाम करता हूँ जिनका मकरन्द गंगाजी है, सत् चित्, आनन्द की जिनमें से सुगन्ध निम्नल रही है और जो संसार के समस्त भय और खेद का शमन करने वाले हैं ।

अखिलभुवनजन्मस्थेमभङ्गादिलीले

विनतविविधभूतव्रातरक्षकदीप्ते ।

श्रुतिशिरसि विदीप्ते ब्रह्मणि श्रीनिवासे

भवतु मम परस्मिन् शेमुपी भक्तिरूपा ॥ (रामानुजाचार्य)

अर्थात् श्रीराम के लिए निश्चित प्रार्थनाओं का जप विना और जप करने वाले शरणागत भक्तों की रक्षा में निरंतर ब्रह्मपरिष्कार उपनिषदों में प्रतिपादित, श्री निवास परब्रह्म में भेटी भक्ति हो ।

स्वभावतोऽपपास्तसमस्तदोष,

द्यूहाङ्गिर्न ब्रह्म परं परेण्यं

ध्यायेम कृप्यं कमलोत्सर्गं हरिम् ॥

(निम्बार्काचार्य)

अर्थात् निश्चित-हेय-मत्स्थनीक, समस्त कर्तव्य गुणाङ्ग द्यूहाङ्गी बरणीय, कमलमय, हरि, परब्रह्म श्री कृप्य व हम सब ध्याय करें ।

अन्तः करण्य मद्रूप्यं सावधानतया श्रुत्वा ।

कृप्यात् परं नास्तैर्न-स्तु दोषविवर्धितम् ॥

(वज्रनाथार्य)

अर्थात् हे मेरे हृदय ! सावधान होकर सुन ले । श्री कृप्य से परे कोई भी निर्दोष विषय वस्तु (तत्त्व) नहीं है ।

## संतवाणी में—

सत्त्वगुण ही जिनका विभूषण है, ऐसे महामत्ता संत महात्माओं ने परंत्व की स्तुति, ध्यान, भजन करके अपना जन्म सकल बनाया है। ऐसे महात्मा भारत के सभी प्रान्तों में हुए हैं। दक्षिण में आल्वारों ने समय समय पर प्रकट हो कर परंत्व पूजा की धारा को निर्मल और अजुष्ट बनाये रखने का स्तुत्य प्रयत्न किया था। अपनी पवित्र, प्रेममयी वाणी से उन्होंने भारत भूमि को भावुकता से आप्लावित कर दिया था। उनके वचनों में आकर्षण था। वे प्रेमोन्मादमन्डिर थे। उनके नाम हैं विष्णु चित्त, गोदा, सरोयोगी - भूतयोगी, महायोगी, मुनिवाहन, भक्ताद्विरेणु, भक्तिभार, कुलशेखर, मधुर, शठशोप और परवाल। दिग्दर्शनार्थ कुलशेखर विरचित सुकुन्दमाला का एक श्लोक दिया जाता है।

चिन्तयामि हरिमेव सन्ततं, मन्दमन्द होसताननाम्बुजम् ।  
नन्दगोपतनयं परात्परं, नारदादिमुनिवृन्दवन्दितम् ॥

परं पूज्य पुराणों एवं अन्य ग्रन्थों में राम-नाम की अत्यन्त मधुर महिमा देखिये—

श्लोक—

भ्रह्म विभ्र मनुष्पाणां,  
 धरिभ्रमिदमद्भुतं ।  
 रामेति मुक्तिं नाम,  
 न स्मरन्ति दुराशया ॥ १ ॥  
 बहू नास्ति धर्मोऽश्वपोऽपि,  
 भोतुमस्यन्त सुन्दरम् ।  
 तथापि रामनामेति,  
 न स्मरन्ति दुरासया ॥ २ ॥  
 अस्यन्त दुःख क्षम्यापि,  
 मुक्तिमगति मानवैः ।  
 क्षम्यते राम मान्मैव,  
 कर्मास्ति किमथः परम् ॥ ३ ॥  
 दाव विष्ठास्ति पावानि,  
 देहेषु देहिनां द्विम ।

रामेति नाम यावद्वै,  
न स्मरन्ति सुखप्रदम् ॥ ४ ॥

मृत्यु काले द्विज श्रेष्ठ,  
सर्वा शुभनिवारणम् ।  
कामदं मोक्षदं चैव,  
स्मर्तव्यं सततं बुधैः ॥ ५ ॥

नामेति नाम विप्रर्षे,  
यस्मिन्न स्मर्यते क्षणे ६  
क्षणः स एव व्यर्थः स्यात्,  
सत्यमेतन्मयोच्यते ॥ ६ ॥

राम नामामृतस्याद भेदज्ञा,  
रसना च या ।  
तन्नाम रसने त्याहु-  
मुनयस्तत्त्वदर्शितः ॥ ७ ॥

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं,  
सत्यमेतन्मयोच्यते ।

स्मरन्तो

रामनामानि,

नाबसीदन्ति मानवा ॥ ८ ॥

मन्म कोटी दुरित क्षयनिष्कृ

सम्पद् च विपुला भुवि मर्त्य ।

रामनाम मन्तत द्विज भक्त्या

माक्षयि मधुरं स्मरतुस्म ॥

अर्थ

महो ! कुछ मनुष्यों के चरित्र जैसे अनूठ हैं जो वे मुक्ति के लिये राम नाम का स्मरण नहीं करते । राम नाम देने में भी कुछ नहीं होना सुनने में भी अत्यन्त सुन्दर है जो भी कुछ मनुष्य उसका स्मरण नहीं करते । जगत में मनुष्यों के लिए मुक्ति अत्यन्त ही दुर्लभ है, परन्तु राम नाम से वह भी सिद्ध होना है फिर इससे वह कर मनुष्य के लिए और क्या कष्ट उप होगा ? मनुष्यों के शरीर में पाप अभी तक रहते हैं, जब तक कि वह सुखों के देने वाले राम नाम का स्मरण नहीं करते । हे द्विज भोक्तृ निर्दिश ! मनुष्य समय जो मनुष्य राम नाम का स्मरण करता

है, वह महान् पापात्मा होने पर भी मोक्ष को प्राप्त करता है।  
हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! राम नाम समस्त अशुभों का निवारण करने  
वाला, कामनापूर्ण करने वाला और मोक्ष देने वाला है; बुद्धि-  
मानों को सदा राम नाम स्मरण करना चाहिए।

मैं सत्य कहता हूँ—जिस समय में मनुष्य राम नाम स्मरण  
नहीं करता, वही समय व्यर्थ जाता। जो रचना (जीम) राम  
नाम रूपी अमृत के स्वाद को जानती है, तत्त्वज्ञानी मुनि उसी  
जीम को रसना कहते हैं। मैं बार बार सत्य कहता हूँ कि राम  
नाम स्मरण करने वाला मनुष्य कभी दुःख को प्राप्त नहीं होता।  
जो करोड़ों जन्मों के समग्रित पापों का नाश और भ्रसार में  
महान् सम्पत्ति चाहते हैं, उन्हें भक्ति पूर्वक निरन्तर श्री राम नाम  
स्मरण करना चाहिए।

पद्मपुराण ।

ब्राह्मणः श्वपचीं भुञ्जन् विशेषेण रजस्वताम ।

अश्नाति सुरया पक्वं मरणे राम मुच्चरन् ॥

मुच्यते पात का तस्मान्नात्र कार्य्या विचारणा ।

( नारदीय पुराण )



‘यदि म्यद्यत्तु बोद्धर श्री वापञ्चाल कन्या च विरोधत रजस्वला  
 व्यवस्था में भी संसर्ग करने वाला हो और मदिश के साथ पक्ष  
 हुआ मोक्षन फल्य हो तो भी वह मरुत काल में राम नाम का  
 उच्चारण कर हम पाप से मुक्त हो जाता है, इसमें विचार करने  
 की कोई आवश्यकता नहीं ।’

( नारद पुराण )

सकृदुच्चरितं येन, रामरित्यक्षर द्रुपम् ।

पठ्यः मरिकर स्तन मोक्षाय गमनं प्रति ॥

( श्री स्कन्ध पुराण ) .

“जिसने ‘राम’ इस शो अक्षरों का एक बार भी उच्चारण  
 किया है उसने मानो मोक्ष को और जाने क किय कम्प कस  
 की है ।’

( श्री स्कन्ध पुराण )

प्यायेद्द्वारार्थं दुर्गं, स्नानादियु च कर्मसु ।

प्रायश्चित्तं हि सर्वम्य बुद्धवस्येति वैभुति ॥ १

( श्री गरुड पुराण १२३०१८ )

“स्नानादि शुभ कर्मों को करते हुए श्री नारायणदेव ‘राम’ का ध्यान करना चाहिए। यह राम स्मरण ही सम्पूर्ण दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त है, इस विषय में श्रुति भी सहायक है।”

संसार सर्प सन्दष्ट नष्ट चेष्टैक भेषजम् ।

रामेति वैष्णवं मंत्रं श्रुत्वा मुक्तो भवेन्नर ॥

( लिङ्ग पुराण २।७।११ )

“संसार सर्पद्वारा डूसे जाने से निश्चेष्ट हुए पुरुष के लिए एक मात्र ‘राम’ इस मन्त्र को सुनकर मनुष्य मुक्त हो जाता है।”

यन्नाम कीर्तनं भक्त्या, विलापनमनुत्तमम् ।

मैत्रेया शेष पापानां, धातूनामिव पावकः ॥

( श्री विष्णु पुराण ६।१।२० )

“हे मैत्रेय ! सुवर्ण आदि धातुओं को जिस प्रकार अग्नि पिछला देता है, उसी प्रकार जिसका भक्ति युक्ति नाम सकीर्तन ( राम स्मरण ) सम्पूर्ण पापों का अत्युत्तम नाश करने वाला ( उपाय ) है।”

रामेति ह्युत्तरं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते ।

भस्मी भयन्ति तस्याशु महा पातकराशय ।

अथ

राम यह दो अक्षर जिसकी जिह्वा पर बर्ते रहे हैं। जबकि पापों की राशि ( डेर ) भस्मी नूत हो जाती है।

नाम्नोस्ति यावती शक्ति पाप निहरये हरे ।

तावत् कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी मर ॥

न तावत्पापमस्तीह, यावद्ग्राम हरे चरे ।

व्यतिरेक भयादाहुः प्रायश्चित्तन्तरं युष ॥

( शान्ति पर्व-भारत )

‘ भगवान् के नाम उच्चारण में पाप नाशनी शक्ति का ब्रिहती बल होता है, अतएव शरीर से किये हुए पाप का मूल नहीं। अहाइरण अज्ञानिता आदि हैं ।’

राम रामेति रामेति रामे रामे मनोरमे ।

सहस्रनाम तुष्टुर्न्य राम नाम वरामने ॥ १

‘राम नाम की महिमा माछतीय कर्बरी में देखिये

उममें लिखा है कि हे राम ! आपने उना पुरुषार्थ नहीं किया, जितना कि आपके नामने ।

त्वन्मन्त्र जापको येस्तु त्वामेव शरणं गतः ।

निर्वृद्धो निःस्पृहस्तस्य हृदयं ते सुमन्दिरम् ॥

(अ० रा० वाल्मीकिजी अ स. ६, ५६.)

अर्थात् हे राम ! जो आपके 'राम नाम' मन्त्र का स्मरण करता है । आपकी ही शरणमें रहता है दुःख हीन और नीस्पृह उसका हृदय आपका मन्दी है ।

राम रामेति रामेति रामेति च पुनर्जपन् ।

स चाण्डालोऽपि पूतात्मा, जायते नात्र संशयः ॥

( पद्म पुगण ) ७२।२०।२६

राम राम राम राम इस प्रकार बार-बार स्मरण करने वाला मनुष्य यदि चाण्डाल हो तोभी वह पवित्रत्मा है । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है ।

अब श्लोकार्थ देने से विस्तार हो जायगा । अतः निम्न पंक्ति यों में केवल श्लोक दिये जाते हैं —

सप्रकृतेर्धभिरग्निर्वित्तिष्ठिन

रुशङ्खिर्गिरमिराममस्यात् ।

अथ रामं वृष्णवत् शस्त्रं तम अभ्यस्यत् सायं इ म  
काक्षे अभिमूय विप्रति इति वशाप्ये सायणाया (विद्यारण्यवस्वामी)  
( अष्टवद ) १८१३

माखपत्यपु शेषेपु शाक्त सौरेणभीष्टम् ।

वैष्णवेणपि मंत्रेषु राम मंत्र कलापिक ॥१॥  
( भी ह्वरीर्व पञ्चात्र )

शतकोट शो महाम प्रा, उप मंत्राप्रारूपोदय ।

एक एव महामन्त्रो, राम नाम परात्परम् ॥  
( शिववंच )

मण्यपत्यादि सौराश्व हरि शेष शिव शिवा ।

तेषां प्राखो महा मन्त्रो, रामेति पाण्डुरद्रयम् ॥ १ ॥

मण्येशे भास्करे चैव शिवे शक्तो इरावपि ।

राममंत्र प्रमावेण्य सामर्थ्यं आयते प्रुदम् ॥ २ ॥  
( माखान संहिता )

विना शक्तिं कथं कार्यं किं कर्तव्येन वा बलम् ।

तदाकाशद्भवेद्वाणी रामनाम हृदं कुरु ॥ १ ॥

तदा संसरति विश्वं लयं यान्ति मुमुक्षुभिः

तरमाद्राय महामंत्र आदि मंत्र उदाहृतः ॥ २ ॥

( जैमिनि )

श्री रामेति परं मंत्रं तदेव परमं पदम् ।

तदेव तारकं विद्धि जन्म मृत्युमयापहम् ॥

( हिरण्यगर्भ संहिता )

श्री रामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकम् ।

ब्रह्म हत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो ऽवदुः ॥

( सनत्कुमारसंहिता )

यथा घटश्च कलशः पदार्थस्याभिधायकः ।

तथैव ब्रह्मरामश्च नूनमेकार्थं तत्परः ॥

( अगस्त्य संहिता )

रमन्ते योगिनो यत्र नित्यानंदे चिदान्मनि ।

इति रामपदे नासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥

( राम तापिनी च )

श्री राममंत्र रामस्य माहात्म्य गिरिजापतिः ।

मानाति भगवाञ्छर्ममुर्ध्वजस्यावक लोचन ॥

( इन्द्रधनुसंहिता )

राम नाम्न समुत्पद्य प्रख्यो मोक्ष दायकः

रूपं तत्त्वमसेव्यासी वेदान्दत्त्वा पि कारिणः ॥

( महाप्रनु संक्षिप्त )

रकारश्च परब्रह्म नादमोकार संयुतम् ।

ॐ विन्वुञ्ज मकारोर्यं भावं रामावर ॥ १ ॥

रकार स्तस्पर्धं ज्ञेयं त्वंपदाकार उच्यते ।

मकारोसि परं ज्ञेयं तत्त्वमसि सुलोचने ॥ २ ॥

विद्यापत्नी 'र'कार स्या त्त इन्द्राभ्याकार उच्यते ।

मकारामन्दं वायं स्या त्तसिद्धिदानंदं मय्ययम् ॥

( महा गमावय )

प्रख्यं केचिदा हुयं नीचं ज्ञेयं तथापरे ।

श्री राम वर्णाभ्यां सिद्धिमवाप्नोतिमे सतम् ॥  
( महाशंभु सद्धिता )

व वट वीजस्यः प्राकृतोस्ति महाद्रुमः  
यैव राम वीजस्यं जगदेतच्चरा चरम् ॥  
( याज्ञवल्क्य )

रकाराज्जायते ब्रह्मा रकारज्जायते हरिः ।  
'र'काराज्जायते शंभू रकारात्सर्वशक्तयः  
( रुद्रयामलक )

ब्रह्म विष्णु महेशाद्या यस्यांशा लोक साधकाः ।  
तं रामं सच्चिदानन्दं नित्यं रामेश्वरं भजेत् ॥  
( हनुमत् सद्धिता )

रामानाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरंतरम् ।  
कीर्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम् )  
( जावालि सद्धिता )

शुभः सर्व वेदांश्च सर्व मंत्रांश्च पार्वति ।  
तस्मात्कीटि गुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते ॥



योनिनो ज्ञानिनो मक्षा सुकर्म निरवाभ्रये ।  
राम माम्नी रथा सर्व रमुक्रीडा त एव वै ॥  
( पञ्चपुराण )

रामेत्पञ्चरयुग्म हि सर्वमप्राधिकं द्विज ॥  
यदुच्चारस्य माश्रेष्य पापी याति परां गतिम् ।  
( कृष्ण बोगस्तागर )

अक्षया हेतया नाम वदन्ति मनुष्या मुनि ।  
तेषां नास्ति मयं पार्थ रामनाम प्रसादत  
अनादादपि संस्पृष्टो यथानक्षरणी बहेत् ।  
अथोष्ठपुटसं स्पृष्टं रामनाम दहेत्पम् ॥  
( आदि पुराण )

रकारीऽनन्त बीजं स्यद्ये सर्वे षड्पादय ।  
इत्या मनोमर्त सर्व मस्म कर्म शुभाशुभम्  
'आकारी मानुषीर्षं स्यात्, वेद शास्त्र प्रकाशक ।  
गुणयस्येव सो दीप्त्य हृत्स्वमहानर्षं तम ॥ ७  
( श्रीमद्वाल्मीकि रामायण )

मकारश्चन्द्र बीजं - स्याद्य दपां परिपूरणम् ।

त्रितापं हरते नित्यं शीतलत्यं करोति च ॥

चैराग्य हेतुः परमो रकारः कथ्यते बुधैः ।

अकारो ज्ञान हेतुश्च मकारो भक्ति हेतुकः ॥

( श्री मद्वाल्मीकिय रामायण )

आकृष्टिः कृतचेतत्मां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा—

आ चांडालममूकलोकसुलभो वश्यश्च मोक्षश्चिचयः

नो दिक्षा न च दक्षिणां न च पुरश्चर्यामनांगीक्षते

अंत्रोयं रसनास्पृवेग फलति श्रीरामनामात्मकः ।

( श्री मद्वाल्मीकि रामायण )

साखी—

ऐसे गुरु के मिलन से आवागमन न शाय ।

बिन गुरु ज्ञान सो इन्द्र है, काल फास में जाय ॥

यह भव अगम अथाह है, काल जाल वह धार ।

धार होन को द्वार इक, गुरुगिरा कडिहार ॥

गुरु गुरु में मेव है, गुरु गुरु में भाव ।  
गुरु सदा सो भन्विये, शब्द बताये दाव ॥

शब्द—

रहु 'रुर्' 'म' म्मा की शरणे हो,  
सब सन्त उपारन धूनी ।  
वादिमकी बन बोझ्या,  
धुनि किया सुकषेव ।  
कर्म धेनीरा हूँ रखो,  
सूच काते नयवेव ॥ १  
ठीन लोक वाना तन्यो,  
ब्रह्मा निष्पु महेश ।  
नाम लेव मुनि हारिया,  
सुरपति सकल नरेश ॥ २  
विन मिथ्या गुन गाइया,  
विन पस्ती का मेव ।

सुने घर का पाहुना  
तागो लावे नेह ॥ ३ ॥

चार वेद क्रीडा कियो,  
निरंकार किय राम ।

धिनै कवीरा चूनरी,  
पहिरै हरि के दास ॥ ४ ॥  
( कवीर शब्दावली )

कहै कवीर सुनो हो साधो,  
परगट कहूं बजाई ।

रामनाम सो सार शब्द है,  
और कथन सब वाई ॥ १ ॥

‘सून्य और, अज्ञपा मरे,  
अनहद हू मरि जाय ।

राम सनेही ना मरे,  
कह कवीर बजाई ॥ २ ॥

‘कवीर’ सात गांठ कीपीन के

मना न जाने शक ।

राम भ्रमल माता रहे,

मिमे इन्द्र को रंक ॥३॥

श्री साधुजन जानिये,

निशि दिन गुमरे राम ।

धरत बिपे न जगत सों,

पत्ते न बाघे राम ॥ ४ ॥

( कबीर बीजक विचननाथ टीका )

नाम किया सो सब किया,

योम यह आधार ।

अप तप तीर्थ पराराम,

सर्व नाम की द्वार ॥१॥

सब आया उस एक में,

जान पात कल फूल ।

जिन पकड़ा निज मूल ॥२॥

दया शील संतोष सत्य,  
रसना नाम उचार ।

समदृष्टि शीतल हृदय,  
'रज्जव' यह मत सार ॥३॥

आपा मेटे हरि भजे,  
तन नम तजे विकार ।

सब जीवां निर्वैरता,  
'दादू' ये मत सार ॥४॥

पुनश्च—

राम राम नपु जिय सदा सानु रागरे ।  
कलि न विराग, जोग नाग, तप, त्यागरे ॥ १ ॥

राम सुमिरत सब विधि ही को राजरे ।  
राम को विस्तार वो निषेध सिरताज रे ॥ २ ॥

राम नाम महा मनि, फनि जग जालजे ।

सिष् फनि जियै, व्याकुल विहानर ॥ ३ ॥

काम तरु वेत फल सार रे ।

यद, पंडित, पुरारि र ॥ ४ ॥

! प्रेम परमारथ को सार रे ।

श्राम तुलसी को जीवन-अधार रे ॥ ५ ॥

बरीसो भादि धूसरो हो सो बरी ।

मीको हो राम को नाम

कवतठ कदि कव्याथ करो ॥ १ ॥

करम उपासन, ज्ञान,

वेदमत सो सय माति सरो ।

मोदि हो सावन के अग्घेदि

भ्योसुकुत रंग हरो ॥ २ ॥

घाटत रही स्वान पातरिभ्यो,

कपट न पेट भरी ।

हैं सुमिरत नाम सुधारस

पेखत परुसि धरो ॥ ३ ॥

थ औ परमारथ हू

को नहिं कुंजरो-नरो ।

नियत सेतु पयोधि पपाननि

करि कपि कटक तरो ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति जहां जाकी,

तहँ ताको काज सरो ।

मेरे तो माय बाप दोड आखर

हैं सिसु अरनि अरो ॥ ५ ॥

शंकर साखि जो राख कहों कछु

तौ नरि जीह गरो ।

अपनों भलो राम नामहिते

तुलसीहि समुक्ति परो ॥ ६ ॥

राम जपु, राम जपु, राम जपु, बावरे ।



घोर मय-नीर-निधि नाम निज नाव रे ॥ १ ॥  
 परु ही साधन सब रिछि सिद्धि साधिरे ।  
 प्रसे फलि रोग ओम संजम समाधिरे ॥ २ ॥  
 भखी जो है, बोध जो है, दाहिनी भी बाम र ।  
 राम नाम ही सों अन्त सब ही की काम र ॥ ३ ॥  
 गग नम बाटिका रही है फलि फूल रे ।  
 घुवाँ फैसो धीरहर देखि तू न भूल रे ॥ ४ ॥  
 राम नाम छाड़िजो भरोसो करे और रे ।  
 'तुलसी' परोसो त्याग माँसै कूर कोट र ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

राम नाम कर अमित प्रभाषा,  
 सन्त पुराण उपनिषद भाषा  
 राम राम कहि जे जुम हा हीं,  
 तिन्हदि म पाप पुंज समुहाहीं  
 नाकर न ) मरत मुस भाषा,

अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ।

जासु नाम बल शंकर काशी,

देत सबहो समगति अविनाशी ॥

जासु नाम (राम) त्रयताप नशावन,

सो प्रभु प्रगट समुझ जिय रावन ।

नाकर नाम (राम) लेत जग मांहि,

सकल अमंगल मूल न साहीं ।

विवशहूँ जासु नाम (राम) नर कहहि,

वनम अनेक रचित अघ दहाहि ।

सादर सुमिरन जे नर करहि,

अब वारिधि गोपद इव तरहीं ॥

धारक राम कहत जग जेऊ,

होत तरन तारन नर तेऊ ।

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं,

अन्त राम कहि आवत नाही ।

धायँ कुभायँ अनख आलस हूँ ।

नाम अपठ मंगल विसि दसई ।

बहु जुग बहु भूति नाम प्रमारु,

कसि विशेष नहीं आन उपाऊ ।

नहीं कसि करम न भक्ति बिबेकू,

राम नाम अबलबन एकू ।

सब मरोस तभी जो भज रामहि,

प्रेम सहित गाव गुन ग्रामहि ।

सी भव तरे कसु संसय नही,

नाम प्रताप प्रकट कसि माहि ।

राम नाम विधु अबल अवोपा,

सहित समाज सोह नित पोखा ।

नाम काम तरु काल कराजा,

सुमिरत समन सकल जगजाना ॥

महा मझ नोइ भवत महेसू,

कारी मुकृति हेतु उपवेसू ।

महिमा नासु जान गनराऊ,

प्रथम पुनियत नाम प्रमारु ॥

## दोहा:—

कृत जुग त्रेताँ द्वार, पूजा भख अरु जोग ।  
 जो गति होई सो कली, हरि नाम ते पावहिँ लोग ।  
 राम नाम नर केसरी, कनक कसिपु कलि काल ।  
 जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहि पालहि दलि सुरसाल ।  
 कलजुग सम जुग आन नहीं, जो नर कर विश्वास ।  
 गाई राम गुन गन विमल, भव तर विनहिँ प्रयास ।  
 नाना पथ निर्वाण के, साधन अनेक बहु भाँति ।  
 तुलसी तु मेरे कहे, रट राम नाम दिन राति ॥

## दोहा:—

राम नाम मातु-पितु, स्वामि समरथ हितु,  
 आश राम नाम की, भरोसो राम नाम को ।  
 प्रेम राम नाम ही सों, नेम राम नाम ही को,  
 जानौं ना मरम पद, दाहिनो न वामेको ॥  
 स्वारथ सकल परमारथ को राम-नाम,

राम नाम हीन तुलसी म काहू कामको ।

राम की शपथ, सरबस मेरे राम नाम,  
काम घेनु काम तरु, मोसे छीन छाम की ॥

राम मातु, पितु, बन्धु सुमनु,  
गुरु पूज्य, परमहित ।

साहब सखा, सहाय,  
मेह—माते पुनीत पित ।

बेसु, कोसु, कुलु, कर्म,  
पर्य, पजु, पासु, परनिबन्धि ।

जाति—पांति सब भांति  
नामि रामहि इमारि पति ।

परमारथ, स्वारथ सुजसु,  
शुद्धम रामते सकल फल ।

कर 'तुलसीदासु,' अब अब  
करहूँ एक रामते मोर भक्त ।

## कवित्त

जागें जोगी—जंगम, जती—जमाती ध्यान धरें ।  
 डरें उर भारी लोभ, मोह क्रोध, काम के ।  
 जागे राजा राज काज, सेवक समाज साज,  
 साचें सुनि समाचार, बड़े वेरी वाम के ।  
 जागें बुध विद्याहित, पण्डित चकित चित,  
 जागे लोभी लालच, धरोन, धन, के ।  
 जागे भोगी भोग हीं वियोगी, रोगी सोगवस,  
 सोवे सुख तुलसी भरोसे राम नाम के ॥

राम हैं मातु, पिता, गुरु, बन्धु  
 श्री संगी, सखा, सुनु, स्वामि सनेही ।  
 राम की सौ, भरोसो है रामको  
 राम रँग्यो, रुचि राच्यो न कही ।  
 जीश्रत रामु, मुएं पुनि रामु, सदा  
 रघुनाथहि की गति जेही ।  
 सोई जिऐ जगमें 'तुलसी'

मनु डोसत और मुप परि बेदी ।

सो जननी, सो सखा, सोइ माइ,  
सो मामिषि, सो सुतु सो बितु मेरो ।

सोइ समी, सो सखा, सोइ सेवकु,  
सो गुरु सो सुरु साइप बेरी ।

सो तुनसी प्रिय प्राण समान,  
कदां लौ बनाय कहीं बढतेरो ।

श्री वशि बेद की गेह की नेदु,  
सनेहसों रामको होइ सवेरो ॥

जमु से रूप, प्रताप दिनशु से,  
सोम से सीख गणेशु स मानें ।

हरिषम्ह से सांघ, बडे विधि-से,  
मपदा से मदीप विपै-सुख सानें ।

सुकसे मुनि, साबर से बकवा,  
धिर जीवन लौमते अधिकाने ।

ऐसे भये तो कहा 'तुलसी'

जो पै राजिव लोचन राख न जाने ॥

## दोहा

रे मन सब निरस हूँ, सरस राम सौं होहि ।

भलो सिखावन देत हौं, निसि दिन तुलसी तौहि ॥

न मिटै भव संकट, दुर्घट है,

सुष तीरथ जन्म अनैक श्रटी ।

कलि में न विरागु, न कर्म कहूँ,

सबु लागत फोकट भूँट बटो ।

जटु ज्यों जनि पेट कुपेटक कोटिक

चेटक कौतुक थार ठटो ।

'तुलसी' जो सदा सुख चाहिये तौ,

रसनां निशिवासर राख रटो ॥

रामु विहाय 'भरा' नपलै,



चिनरी सुपरी कवि कोकिल हू की  
 नामहि तें गबकी, नमिकाकी,  
 अनामिलकी पक्षि गे पक्ष धूकी  
 नाम प्रताप बडे कुसमात्र  
 बनाइ रही पति पांडू बधू की  
 धाकी मत्तो अगहूँ 'तुलसी'  
 मेहि प्रीति प्रतीति है आखर हू  
 नामु अनामिल से लख वारम,  
 वारन वारन वार बधू को  
 नाम हरे प्रह्लाद विपाद,  
 पिता-भय सांसति सागर सूकी  
 नाम सौं प्रीति प्रतीति निहीन,  
 मिष्यो कसिकास कराल न धूकें  
 यक्षि हैं रामु सो वासु रिपें,  
 'तुलसी' हुकसे पक्ष आखर दूकी  
 सकल कामना हीन जे, राम भक्ति रस खीन

नाम सू प्रेम पियूष हृद, तिनहूँ हिये मन मीन ।

राम नाम का बल और विश्वास के उद्धार—

फिरत सनेहँ मगन सुख अपने,

नाम प्रसाद सोच नहि सपने ।

जासु पतित पावन बड़ बाना,

गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना ।

जाहि (राम) भजहि मन तजि कुटलाई,

राम भजे गति केहि नहि पाई १३

### कवित्त—

सब अँग हीन, सब साधन विहीन, मन वचन मलीन,

हीन सब करतूति हों । बुधिबल हीन, भाव भगति

विहीन, हीन गुन, ज्ञानहीन, हीन भागहूँ विभूति हों ।

तुलसी गरीब की गई—बहोर राम नामु, जाहि जपि

जाहँ रामहूँ की बैठी धूति हों । प्रीति राम नाम सों,

प्रतीति राम नाम की, प्रसाद राम नाम के पसार  
 पाय सृति हैं ॥

जोग न निरागु, जप, भाग ठप, स्यागु प्रव,  
 तीरथ न धर्म जानौं, घेर विधि किमि है ।  
 'तुलसी' सो पाचो न भयो है, नहि हूँ है कइँ ।  
 सोचै सब, पाके अप कैसे प्रभू छमि हैं ।  
 मेरे तौ न डरू, रघुवीर ! सुनो सांघी कइँ,  
 सब अनसै हैं तुम्हें, सङ्गन न गमि हैं ।  
 प्रबे सुकृति के सग मोहि तुलां लोखिये ली,  
 नाम के प्रसाद भाद मेरी ओर नाम है ॥

### मनाचे श्लोक

मना मत्सरें नाम साँझु न को हो,  
 अति भाररें हा निजप्यास राही ।  
 समस्वामर्थे नाम है सार आदे,  
 दुखी दुबना सुखिता हीन सादे ॥

अर्थ—: हे मन ! मत्सर ग्रस्त होकर राम नाम स्मरण मत छोड़, आदर बुद्धि से नाम स्मरण का ही अवलंबन रख्ये । नाम स्मरण सब साधनों का सार है । इसकी दूसरी उपमा ही नहीं । यह अनुपमेय है ।

वहू नाम या राम नामी तुलेना,

अभाग्या नरा पामरा हैं कलेना ।

विषा औषधी घेतलें पार्वतीशें,

जिवा मानवा किंकरा कोण पूसे ।

अर्थ—दूसरे मन्त्र की राम मन्त्र से तुलना नहीं हो सकती, सक्ती, यह बात अभाग्य मनुष्य की समझ में नहीं आता । भगवान् शकर ने हत्ताहत विषपान करके इसी औषधि का पान किया था । फिर दूसरे पाभर जीवों की तो बात ही क्या है ?

श्लोक—

भजा राम विश्राम योगेश्वरांचा,

जपु नै मिले नेम गौरी हराचा ।

स्वर्ये नीववी तापसी चंद्र मौली,

तुम्हां साढवी राम हा धेत काली ॥

अर्थ--जो श्री रामजी बागेभरों क विनाम खान हैं, जिनके नाम अपरम शंकर ने ब्रह्म लिया है, और स्वयं राम्य हुए। ये ही श्री रामजी अन्त-अन्त में तुमको छुड़ावेंगे।

### श्लोक

बये राम बाखी तया धोर हाखी,  
 मनीं व्यर्थ प्राखी मया नाम काखी ।  
 हरि नाम है वैश शाखी पुराण,  
 बहु आर्गल बोबिली व्यास बाखी ॥

अर्थ--जिस के मुखसे राम नाम नहीं निकलता, उसकी हानि होती है। जो राम नाम को तुम्हें समझता है उसका जीवन बचाव है। ये शब्दों में क्या ब्यास महाराज ने पुराणों में राम की ही नाम की महिमा खूब गाई है।

( समय श्री रामी रामदासजी महाराज )

## कवित-

कहा व्रत नेम गजेन्द्र कियो,  
 कहा वेद पुराण पढ़ी गणिका ।  
 अज्ञाभिल कौन अचार कियो,  
 निशि वासर पान सुरापन का ॥  
 व्याध कहा नप योग कियो,  
 बहु जीवन को जु हुतो हनका ।  
 तुलसी अथ मेरु सुमेर जरे,  
 हरि नाम हुताशन को कणिका ॥

एक शब्द में कहि समझाऊं सुनहो सब संसार ।  
 राम नाम सो सार शब्द है, और कथन है छारा ॥१॥

(श्री हरिव्वाक्यम्)

राम नाम तिहुँ लोक में भवसागर की नाव ।  
 सद्गुरु खेवट बांह दे सुन्दर वेगो आव ॥ १ ॥

राम नाम पिपुप छवि निप पीपै मठि हीन ।

सुंदर होलै भटकठे जन जन आगे हीन ॥ २ ॥

राम नाम मोचन कर राम नाम नस पाम ।

राम नाम सौं विजि रहै सुंदर राम समान ॥ ३ ॥

कबीर कसौटी राम को, भूग टिकै न कोय ।

राम कसौटी सो सिहै, भी मरजीबा होय ॥ १ ॥

कबीर कबता हूँ कब मात हूँ

सुखता हूँ सब कोय ।

राम कब्यां भसो होयगा,

बहिं तर भजा न होय ॥ २ ॥

राम तुमारे नाम विन,

नो मुस निकसे और ।

‘शत्रु’ ठस अपराधी भीव को,

तीन लोक नहीं टार ॥ ५ ॥

आनरु राम बरारर जानैत,

पैसी तो बात नै बहिं भाई ।

ज्यों सब खेती मिली अस घास में  
 बोही गयो सब बीज कुमाई ॥  
 वेण्या को पूत पिता कहे कौन को  
 जानत हैं सब लोग लुगाई -  
 इमि आन तेजे विन राम मिले  
 नहिं रज्जव काढी है राम दुहाई ॥

चारुं वेद डँडोर के, अंत कहेंगे राम ।  
 रज्जव पहिले लीजिये, ये तामें ही काम ॥  
 कबीर हरि के नाम सों, कोटि विघ्न टल जायँ ।  
 राईमान विशंदरा, केता काठ जराय ॥ १ ॥  
 रामेनाम की औषधी सतगुरु देइ वताय ।  
 औषध खाय रु पच रखे, ताकी वेद न जाय ॥ २ ॥

सवैया—

जान अजान परे पग पावक,  
 सो सतमान जरेही जरेंगे ।



ज्ञान अज्ञान छुरी धिये  
 पास मैत्र विकार हरेइ हरेमे ॥  
 ज्ञान अज्ञान पिये कोऊ अमृत  
 तामुके शोक ठरेही टरेमे ।  
 ज्ञान अज्ञान रते नित रामको  
 रामधरख विरेही विरेगे ॥

पद

—विण—

कौस विधि पाइये रे, मीठ हमारा सोइ ॥ टेक ॥  
 पास पीब परदेस हरे जब जम प्रगटे नाहिं ।  
 विन देखे बुख पाइये, यहु सानै मन माहिं ॥१॥  
 जब जम मन न बेखिये, परगट मिली न भाइ ।  
 एक सेव संगहि र हे, यहु बुख सखा न भाइ ॥२॥  
 सब जम नेई कुरि हरे, जब जम मिले न मोहि ॥  
 जेन निकट नहीं देखिये, समि रहे क्या होइ ॥३॥

कहा करों कैसे मिलैरे, तल्पै मेरा जीव ।

‘दादू’ आतुर विरहनी, कारण अपने पीव ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

राते माते नाम तुम्हारे

काहे की परवा है हमारे ॥ टेर ॥

फिलमिल-फिलमिल नूर तुम्हारा,

परगट खेलै प्राण हमारा ॥ १ ॥

नूर तुम्हारा नैणा माहीं,

तनमन लागा छुटे नाहीं ॥ २ ॥

प्रेम मगन मतवारे माते,

रंग तुम्हारे ‘दादू’ राते ॥ ३ ॥

॥ विरह विलाप ॥

जियराक्यौं रहै रे, तुम्हारे दर्शन विन वेहाल ॥ टेक ॥

परदाअं तरिकरि रहे, हम जीवैं किहि आधार ।

सदासजाती प्रतिमा, अब के लेहु ठवारि ॥१॥  
 मोपि गुसाई है रहे, अब काहे न परमट होइ ।  
 राम सनेही संगिया, दूमानाहीं कोइ ॥ २ ॥  
 अंतरजामी छिपि रहे, हम क्यों जीवें दूरि ।  
 तुम बिन म्याकुल केशपा, नैन रहे अब पुरि ॥३॥  
 आप अपरधन ग्यै रहे, हम क्यों रैनि बिहाइ ।  
 'दादू' दरसखा कारणे, तलफि तलफि जिवजाइ ॥४॥

### ॥ विरह—चिंता ॥

सो दिन कषई आपेगा,  
 दादू जन पीब पावेगा ॥ टेक  
 क्यों ही अपने अंगि जगावेमा,  
 तब सब दुख मेरा जापेगा ॥ १  
 पीब अपने बैन सुनावेमा,  
 तब आनन्द अंगि न मावेमा ॥२॥  
 पीब मेरी प्यास मिटावेमा,

तव आपहि प्रेम पिलावैगा ॥ ३ ॥

दे अपना दर्श दिखावैगा,

तव 'दादू' मंगल गावैगा ॥ ४ ॥

भाई रे ऐसा पंथ हमारा, द्वै पख रहित पंथ गहि पूरा,  
अवरण एक अधारा ॥ टेक ॥

बाद विवाद काहू सों नाहीं,

मांहि जगत से न्यारा ।

समदृष्टी सुभाइ सहन मैं,

आपहि आप विचारा ॥ १ ॥

मैं तैं मेरी यहु मति नांही,

निबैरी निरकारा ।

पूरण सवै देखि आपा पर,

निरालंब निर्धारा ॥ २ ॥

काहू के संगि भोह न ममिता,

संगी सिर—जनहारा ।

मनहीं मनसों समुक्ति सयानां,  
 ज्ञानम् एक अपारा ॥ ३ ॥  
 काम कल्पना कवे न कीवै,  
 पुरख—ब्रह्म पिपारा ।  
 इहि वधि पहुँचि पार महि,  
 'शरू' सो वत् सहधि संमार ॥४॥

॥ रस ॥

राम रस मीठा रे, पीवै साधु मुनांस्य ।  
 सदा रस पीवै प्रेम सों, सो अविनाशी प्रांस्य ॥५॥  
 इहि रसि मुनि जामे सदै, ब्रह्मा विष्णु महेश ।  
 सुरनर साधु संवभम, सो रस पीवै शेष ॥ १ ॥  
 सिध साधिक शोभी भठी, सती सपै सुखवेव ।  
 पीवत अन्त न आबई, ऐसा असल अमेर ॥२॥  
 इहि रसि राते नामवेव, पीया अरु रैदास ।  
 पित्त कबीरा ना बक्या, अत्रई प्रेम वियास ॥३॥

यहु रस मीठा जिन पिया, सो रस ही मांहि समाइ ।  
मीठे मीठा मिलि रह्या, 'दादू' अनत न जाइ ॥ ४ ॥

॥ अनन्य शरण ॥

तूं हीं तूं गुरुदेव- हमारा,  
सब कुछ मेरे, नांव तुम्हारा ॥१॥  
तुमहीं पूजा तुम हीं सेवा,  
तुमहीं पाती तुमहीं देवा ॥ १ ॥  
जोग जग्य तूं साधन जापं,  
तुम्ह हीं मेरे आपै आपं ॥२॥  
त्तप तीरथ तूं व्रत सनांना,  
तुम्ह हीं ज्ञानां तुम्ह ही ध्यानां ॥३॥  
वेद भेद तूं पाठ पुरांना,  
'दादू' के तुम पिण्ड पुरांना ॥४॥

पद

तू ही तू मापार इमार,  
 सेवग सुत हम राम तुम्हारे ॥८॥  
 माई बाप तू साहिव मेरा,  
 भगति हीस मैं सेवग तेरा ॥९॥  
 मात-पिता तू बंधव माई,  
 तुमही मेरे सभन सहाई ॥ १० ॥  
 तुम्ह ही राव, तुम्ह ही मात,  
 तुम्ह ही जात तुम ही ग्याव ॥११॥  
 कुच कुटम्ब तू सब परिवारा,  
 'राहु' का तू तारखदारा ॥ ४ ॥

॥ पद उपदेश ॥

ममा भक्ति राम नाम स्त्री, -

साप संमति सुमिरि सुमिरि,

रसनां रस पीजै ॥ टेक ॥

साधू जन सुमिरन करि,

केते जपि जागे ।

अगम निगम अमर किये,

काल कोइ न लागे ॥ १ ॥

नीच ऊंच चिन्तन करि,

शरणागति लीये ।

भगति मुकति अपनी गति,

ऐसें जन कीये ॥ २ ॥

केते तिरि तीर लागे,

बन्धन भव छूटे ।

कलिमल बिस्व जुग जुग के,

राम नाम खूटे ॥ ३ ॥

भरत करम सब निवारि,

जीवन जपि सोई ।

‘ दादू ’ दुख दूरि करण,



बूजा नहिं कोई ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

‘ बावू / मोहि मरोसा मोटा,  
 चारख तिरख सोइ संगि मेरे,  
 कहा करी कलि तोटा ॥ टेक ॥

दोँ नामी हरिया ये न्यारी,  
 हरिया मक्ति न नाई ।

मच्छ कच्छ रहै मलि नेते,  
 तिनहुँ काज न लाई ॥ १ ॥

जम सुनै प्यंगर घर पाया,  
 बाज रखा बन माहीं ।

जिनका सम्रय राखछहारा,  
 तिनहुँ को हर नाहीं ॥ २ ॥

साथै मूठ न पूज कबहुँ,  
 मति न सामी काई ।

दादू साचा सहजि समाना,

फिरि वै भूठ विलाई ॥ ३ ॥

॥मंगल॥

चूर रह्या भरपूर, अमी रस पीजिये,

रस मांहे रस होइ, लाहा लीजिये ॥टेरा॥

परगट तेज अनंत, पार नहिं पाईये ।

भिलिमिलि भिलिमिलि होइ, तहां मन लाईये ॥१॥

सहजे सदा प्रकास, जोति जल पूरिया ।

तहां रहे निजदस, सेवग सूरिया ॥२॥

सुख सागर वार न पार, हमारा वास है ॥

इंस रहे तामांहिं, 'दादू' दास है ॥ ३ ॥

पद—

सोई साध सिरोमणी, गोविन्द गुण गावै ।

राम भजे विषया तजे, आपा न जनावै ॥टेका॥

मिथ्या मुक्ति बोली नहीं, पर पिथा नहीं ।  
 ओगुण छाड़े गुण नहै, मन हरि पद मारि ॥१॥  
 निर्धैरी सब आत्मा पर आत्म मानै ।  
 सुखदाई समिता गहै, आपा नहीं आनै ॥ २ ॥  
 आपा पर अन्तर नहीं, निमज निज सारा ।  
 सतवादी साधा कहै, जे लीन विधारा ॥ ३॥  
 निर्भेभज म्यारा रहै, काहुँ ज़िपव न न होई ।  
 'दादू' सब संसार में, एसा जन कोई ॥४॥

राम क्य़ा सबाही मक्ता,

सब हि राम के मारि ।

रामदास इक राम विन,

दूआ कोऊ नाहि ॥ १ ॥

धिन साधू संसार में

सुमिरावे निज नाम ।

रामदास सत शब्द दे,  
 पहुँचावे - सुन गाम ॥ २ ॥  
 एक राम के नाम विन,  
 जिवकी जरनि न जाय ।  
 दादू केता पचि मरे,  
 करि करि बहुत उपाय ॥ ३ ॥  
 राम नाम गुरु शब्द सुँ रे,  
 मन बेल भरम्म ।  
 निहकरमी सुँ नम मिल्या,  
 ' दादू ' काट करम्म ॥ ४ ॥  
 दया बोध मांही कही करि करि ऊंची वांह ।  
 दयावंत जिनके वसै राम राम उर माह ॥ १ ॥  
 सुंदर कहत एक दियो जिन राम नाम ॥  
 गुरु सो उदार कोउ देख्यो नांहि सन्यो है ॥

राम राम सब फोड़ कहै, ब्रह्मा विष्णु महेश ।  
 राम शरण साधा मुरु, वेवे यो उपदेश ॥ १ ॥  
 राम शरण शिव धर्म कुं, जानत नाहीं कोय ।  
 शिव सुमरे ताकुं भजे, सो शिव परमी होय ॥२॥

पद

पर रे राम नाम सुमरीमै ।  
 यासुँ आगे सन्त उपरिया  
 केश साखि भरीमै ॥ टेर ॥  
 यासुँ प्रु प्रह्लाद उपरिय,  
 करनी साच करनै ।  
 यासुँ ब्रह्म मखर उपरै,  
 गोरख ज्ञान गहिमै ॥१॥  
 यासुँ मोपीचन्द भरबरी,  
 पेटे पार नैपी नै ।  
 यासुँ रैका-रैका उपरै,

आप अजर नरी नै ॥२॥

यासैं रामा नन्द उधरिये,  
पीपा जुग-जुग जीजै ।

यासैं दास कवीर नामदे,  
नमका जाल कटी नै ॥३॥

यासैं जन स्विदास उधरिये,  
मीरा वात भनीजै ।

यासूं कालू कीता उद्धरे,  
वास अमरपुर कीजै ॥ ४ ॥

यासूं जन हरिदास उद्धरिये,  
दादू दास पतीजै ।

जन हरिरामा कहै सब ही को,  
नपता ढील न कीजै ॥ ५ ॥

पद

मनवा राम भजन रट बल रे ।

जम संकल्प निकल को तपही,  
 आप होय निर्वल रे ॥ १६ ॥

वेस कुसङ्ग पाप नहीं सीमै,  
 जहां न हरि की गल रे ।

ओ नर मोक्ष मुक्ति को पावै,  
 करै सन्ता बीच मिसखरे ॥ १७ ॥

संशय शोक परै करि सषही,  
 हृद धूर कर दिखरे ।

काम क्रोध भ्रम कर जाने,  
 राम सुमर एक ह्वरे ॥ १८ ॥

मनवा उखट मिथ्या निज मन सैं,  
 पाया प्रेम अटख रे ।

पांच पनीस एक रस कीना,  
 सहन भई सब सखरे ॥ १९ ॥

नल सिल रोम रोम रम रम में,  
 तासी एक अटख रे ।

नहिं वो परलय जावसी,

लग्य चौरासी धार ॥ १ ॥

सतगुरु सद्द जो कहे रे

मनवा ताहि न भूल ॥

ऐसो जग में कोई नहीं,

राम नाम सय तुल ॥ १ ॥

साधु विना कुंण सीखवै,

राम भजन की रीति ॥

बूझ सष नर वापडा

कर कर जग में प्रीति ॥ २ ॥

यारी हरि से कीजिये रे,

दूजा दाव निवार ॥

पासो पिव से ग्वेलतां,

कदे न आवे हार ॥ ३ ॥

साधु मिल्या सुख पाइया,



अब हरिरामा भया परमानंद

सुरत शब्द से मिथरे ॥४॥

पद

मरम गुरु मानेर साधो नाम सुखाय ॥ ४ ॥

सतगुरु मारा सिरपखी रे, मैं सतगुरु का दास ।

उनके पास बिसम्बिये, वे काटे जम की पास ॥ १ ॥

भोम, भिग, अप, उप करे रे, अइसठ वीरथ पाय ।

उर आठम हक तार बिनु, जम के गेले नाय ॥ २ ॥

वेद कथा सुन सीसके, बाधे देय बिषार ।

नाम नियारो रह भयो, कर कर लोकापार ॥ ३ ॥

बिन गुरु गम निश्चय बिना, कही करावे कूर ।

अब हर रामा उख नीब सूँ देख रहीने दूर ॥ ४ ॥

पद

सुधी नर नारियो—रे अपनी पीब पुकार ।

उपज्या परमानन्द ।

नन हरिया निरभय भया

जिन मेट्या दुख द्वन्द्व ॥

पद

रे नर सतगुरु सौदा कीजै ।

इन सौदा में नफा बहुत है,

एक—मना होय लीजै ॥१॥

मात पिता सुत भ्रात सनेही,

चौरासी लख हीजै ॥ १ ॥

जे कोई चाहे राम भक्ति को

गुरु की शरण गहीजै ॥२॥

गुरु विन धरम न भाजै भवका

कर्म न काल कटीजै ॥ ३ ॥

गुरु गोविन्द विन मुक्ति न जीवकी

कहियो वेद सुनीजौ ॥ ४ ॥

जन हरामा और सब कूकस

राम शब्द सत सीखे ॥ ५ ॥

पद

एसी जड़ी मोहि सतगुरु दीनी ।

तन मन भरप अतर में सीनी ॥६॥

भक्खा सुणत बहुत सुख पाया ।

निरस्त मड़ी नयन सुख पाया ॥७॥

सुपत ममन मया मन मेरा ।

चाखत मिटग्या भरम अंधेरा ॥८॥

पीसत मड़ी हृदय मे ऊमी ।

पकत बहर नामी माय पुगी ॥९॥

रोम रोम में सर्वियापी ।

उलगी जाय अगम पर पापी ॥१०॥

इर अतर एको धुन सामी ।

इडा पिसला सुनमस्य जागी ॥११॥

मुक्ति द्वार में प्राण समाया ।

जन्म मरणा दुःख रोग मिटाया ॥६॥

ब्रह्मादिक सनकादिक जागै ।

राम नदी शिव शेष बखाणै ॥ ७ ॥

अनन्त कोटि संतां या पाई ।

रामदास गुरुदेव बताई ॥ ८ ॥

॥ पद ॥

गुरु मेरे ऐसी कदर बताई ।

ताते सुरत शब्द घर आई ॥टेक॥

रसना नाम नेम करि लीया ।

निहा दिन प्रीति लगाई ।

हिरदै मोहि प्रेम प्रकास्या ।

आत्म की गम पाई ॥१॥

शाभी माहि नाद परकास्या ।

सब ही धन गुँजाया ।

पश्चिम दिसा की बाटी सूखी ।

मेरू बगड हुम भाण ॥ २ ॥

सहजो बसट भादि पर आया ।

तिरपसी के तीरा ।

रामदास मुनसानर माहीं ।

पुगठ इस नई हीरा ॥ ३ ॥

पद

सुमधी आत्मा हे तू सी रमता राम विद्याय ॥

समवा सुमति सम्हावके,

तू तबि हे कुमति कुबान ॥टेक॥

सठ गुरु शरय पर करी हे

सत्समाधि की पाइ ।

ज्ञान सङ्ग कर शेष कर,

तू भ्रम का फडदा फाड ॥ १ ॥

ज्ञान कीधम कीत छे हे,

लालच लोभ पछाड़ ।  
 हर्ष शोक को टाहि के,  
 तू शंसय को शिर म्हाड़ ॥२॥  
 मोह मंज दे गाह टै है,  
 यो सब दुख की धाड़ ।  
 राम द्वेष ठुकराय ने,  
 तूँ कर करमां सं राड़ ॥३॥  
 गर्व गुमान उड़ायदेए,  
 निशदिन राम उचार ।  
 'राम चरण, तब ही मिलै,  
 तू पूरण ब्रह्म मभार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सन्त सबै शिर ऊपरै जिनके साची टेक ।

राम चरण दूजा सबै, राम आसरे भेक ॥

राम चरण सन्ता तणो, मैं हूँ खानाजाद ।

दूसाँ सँ अलगो रहूँ, बाके बार विवाद ॥  
 सब सन्ता सँ धीनती, कीज्यो बाप विचार ।  
 परस ही मत भिड़कज्यो, में साँनाजार तुम्हार ॥

### चम्पक छन्द —

ये छोटा मोटा चन्ना, य परमट पाद हेखा ।  
 सब राम नाम की बाणी,  
 य साधां ठखी निशाखी ॥ १ ॥  
 कोई बैठा बाणी बाधै,  
 ये भते लग्या हे साधि ।  
 कोई मिगुंय सा पर गाँदै,  
 सब साधां के मन भावै ॥ २ ॥  
 य इधे तब सँ पाछा,  
 ये अण्व मम्मे काधा ।  
 ये मुस सँ सूठ भापै,  
 ये इष्ट साध की राखै ॥ ३ ॥

ये परधन सैं रह रुठा,  
 ये कूड़ कपट सैं पूठा ।  
 सतगुरु की सेवा शूरा,  
 ये साध मता सैं पूरा ॥४॥  
 ये पाणी पीवै छाण्यो,  
 यां सब घट आतम नण्यो ।  
 ये हिंसा सू रह डरता,  
 ये निरख निरख पम धरता ॥५॥  
 ये नाहिं दुख का दाता,  
 ये चाहै सब कुशलात ।  
 अद्धा की भोजन पावै,  
 कै भित्ता करके खावै ॥ ६ ॥  
 ये निरमल बुद्धि शरीरा,  
 ये जैसी शीतल नीरा ।  
 ऐसी मति सो साधू  
 ये दूजा सकल उपादू ॥ ७ ॥



कोई स्याखा करे बिचारा,  
 अछ समझ्यां के होकारा ।  
 में साब कहत नहीं डरपूं,  
 जैसी हुई वैंसी परपूं ॥८॥  
 कोई साधा साध पिछांछे,  
 मतनाही मरम न जायो ।  
 ' रामचरख ' हम भाई,  
 सो मीठा माहि प्ठारई ॥ ९ ॥

य न्यास पुत्र शुक्रवेना,  
 मामन्त माहि कह मेवा ।टका  
 कोई बाकी करी न मान,  
 सो हमसे भगडा ठानै ॥ १ ॥  
 सुख साधा रानी होवै,  
 झूठा के भाल गढावै ॥ २ ॥  
 माथा सादिब राजी,  
 झूठ मारी झूठा पायी ॥ ३ ॥

ये लछ अलछ सब जाणे,  
हरिजी का सन्त बखारो ॥४॥

शु रामचरण सत भाखी,  
बिच गीता ने दे खासी ॥५॥  
( स० रामचरणजी )

### ॥ तिताला ॥

भया में न्यारा रे । सतगुरु केजु प्रसाद भया में  
न्यारा रे ॥

अवन सुन्यो जव नाद भया में न्यारा रे ।

छूटोवाद बिवाद भया में न्यारा रे ॥ टेक ॥

लोक वेद की संग तज्यीरे, साधु समागम कीन ।

माया मोह जंझाल तें हम भागी किनारी दीन ॥ १ ॥

नाम निरंजन लेत है रे और कछु न सुहाइ ।

निसी बाचा कर्मना सब छाडी आन उपाइ ॥ २ ॥

मन का भरम विलाइया रे भटकत फिरता दूरि ।

उलटि समाना आप मैं सब प्रमट घा राम इजूरि ॥ ३ ॥

पिंड प्रक्षयण्ड जहां तहां रे वा बिन और न कोइ ।

सुन्दर ताका दास है जातैं सब पैशाहस होइ ॥ ५ ॥

सोई मन राम कीं भावै हो ।

कनक कामिनी पर हर महिआप बंधावैहो ॥ (टंक)

सब ही सों मिरवैरता कहु न दुखावै हो ।

शीतल बानी बोलिकै रस अमृत प्यावै हो ॥ १ ॥

केतौ मीन महे रहै के हरिगुन भावै हो ।

अरम क्या संसार की सब दूरि उठावै हो ॥ २ ॥

पंचो इष्टी बास करै मन मनहिं मिलवै हो ।

काम क्रोध अरु लोभ फों पनि पीदि पहानै हो ॥ ३ ॥

चौथा पद फों चीन्ह के ता माहि समावै हो ।

सुन्दर पैसै साधु की दिग काल न आवै हो ॥ ४ ॥

स्वगामोदि राम अप्यारा हो ।

प्रिति वधि संसार सों मन किया न्यारा हो ॥ (टंक)

सतगुरु शब्द सुनाइया दिया ज्ञान विचारा हो ।  
 भरम तिमर भागै सबै गहि किया उज्यारा हो ॥ १ ॥  
 चाखि चाखि छाडिया माया रस स्वारा हो ।  
 नाम सुधारस पीजिये छिन बारम्बारा हो ॥ २ ॥  
 मै बन्दा ब्रह्म कांजा का वारन पारा हो ।  
 ताहि भजे कौइ साधवा जिनि तन मन मारा हो ॥ ३ ॥  
 आन देवकों ध्यावई ताकै मुख छारा हो ।  
 अलष निरंजन ऊपरै जन सुन्दर वारा हो ॥ ४ ॥

सुन्यों तेरो नीको नाऊ हो ।

मोहि कछु दत दीजिये बलिहारी जाऊँ हो ॥ टेक ॥

सब ठाहर होइ आइयो रुचि नहीं कहाँऊँ हो ।

ब्रह्मा विष्णु महेश लों अरु किते वताऊँ हो ॥ १ ॥

मै अनाथ भूखौ फिरौ तोहि पेट दिपाँऊँ हो ।

धुकूलगे तैं गिर परौ तव ही मरजाँऊँ ही ॥ २ ॥

दुर्बल की कछु वृम्भिये कबकी विललाँऊँ हो ।

तेरे कछु घटि है नहीं मैं कुटुम्ब जिवाँऊँ हो ॥ ३ ॥

राम राम रटिबौ फरौ निर्मल गुन गाऊ हो ।  
सुन्दर रंक निनामिय यहू रोमी पाऊ हो ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

एक पीजारा ऐसा आया,  
रुई पीमस के कारस,  
अपणो राम पठाया ॥ टंक ॥

पीशस प्रेम मुठीया मन की,  
नय की वात बमाई ।  
ध्यान धुनि बंध्यो अति ऊचो,  
छूटन एकत हुषाई ॥ १ ॥

अरम कांटी काढ़ करक  
गज ग्यान के सकेलै ।  
पैत्र सपेठ जमाय करकै,  
प्रसू के आमे मेलै ॥ २ ॥

मोई मोई रुई पिमावस आवे,

रुई सवन की पीजै ।

परमारथ कुंद ही धरी है,

मसकत कछु न लीजै ॥३॥

रुई बहुत पीजी बहु विधि कर,

मुदित भये हरि राई ।

दाद दास अजब पीजारा,

‘सुन्दर’ बलि बलि जाई ॥४॥

॥ पद ॥

सखी म्हांरो नीद नशानी हो ।

पिवजी रो पन्थ निहारतां,

सारी रेन विहानी हो ॥६॥

सात सखी मिल सीख दिवी,

मन एक न मानी हो ।

बिन देखे कल ना पड़े,

जिय निश्चय जानी हो ॥१॥

ब्रह्मन्त ब्याकुल भई,  
 मुख पिन-पिन बानी हो  
 अन्तर बेदम विरह की,  
 धे पीर न मानी हो ॥  
 क्यों पातक बन बिन दुस्ती,  
 मझनी विन पानी हो ।  
 'मीरा' ब्याकुल विरहनी,  
 सुध बुध पितरानी हो ।  
 ॥ पद ॥

पिया तोरे नाम लुभा लुमानी हो ।  
 नाम सेव तिरता सुण्या,  
 जैसे पाहन पानी हो ॥टेर  
 सुकृत कबहू ना क्रियो,  
 बहु काम कमानी हो ।  
 मजिका कीर पडावर्ता,

वैकुण्ठ पठानो हो ॥ १ ॥

अर्थ कुंजर लीयो,  
चाको अत्रधि घटानी हो ।

गरुड छाड़ हरि आविया,  
पशू जूण छुटाणी हो ॥ २ ॥

लो नाम हमारे गुरु दियो  
सोड वेद बखानी हो ।

सीरां दसौ वारस्यै अपनी  
कर जानी हो ॥ ३ ॥



## राम नाम प्रश्नोत्तरी ।

- १ कौन धर्म यह, जिसके धारक  
से न सखावा माया-धाम ?  
राम राम है, राम राम है,  
राम राम है, राघव राम ।
- २ कौन नाम वह, पावन जिससे  
सीधा और नहीं है नाम ?  
राम राम है राम राम है,  
राम राम है, राघव राम ।
- ३ कौन गुण जो, मूर्ख रही है,  
शंकर के मन आठों याम ?  
राम राम है, राम राम है,  
राम राम है, राघव राम ।
- ४ कौन तीर्थ वह, जिसमें बसते  
अडसठ तीर्थ चारों धाम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम है, राघव राम ।

३ कौन मंत्र वह, जिसे जप रहे

अष्टादश छः ऋक्, यजु, साम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम है, राघव राम ।

६ कौन योग वह योगी जिसपर

बार फेंकते

राम राम है, राम राम है,  
राम राम है, राघव राम ।

२ कौन देव यह, जिसके भयसे  
होता सरल, निपाठा राम ?

राम राम है, राम राम है,  
राम राम है, राघव राम ।

० कौन त्रिशूली जिसके भय से  
प्राप्त सड़ा काँपटा है सब काम ?

राम है, राम राम है,  
राम राम है राघव राम ।

। सुसधान है यह, जिससे  
यक पर्षित होते सिद्ध सहज सब काम ?

। राम है राम राम है,  
राघव राम राम है, राघव राम ।

२ कौन अमृत यह, जिसकी पीकर  
पाते मर्न अमरत्व अनाम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम है, राघव राम ।

१३ कौन भुवन वह, जिसमे बस कर

पाता जीव सहज विश्राम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम राघव राम ।

१४ कौन वर्ण दो, चार वर्ण के

दूषणहर भूषण अभिराम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम है, राघव राम ।

१५ शबरी ने जी शास्त्र पढा था

बतलाना तू 'तुलसीराम ?

राम राम है, राम राम है,

राम राम है, राघव राम ।

१६ कौन नमन वह, जिसमे सारे

देवों को साष्टांग प्रणाम ?

राम राम है, राम राम है,  
राम राम है, राधन राम ।

### नामापराध—

एक दोषों से बच कर नाम ( राम ) बच कीजिये  
सुधिरदासति नाम वैमम कथा श्री शेरायोर्मंदघीर  
रुद्रा गुरु शास्त्र पेश यथने नाम्म्यर्थ वाद अम  
नामास्तीति निपिच्छवृत्ति निहित स्पामी च धर्मान्तरैः  
साम्यं नाम अपे शिष्यस्य च हरेर्नामापराधा दश ॥

इस ऊपर के श्लोक में राम भजन करने वाले सभ्य को  
अति शीघ्र राम—भाति करने के लिए एक नामापराध धने  
दोष छोड़कर राम भजन करने के लिए शस्त्रों का आवेक  
है । यही बात सन्त कहते—

राम नाम की औपधि सठगुरु दिनी बताय । <  
औपधि सा कर पय रसे, माकी वेदन जाय ॥

## दस दोष ये हैं—

१—सन्निदा—सत्पुरुषों की निन्दा, सन्ध्यासत्रों की निन्दा, मन्मन्त्रों की निन्दा इत्यादि से मतलब है । इनमें से किसी की निन्दा के साथ किया हुआ नाम जप सद्गोप होने के कारण राम प्राप्ति में पूरी बाधा हो जाती है ।

२—‘असति नाम वैभव कथा’ —असत्पुरुष के सामने नाम का माहात्म्य कहने से नामके फल में ह्रास हो जाता है ।

## प्रश्न—

राम नाम से तो अनेक पापों तर गये, फिर पापियों को राम नाम क्यों नहीं सुनाना चाहिए ।

## उत्तर—

अनेक पापी राम नाम की शरण लेकर तिग गये हैं सो तो पर सत्य बात है । उन पापियों ने जिस दिन नाम की शरण ली थी, उसी दिन से पाप —प्रवृत्ति सर्वथा त्याग दी और राम नाम स्मरण में आरूढ हो गये ।

३—श्री गेयाबोमेंदकी बीर—विष्णु भगवान् में और  
आदि पुरुष सब शिव भगवान् में क्वापि भेद सुद्धि नहीं  
होता पादिग। याबम् मात्र विश्व राम भय देवने का भरपूर  
अभ्यास करना पादिग।

सद्गुरु वाक्य में अमर्या बह बहुत बड़ा भारी दोष है।  
इस त्रिये सद्गुरु बनाने के पक्षे बहुत विचार करने की  
आवश्यकता है। मुख्य श्लेषनिपा में सद्गुरु योग्य महा पुरुष  
के ही विगम्ब बतये हैं— भोत्रयं और अग्निष्मं।  
शास्त्रों के जानने वाले ही और त्याग रूप अवरय ही काम-कोष  
राम—इन्द्रदि विचारों से सबका रहित हो।

ऐसे अगुण्येव की शरण होने से भीड़े पश्चात्ताप और  
अमर्या उत्पन्न हो जाय तो अन्तसे अविष्म मन्त्र से शरण लाभ  
नहीं होता।

१—शास्त्र-वचन में अमर्या—य शास्त्र विधि सुत्सुष्य  
वर्तते अम अरत।

१य शास्त्र—विधिमुत्सुष्य वर्तते अम अरतः।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥

अर्थात् जो मनुष्य शास्त्र—विधि का त्याग करके अपनी इच्छानुसार आचरण करता है, उसे न तो सिद्धि मिलती है, न सुख मिलता है और न परं गति ही होती है।

## दृष्टान्तः

दूसरे त्यान में जाने वाली चिन्ही के लिफाफे पर छ पैसे के टिकट न लगाकर छ पैसे की पुड़िया बांध कर लिफाफे में डाल कर बन्द कर दें और लिफाफा लेटरबक्स में डाल दें। इस विधि का नतीजा क्या होगा? यही नतीजा होगा कि क्लियरिंग करने वाला आदमी लिफाफा खोल कर छ पैसे तो जेब में डाल लेगा और लिफाफा रद्दी की टोकरी में दाखिल होगा। अस्तु शास्त्र विधि हमारे लिये कल्याण करने वाली वस्तु है। शास्त्र मर्यादा सहित नाम स्मरण न करने से महा प्रतिबन्ध हो जाता है।

६—'वेदवाक्य में अश्रद्धा' कहा गया है कि—'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' चाणो वेद राम रक्ति के मूल हैं। ऐसी स्थिति में जब



रामनक्ति का मूल स्वरूपवेदमें ही बखशा हो । अब राम नाम स्मरणरूपी रामनक्ति मंत्ररूपी पदम कैसे दे सकेगी ?

७—'गाम्बु ब वादभम् — नाम' इन दो अक्षर वाक्यनाम का रूप करने काय मनुष्य मुक्त होता है । इसमें तर्क द्वारा यह कहा— असी यह ही स्त्रीको अपनी और आधापित करने की अतिराबोक्ति है महा कहीं देवता राम नाम होने से भी मुक्ति हो ती है ? यह मानना रखने औ करने वाक्य मनुष्य भ्रम में फँस जाता है और नाम ध्यय नहीं कर सके ।

८ 'नमस्त्वैति मि पद्व बुधि' नाम वा स्मरणनाम कर हुआ है हिंसा बोरो, व्यामिषा आदि पाप धर्म करवा रहे और कहा रहे— नाम की बड़ महिमा है । नाम स्मरण करके यह सब पाप धर्म नष्ट । यह मानना भी बड़े भारी अतरे की घण्टी है । अठ नाम प्रेमी को कदापि शपथ बिच्छु धर्म नहीं करना चाहिये ।

९—'विहित त्यागी'—उत्तम धर्म—आत्ममादिके

धर्म—कैसे 'नाम स्मरण के आगे सम्बन्ध—बन्ध्या बों दीज नहीं।' बों रहकर ही राम स्मरण और अष्टादश नाम स्मरण भी अन्ततम धर्म के लिये बाधा है ।

१०—‘धर्मान्तरैः साभ्यम्’ राम नाम के तुल्य ही दूसरे धर्म समझना जैसे दान, पुण्य, व्रतादि के समान राम नाम को समझना बड़ा भारी दोष है। राम नाम रामजी का स्वरूप है, भला शुभ कर्म राम नाम की समानता कर कैसे सकते हैं? कदापी नहीं। अतः शुभ कर्मों के साथ साथ राम नाम को सब से श्रेष्ठ समझ कर रामस्मरण करना चाहिए कर्म कितने ही उत्तम हो, सकाम भाव से किये जाने वाले निस्तन्देह बन्धन के हेतु है, पर वही उत्तम कर्म निष्काम भाव से को आज्ञा समझ कर रामजी के लिये हो किये जायें तो अन्तःकरण शुद्धि रूप फल देने वाले हो जाते हैं, पर याद रखना चाहिए राम नाम की बराबरी कोई कर्म नहीं कर सकता।

इन दस दोषों से बचकर नाम जप किया जाय तो तत्काज रामजी की प्राप्ति हो सकती है--

राम राम सब कोई कहै, दस-ऋत कहे न कोय ।

एक बार दस ऋत कहै, तो कोटियज्ञ फलहीय ॥

अतः दस दोषों से बचकर यदि एक बार राम नाम स्मरण करे तो करोड़ यज्ञों का फल स्वरूप रामजी मिल जाते हैं। अस्तु अवगुण छोड़े बिना शान्ति मि-नी ॥

रामजी की भक्ति करनी हो चाहते अपना स्वभाव बदलने की आवश्यकता करनी चाहिए—

‘साची संमत साधकी जे कर मान काय ।

‘दरिया’ एसी सा करे, कारम करना होय ॥

सन्त वाक्यम्—

कहे दास समराम भजन की जो हूँ मनमें ।

दोष दूर ने डाल राम क्युं राखे तनमें ।

तन सैं पाप निकास कर भाव भक्ति पितपार ।

सील साध सन्तोष—धन धारण सैं भव पार ।

धारण सैं भय पार, राम रट साधा मनमें ।

कहे दास सगराम, भजन की जो हूँ मनमें ।

यदि प्रकृत करे इन दोषों में से किसी तरह का न्याय-प्राप्त हो जाय तो उस अपना संकटन के उपाय भी पुनः राम नाम स्मरण ही है—

नामापराधयुक्तानां नामान्येव हरन्त्वधम् ।

अविश्रान्तप्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणि च ॥

इति ॥

॥ सुद मस्ती ॥

- कीद हास मस्त कीद मास मस्त  
 कीद तूती मैना सुवे मे ।  
 कीद खान मस्त पहिरान मस्त  
 कीद राम रामिणी सुवे मे ॥  
 कीद अमल मस्त कीद रमल मस्त  
 कीद शतरंज चौपड़ सुवे मे ।  
 एक सुद मस्ती बिन और मस्त  
 सब पड़े अकिया सुवे मे ॥ १ ॥  
 कीद अकल मस्त कीद शकल मस्त  
 कीद अजल ठाई हांसी मे ।  
 कीद येद मस्त कतेष मस्त  
 कीद मङ्के मे कीद काशी मे ॥  
 कीद ग्राम मस्त कीद पाम मस्त  
 कीद सेवक मे कीद हासी मे ।

एक खुद मस्ती विन और मस्त

सब पड़े अविद्या फासी में ॥ २ ॥

कोइ पाठ मस्त कोइ ठाठ मस्त

कोइ भैरव में कोइ काली में ।

कोइ ग्रन्थ मस्त कोइ पन्थ मस्त

कोइ श्वेत पीत रंग लाली में ॥

कोइ काम मस्त कोइ स्वाम मस्त

कोई पूरण में कोइ खाली में ।

एक खुद मस्ती विन और मस्त

सब बन्धे अविद्या जाली में ॥ ३ ॥

कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त

कोइ वन पखत औरानारा में ।

कोइ नाति मस्त कोइ पांति मस्त

कोइ तात मात सुत दारा में ॥

कोइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त

कोइ मस्तिद ठाकुर द्वारा में ।

एक सुद मस्ती बिन और  
मस्त सब बड़े अविद्या धारा में ॥४॥

कोइ राज मस्त गज बाज मस्त  
कोइ छप्पर में काइ फूल में ।

कोइ जुठ मस्त कोइ फुल्ल  
मस्त कोइ खड्ग कुठार बसूत में ।

कोइ प्रेममस्त कोइ प्रेम मस्त  
कोइ छीके में कोइ मूल में ।

एक सुद मस्ती बिन और मस्त  
सब बड़े अविद्या बूझे में ॥५॥

कोइ शाक मस्त कोइ खाक  
मस्त कोइ सासे में कोइ मलमल में ।

कोइ भोग मस्त कोइ मोम मस्त  
कोइ स्थिति में कोइ धंवल में ॥६॥

कोइ रिद्धि सिट मस्त कोइ सिद्धि

मस्त सब फँसे अविद्या दलदल में ॥६॥

कोइ उर्ध्व मस्त कोइ अधः मस्त

कोइ बाहिर में कोइ अंतर में ।

कोइ देश मस्त विदेश मस्त

कोइ औपधि मे कोइ अन्तर में ॥

कोइ आप मस्त कोइ ताप

मस्त कोइ नाटक चेटक तंतर में ।

एक खुद मस्ती बिन और मस्त

सब भ्रमे अविद्या नंतर में ॥७॥

कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त

कोइ दीरघ में कोइ छोटे में ।

कोइ गुफा मस्त कोइ सुफा

मस्त कोइ तूँवे में कोइ लोटे में ॥

कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त

कोइ अस्ली में कोइ खोटे में ।

एक खुद मस्ती बिन और मस्त सब



रहे अविद्या टोटे में ॥८॥

यह खीलिक मस्त करी खी बरछ  
है माया के बंगल में ।

कौन करे तिनकी निगसी सब  
मकड़े हैं हड़ संयस में ॥

दिन में रुष्ट तुष्ट एक दिन  
में स्थिति सब अर्मगल में ।

एक सुद मस्ती बिन और मस्त  
सब मुझे अविद्या बंगल में ॥९॥

रामैयो मित्र हमारो हो ।

तुम किन बीमो की नहीं मोयो नग सारी हो । तेरे  
आब हमारे पीठमा बलि नाठ में तेरे हो ।

ज्यों पातक बल पूर्व कूं बिरहनि यूं तेरे हो ॥१०॥  
नाट तुम्हारी मोक्ता केता दिन बीठा हो ।

तुमरे तो खातर नहीं हुय रखा मपीठा हो ॥११॥

राम बिछोहैं मैं दुखी मन करत अनोहा हो ।  
 पाचूं वैरण हुय रही वां किया बिछोहा हो ॥३॥  
 दुख मेटण सुख सागर निरधारा आधार हो ।  
 सहजराम की चीनती घर आश्रो मेरा प्यारा हो ॥४॥

## उपसंहार

नाम रूप गति अकथ कहानी,  
 समुक्त सुखद न जात षखानी ।  
 अगुण सगुण विच नाम सुसाखी,  
 उभय प्रबोधक चतुर दुधाषी ॥  
 अगुन सगुन दुई ब्रह्म सरूपा,  
 अकथ अगाध अनादि अनूपा ।  
 उभय अगम जुग सुगम नाधते,  
 कहेऊं नाम षड् ब्रह्म राधते ।  
 मत षड् नाम दुहु तें,  
 किये जेहि जुग निज षस निजवूतें ।

प्रीति सुमन बनि जानहि अनकी,  
 कइऊँ प्रतीति प्रीति रुधि मनकी ।  
 को बड़ छोट कइत अपराधू,  
 सुनि गुण मेव समुक्ति इहि साधू ॥  
 ( दुसम्मीदामजी )

भगवान् ! पुन्योत्तम श्री हृदयचन्द्रजी न आपसी विषय-  
 बाणी गीताओं में भी इसी प्रकार कथन करते हुए पास्त  
 विक्रम राम रहस्य को अभाष्य ही सिद्ध किया है—

अमन्त की मापछता से सत् तत्व 'रामजी' को इस  
 प्रकार दिया कर—

‘ नास तो विद्यते भाषो ना भाषो विद्यते सतः’

( गी० २/१६ )

अर्थात् असत्य वस्तुका भाष नहीं होता और सत् तत्व (राम)  
 का कभी अभाष नहीं होता । जो समझकर अतम स्वरूप अनादि  
 अमन्त निगुण निराकार रामजीका सत् बहकर, अथ अत्यन्त  
 विद्वान् भाष से रामजी को (जो जानते योग्य हैं, उसके) बताने  
 की इस प्रकार बलिष्ठा करते हैं और उसके जानने का पक्ष

अमरत्व सिद्धि बताते हैं, एवं कटिबद्ध होकर बड़े गम्भीर स्वर से यह घोषणा करते हैं—

**‘अनादिमत्परं—ब्रह्म न सत्तन्ना सदुच्यते ?**

वह ज्ञेय (रामजी) अनादि मत् हैं, और उस ज्ञेय-को न सत् कहा जा सकता है और न असत् ही।’

अब पाठक सज्जन, विचार करें मला स्वयं भगवान् कहते हैं कि वह वाणीद्वारा न सत् कहा जाता है और न असत्, क्यो की वाणी का विषय नहीं। यथा—यतो वाचो निव—तन्त ( तै ३-२।४।६ ) जिससे वाणी निवृत्त हो जाती है।

वात समझ के बाहिर हो गई, क्यो की अनादि तो ६ पदार्थ हैं और अनिर्वचनीय भी बहुत से पदार्थ है। अब रामजी को कैसे समझना ? इसका समाधान यह है की समग्र अनादि अनात्म पदार्थ अनादि शान्त अर्थात् अभाव रूप अनिर्वचनीय हैं, और रामजी अनादि अनन्त भावरूप है। यह राम रहस्य ठीक—ठीक समझने की इच्छा वाले सज्जन को नेक खलाह दी जाती है कि वह गीता के निम्न श्लोक के अनुसार किसी तत्त्वदर्शी भगवद्-प्राप्त सन्त के पास जाकर—

तद्विद्धि प्रथिपातेन परिप्रभेन सेवया ।

उपवेद्यमिह ते ह्यनं ह्यग्निनस्वस्व हरिणः ॥

(गी ११५)

इस प्रश्नर भक्ति नीति बखबत् प्राथम करके आशानुसार सेवा शुभ्रुषा करके कनफे मस्तक हुए जान कर इस प्रश्नर प्रभ करने चाडिर्षे, बन्ध क्या है ? मोक्ष क्या है ? विद्या क्या है ? अविद्या क्या है ?" तब इन महारम्य के द्वारा उप-वेरा होगा और कई दिन सस्वंग करने के बाद समझ में आसक्या है कि राम रहस्य कैसा गूढ़ है। एम्पण मी

सुनहु तात यह अकथ कहानी ।

समकृत बनीं, न जाठ बखानी ।'

हमारे आचार्यदेव मी कहते हैं ।

'७ अगम अर्थ कोई बिरला जाने भिन सीमा विनपाया'

ऐसा होने पर मी इस की प्राप्ति आ साधन बताते हैं- 'सत्-  
शुद्ध मिते लो अर्थ बतावै जीव शब्द का मेला, इस अन्त में

सभी कल्याण कामना वाले सज्जनों से निवेदन है कि महात्मा पुरुषों का संग करके अपना कल्याण सम्पादन अति शीघ्र कर लेना चाहिए, और राम नाम का महत्व जानने के लिए गो० तुलसीदासजी के निम्न लिखित चौपाइयों की तरफ ध्यान देना चाहिए—

‘ जाना चहहिं गूढ गति जेऊ,  
नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ।

अर्थात् राम नाम का प्रभाव जानना चाहे तो जीन से जप करके देख लीजिए । अब राम नाम और रामजी का क्या संबन्ध है सो नी सन्त जानते हैं । यथा—

को बड़ छोट कहत अपराधू,  
सुनि गुन भेदु समझिहहिं साधु ।’  
बोलो राम और राम नाम महाराज की जय ।

## वेदान्त पदार्थ संज्ञावर्णन पदार्थ-द्विविध

अध्यात्माय २

- (१) आधिताय-मनस्ताय ( अस्त-करय के द्वेषदिभाव )
- (२) आधिताय-ज्ञाताय ( त्मूक देह सम्बन्धी व्याधी )

अध्यास २ भ्रान्तिज्ञान और भ्रान्ति ज्ञान का विषय

- (१) अर्थाध्यास-भ्रान्तिज्ञान का विषय ( सर्वाधिक या देह प्रपञ्च ।
- (२) ज्ञानाध्यास-भ्रान्तिज्ञान ( सर्वाधिक का या प्रपञ्च )

असम्भवा का ज्ञान ( असम्भावना )

- (१) प्रमायगत असम्भावना ( वेद में असम्भवा का ज्ञान )
- (२) प्रमेयगत असम्भावना ( प्रमाय के विषय मोक्षादिक में असम्भवा का ज्ञान ।

निग्रह २

- (१) क्रम निग्रह-यम नियमादि से चित्त निरोध करना ।
- (२) इत् निग्रह-सुखाद्यों द्वारा प्राणों का निरोध कर के चित्त वृत्ति का निरोध करना ।

लक्षण २

- (१) तदस्य लक्षण-
- (२) तदस्य लक्षण





**आनन्द ३**

(१) ब्रह्मानन्द—समाधि में आविभूत या सुपुत्रिगत ओ विम्बभूत आनन्द है छो।

(२) विषयानन्द—आप्त एव स्वप्न में विषय की प्राप्तिरूप मिमित से एकाम रूप चित्त में आनन्द का जो दृष्टिक प्रति बिम्ब स्वरूप लेशानन्द या मात्रानन्द।

(३) वासनामन्द—सुपुत्रे से जन्मान आदिक ज्ञासीन्दश्य में जो आनन्दाशुभव होता है।

**एष्या ३**

(१) पुत्रेष्य (२) विद्येष्य (३) लोकेष्य।

**कर्म ३**

(१) पुण्य कर्म (२) पाप कर्म (३) मिथ कर्म।

**कर्म ३**

(१) संचित कर्म—जन्ममूर्तों में संचय किये हुए कर्म।

(२) आगामी कर्म—वर्तमान जन्म में क्रियमाण कर्म।

(३) प्रारब्ध कर्म—वर्तमान जन्म का आरम्भक कर्म।

**कर्मादि ३**

(१) कर्म—वेद विहित कर्म।

(२) विध्यम—वेद विरुद्ध कर्म।

(३) वेद विहित और वेद विरुद्ध दोनों कर्मों के कर्त्तापने का ज्ञाव।

### कारणवाद ३

- (१) आरम्भवाद ( न्याय मत का परमाणुवाद )
- (२) परिणामवाद सांख्यमत का प्रकृति का परिणाम जगत है
- (३) विवर्तवाद ( वेदान्त मत में जैसे—निर्विकार ब्रह्म में अधिष्ठान ब्रह्म से विसम सत्ता वाला अन्यथा स्वरूप जगत्, सी ब्रह्म का विवर्त ( कल्पित काम ) है ।

### जाग्रत ३

- (१) जाग्रत जाग्रत—वर्तमान जाग्रत में स्वरूपरकार धृति ।
- (२) जाग्रत स्वप्न—जाग्रतावस्था में मनोगज्य का होना ।
- (३) जाग्रत सुषुप्ति—जाग्रत में धमपूर्ण जङ्घृति ।

### जीव ३

- (१) पारमार्थिक जीव—साक्षी ( कूटस्थ ) चेतन ।
- (२) व्यवहारिक जीव—सामास अन्तःकरण रूप जीव ।
- (३) प्रतिमासिक जीव—सामास अन्तःकरणरूप व्याहारिक जीव में स्वप्न में अध्यस्त जीव ।

### जीव के नाम ३

- (१) विश्व-जाग्रत् विषै तीन देहों ( शरीरों ) का अभिमानी जीव ।
- (२) तैजस-स्वप्न में सूक्ष्म और कारण देह का अभिमानी जीव ।
- (३) प्राज्ञ-सुषुप्ति में कारण देह का अभिमानी जीव ।

## ताप ३

- (१) अध्यात्मताप-स्मृत-सूक्ष्म शरीरों में होने वाला अधि व्याधिरूप दुःख ।
- (२) अधिवैवताप-वैवताधों से होने वाले दुःख ।
- (३) अधिमूल ताप-बहु गोबर प्राणी से होने काळा दुःख

## प्रारब्ध ३

- (१) इच्छा प्रारब्ध (२) अनिच्छा प्रारब्ध (३) परेच्छ प्रारब्ध ।

## प्रस ३

- (१) विराट (२) हिरण्य गर्भ (३) ईश्वर ।

## लक्षण दोष ३

- (१) अध्यात्मि दोष-लक्षण के एक त्वा में वर्तने वाला लक्षण
- (२) अति व्याप्ति दोष-लक्षण में व्याप्त होकर अलक्षण में भी वर्तना ।
- (३) अध्यात्मि दोष-लक्षण में लक्षण का न वर्तना ।

## पदार्थ चतुर्विध

## माद्य के द्वारपाल

- (१) सम (२) मन्तोप, (३) पिचार, (४) सुस्मंग ।

## ज्ञान में प्रतिबन्ध

- (१) विषयों में आसक्ति ।
- (२) बुद्धि की मन्त्रता ।

(३) कुतर्क ।

(४) दुराग्रह ।

ज्ञान में प्रतिबन्ध निवृत्ति का उपाय

(१) शमादि-यह विषया शक्ति के नाश का हेतु है।

(२) श्रवण-यह बुद्धि की मन्दता का निवर्तक है।

(३) गनन-यह कुतर्क का निवर्तक है।

(४) निदिध्यासन-दुराग्रह का निवर्तक है।

विवेकादि ४

(१) विवेक, (२) वैराग्य, (२) पट् सपत्ति, (४) मुमुक्षुता ।

पदार्थ पचविध

अभाव ५

(१) प्रागभाव-कार्य की उत्पत्ति से पूर्व जो कार्य का अभाव ।

(२) प्रध्वसाभाव-नाश के पश्चात् जो अभाव होवे सो ।

(३) अन्योन्याभाव-परस्पर में जो परस्पर का अभाव ।

(४) अत्यन्ता भाव-तीन काल में जो अभाव ।

(५) सामायिका भाव-समय पाकर वस्तु का अभाव हो जाना ।

कोश ५

(१) अन्नमय कोश ।

(२) प्राणमय कोश ।

(३) मनोमय कोश ।

(४) विज्ञान मय कोश ।

(५) आनन्द मय कोरा

विश्व ५

(१) अविद्या, (२) अस्मिता, (३) राग, (४) द्वेष, (५) अभिनिवेश ।

नेयम ५

(१) शीघ्र, (२) सम्योप, (३) तप, (४) स्वाध्याय, (५) राम नाम जपासना ।

पदार्थ पद्विषय

अनादि पदार्थ ६ (उत्पत्ति रहित)

(१) जीव, (२) ईश्वर, (३) शुद्ध चेतन, (४) अविद्या, (५) चेतन अविद्या सम्बन्ध, (६) इन सब का परस्पर मेघ ।

अरि वर्ग ६

(१) काम, (२) क्रोध, (३) बल्लोम, (४) मोह, (५) मद्य, (६) मत्सर ।

ईश्वर मत्ता ६

(१) समग्र पेरबर्ष, (२) समग्र धर्म (३) समग्र परा, (४) समग्र श्री, (५) समग्र ज्ञान, (६) समग्र वैराग्य ।

ईश्वर का ज्ञान

(१) उत्पत्ति, (२) प्रलय, (३) गति, (४) विद्या, (५) अविद्या, (६) आगति (जीव के गमन का ज्ञान)

## प्रमाण ६

- (१) प्रत्यक्ष पांच मानेन्द्रियों।
- (२) अनुमान प्रमाण--जैसे पर्वत में अग्नि के ज्ञान का हेतु धुँआ।
- (३) उपमान प्रमाण--सादृश्य का ज्ञान।
- (४) शब्द प्रमाण--वेद।
- (५) अर्थापत्ति प्रमाण--जैसे दिन में अभोजी स्थूल पुरुष के रात्रि में भोजन का ज्ञानरूप हेतु।
- (६) अनुपलब्धि प्रमाण जैसे घर में घड़ा के अभाव के ज्ञान की हेतु घट को अप्रतीति कहा जाता है।

## भ्रम ६

- (१) कुल, (२) गोत्र, (३) जाति, (४) वर्ण, (५) आश्रम, (६) नाम।

## लिङ्ग ६

- (१) उपक्रम उपसंहार--(आदि अन्त की एकता)
- (२) अभ्यास--(एक बार पठन)
- (३) अपूर्वता--(अलौकिकता)
- (४) फल--(मोक्ष)
- (५) अर्थवाद--(स्तुति)
- (६) उपपत्ति--(अनूकूल दृष्टान्त)

## वेद-अंग ६

- (१) शिक्षा, (२) कल्प, (३) व्याकरण, (४) निरुक्ति,

(५) अन्व (६) बहोक्तिः ।

प्राज्ञ ६

(१) मीमांसाशास्त्र (२) योगशास्त्र (३) पूर्ण मीमांसाशास्त्र  
(४) उत्तर कामाखाशास्त्र (५) न्यायशास्त्र (६) वैशेषिकशास्त्र

पदार्थ-सप्त विध

अवस्था ७

नोट- विश्रामास (अन्तःकरण) की क्रमशः तीन अवस्था हो  
बधन युक्त है और ४ मुक्ति को हेतु है । यथा-

- (१) अज्ञान-(नहीं जानता हूँ ऐसी वृत्ति)
- (२) आवरण-(नहीं है-अज्ञान का कार्य)
- (३) विनेय-बर्मादि सहित वेदादि प्रपञ्च और इसका ज्ञान
- (४) परोक्ष ज्ञान (ब्रह्म है)
- (५) अपरोक्ष ज्ञान (ब्रह्म मया ही स्वरूप है)
- (६) शोक नारा
- (७) दृष्टि,

चेतन ७

- (१) ईश्वर चेतन (पञ्चे श्वर्य सम्पन्न)
- (१) जीव चेतन (अविद्या विशिष्ट)
- (२) शुद्ध चेतन (शुद्ध चेतन-समाधि चेतन)
- (४) प्रमाता चेतन (अन्वर्तःकरण में आया हुआ चेतन)

(५) प्रमाण चेतन (इन्द्रियों द्वारा शरीर से बाहर निकल कर घटादिक विषय पर्यन्त पहुँचने वाली वृत्ति ।)

(६) प्रमेय चेतन (विषयाकार-याने घटादि पदार्थ अवाच्छिन्न)

(७) प्रभा चेतन—(घटादि विषया कार हुई जो वृत्ति है उसी प्रमा कहते हैं, इसी को प्रमिति चेतन या फल चेतन भी कहते हैं ।)

### पदार्थ अष्ट विध

#### पाश ८

(१) दया, (२) शंका, (३) भय, (४) लज्जा

(५) निन्दा, (६) कुल (७) शील (८) धन ।

#### मद ८

(१) कुलमद (२) शीलमद (३) धनमद ।

(४) रूपमद (५) यौवनमद (६) विद्यामद ।

(७) तपमद, (८) राज्यमद ।

### नव विध पदार्थ

#### संसार ६

(१) ज्ञाता (२) ज्ञान (३) ज्ञेय, (४) भोक्ता (५) भोग्य  
(६) भोग (७) कर्ता (८) करण (९) क्रिया ।

### पदार्थ दश विधः—

नाही और देवता १०



- (१) इडा (स्वरन्त्र) हरि देवता ।
- (२) पिंगला (स्वर सूर्य) ब्रह्मा देवता ।
- (३) सुषुम्णा (मध्यमा) ऋद्र देवता ।
- (४) गौबारी (बाहिण्य नेत्र) इन्द्र देवता ।
- (५) हार्मि त्रिह्वा (बाम नेत्र) बरु प्र देवता ।
- (६) पूषा (बाहिण्य कण्ठ) इश्वर देवता ।
- (७) यगास्विनी (बाम कण्ठ)
- (८) शुश्रू (गुदा) पृथ्वी देवता ।
- (९) अलंकुपा (मूत्र) सूर्य देवता ।
- (१०) शंखनी (नाभि) चन्द्र देवता ।

एका दश विध (११)

ज्ञान साधन ११

- (१) विबक-सरय- अस्तस्य का ज्ञान ।
- (२) बैराग्य-नारा बान पदार्थों सं उपरामता
- (३) पत्र संपत्ति- (सम १ दम २ बद्धा, ३ समाधान, ४, उपराम ५ भीरु तितिक्षा ६)
- (४) मुमुक्षुता-कवल परमानंद की प्राप्ति की इच्छा ।
- (५) गुरुपमत्ति-विधि पूर्वक सद्गुरु शरण्य होना ।
- (६) मन्त्रण-
- (७) तत्त्व ज्ञान ध्याम
- (८) मन्त्र

(६) निदिध्यासन

(१०) मनोनाश-रज, तन स्वभाष का अभाव और शुद्ध  
मतो गुणमय पवित्र भाव के पश्चात् कर्त्ता पने का  
अभाव ।

(११) वासना क्षय-निजस्वरूप पूर्ण सुख की समाप्तता में  
समग्र एपणाओ की समाप्ति ।

### द्वादशविधपदार्थ

ब्राह्मण के व्रतः—

(१) ज्ञान (२) सत्य (३) शम (४) दम (५) श्रुत (६)  
अभात्सर्ग्य (७) लब्जा (८) तितिक्षा (९) अनसूया (१०)  
यज्ञ (११) दान (१२) वैर्य

पदार्थ त्रयोदशः—

भक्त लक्षणः—१३

- (१) निष्काम भाव
- (२) संसार में दुख दर्शन ।
- (३) परलोक में नश्वर बुद्धि
- (४) तत्त्व दर्शी सद्गुरु की शरण ।
- (५) गुरु में निर्दोष बुद्धि
- (६) परमेश्वर में सर्व कर्म समर्पण ।
- (७) शौच, तप, तितिक्षा और मौन ।
- (८) साधु, मग और स्वरूप ज्ञान ।

- (९) ब्रह्मचर्य पाठन  
 (१०) सर्वत्र भगवद्दर्शन ।  
 (११) अनिकेती  
 (१२) सभी भूतों में अपमान स्वरूप हेतुमा ।  
 (१३) स्व पर बुद्धिका त्याग ।

पदार्थ चतुर्दश विधः—

त्रिपुटी १४

ज्ञानेन्द्रियों की त्रिपुटी

इन्द्रिय	वैभवा	विषय
अध्यात्म	अपिदेव	अधिभूत
(१) श्रोत्र (काल)	दिशा	राज्य
(२) स्पर्शा (अमही)	वायु	स्पर्श
(३) श्रुति (मैत्र)	सूर्य	रूप
(४) शिखा	बदल	रस
(५) प्राण	अन्धनिद्रुमार	गन्ध

कर्मेन्द्रियों की त्रिपुटी

(१) वाक्	अग्नि	बचन
(२) हस्त	इन्द्र	लेना देना
(३) पैर	वामदेवी	गमन
(४) कर्माय	प्रजापति	रक्षितोग
(५) गुण	धम	मक त्याग

## अन्तःकरण की त्रिपुटी

(१) मन	चन्द्रमा	सकल्प विषय
(२) बुद्धि	श्रद्धा	निश्चय
(३) चित्त	वासुदेव	चिन्तन
(४) अहकार	रूद्र	अहचना

## पदार्थ पच दश विधः—

माया के नाम १५

- (१) माया (२) अविद्या (३) प्रकृति (४) शक्ति (५) सत्या  
 (६) मूला (७) तूला (८) योनी (९) अव्यक्त (१०)  
 अव्याकृत (११) अजा (१२) अज्ञान (१३) तम (१४)  
 तुच्छा (१५) अनिर्वचनीया ।

## पदार्थ षोडश विधः—

- (१) हिरण्य गर्भ (२) श्रद्धा (३) आकाश (४) वायु (५) तेज  
 (६) जल (७) पृथ्वी (८) दशोन्द्रिय (९) मन (१०) अन्न  
 (११) बल (१२) तप । (१३) मत्र (१४) कर्म (१५)  
 लोक (१६) नाम

## सत्सङ्ग के अटल सिद्धान्त

ममवान् कहते हैं, हे अर्जुन—

- (१) नामस्तान् जनान् दृष्ट्वा त्रिगुणो भवति यो नर ।  
 स याति परमं स्थानं विष्णुना सह मोदते ॥  
 तस्मात्प्रामाणि कौन्तेय भवस्व इदं मानस ।  
 नाम युक्तं प्रियोऽस्माकं नामयुक्तो ममार्जुन ॥

अर्थात् नाम (राम) युक्त पुरुषों को देख कर जो मनुष्य प्रसन्न होता है वह परम धाम को प्राप्त होकर मुझ विष्णु के साथ आनन्द करता है। अब हे अर्जुन! इदं शिष्य सं राम नाम भजन करो। ममयुक्त व्यक्ति मुझे बड़ा प्रिय है। हे अर्जुन तुम नाम युक्त हो आ।

( श्री भगवाकृत 'शिव' कृत )

(२) अज्ञान आवरण विज्ञेय परेषु ज्ञान अपरेषु ज्ञान शक्त विमोक्ष तथा गिरिजया प्रति मे सात विद्वांसु की अब स्थायी हैं। इन्हीं में बन्ध और मोक्ष संभव है।

( पञ्चसी गति नीव )

(३) सुग्री होने का उत्तम उपाय दूमरों का दोष न देखना है केवल एक दिन अनुष्ठान करके अनुभव करलो।

(४) करना वही है जो कर्तव्य है। अतः कर्तव्य का पूरा पालन होते ही सदा सुख की प्राप्ति हो जाती है।

(५) भगवान् के सभी विधानों में परम सन्तुष्ट रहने वाला भगवत्प्राप्ति के अति निकट पहुँच चुका है।

(६) समय ही सच्चा धन है। समय से भगवान् खरीदे जाते हैं। अतः समय को सार्थक करना चाहिए।

(७) अपना स्वभाव नहीं पलटा तो समझतो अपनी बहुत कुछ करना बाकी है। स्वभाव ही स्वरूप बनता है।

(८) अपना काम भगवान् ने अपने को ही करने की आज्ञा दी है। अतः अपना कार्य अपने को ही करना चाहिए।

(९) राम नाम साधन में ४ सहायकप्रबल हेतु हैं

(क) नाम प्रेमियों का सग।

(ख) नाम स्मरण का नियम।

(ग) भो गों में वैराग्य की भावना।

(घ) सन्तों के जीवन-चरित्रों का अध्यायन और सत्सग।

मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि राम नाम स्मरण से अमनव भी संभव हो जाता है।

( १० ) पञ्चगव्यपाप है और निर्वन्धता महा पुण्य है ।

( ११ ) मानव शरीर का उचित उपयोग हो जाना पर बुद्धि मानी काम है ।

पावन होते ही सदा सुख की प्राप्ति हो जाती है ।

### आत्म निवेदन ।

सब कुछ तू है, तू ही तू है, मैं नहीं कुछभी तू है नाथ ।

करता धरता और कराता सिरमन सृष्टा एके साथ ।

जो कुछ किया कराया तू ने तू ही केदल एक अमात ॥

पुण्य पुजारी पूजा सारी तू हीन मातातुम्हकी माथ ॥

‘ २ बी ’

ॐ पूर्यमद पूर्यमिदं पूर्यात्पूर्यं मुदप्यते ।

पूर्यन्प पूर्यमादाय पूर्यमेषावधिप्यते ॥



## शुद्धि-पत्र

श्री वाणी ग्रन्थ के प्रेमी पाठकों से सविनय मातृनय नम्र निवेदन यह है कि प्रस्तुत वाणी में चन्द्र-तन्त्र प्रायः हरव-दीर्घ शब्दादि की अनेक अशुद्धियाँ रह गई हैं जिसका कारण हमारी अभाववानी के सिवाय अब किमको बतलाया जाय। अतः हमारी भूल की तरफ न देख कर कृपालू मज्जन निम्न लिखित असाधारण भूलों को सुधार कर पढ़े और साधारण (हरव-दीर्घादि) त्रुटियों को स्वयं सुधारने की कृपा करें।

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	लाइन
घर	धर	३	१
विघातक	विघातक	४	१३
प्रत	प्रद	४	१४
दुरानी	पुरानी	१०	३
वणी	वाणी	१०	१०
मार्गी	मार्गी	१४	२
परिया	वरियाव	१४	३
वरिभाव	वरियाव	१४	४
अनुभव	अनुभवगिरा	१४	५
अल्प	अल्प	१४	६
कन्योरा	कल्याण	१४	११
अभिनिर्घो	अभिमानिया	१७	
सम्पादक	सम्पादन	१७	
जिह	जिह	१८	





शुद्धि	पृष्ठ	लाइन
ध्रुव	६६	५
मल	६८	४
था	१०४	१७
पुरजा	१०६	२
पाँय	१०७	२
होय	१०७	८
मेरु	१०७	१४
ऊतरा	१०६	६
नाभि	११०	८
दरिया	११६	३
चित	११७	१
बुध	११७	११
इनके	११७	१६
अनहद	११८	३
ऊची	१४२	१५
वादशाह	१४८	१
मुक्ता	१५८	५५
हरी बोले	१६६	६
जहाँ	१७२	८
आभ	१७४	२
भिरभिर भिरभिर	१७५	११
अलत्र	१७८	३
लोह	१८१	१५
कीनी	१८६	१३
चन्द्रर	१८८	६
गगन	१८६	१०
		१३

शब्द	शुद्धि	पृष्ठ	साइन
अशुद्धि	शुद्धि	१५	५
कङ्क	जङ्क	१८	७
पशो	पशार्थो	१८	७
लण	लण	१६	१५
मरवा	भरना	८०	१३
मनताशा	म साशा	८	४
रित	परित	८६	१४
तां	ना	३	१५
त्रिराभ्या	त्रिराभ्या	३३	१
ढाऊ	गऊ	३३	१०
इरोन	दिराम	३४	१४
ऊपत्रामस्या	उपत्रायस्या	१०	७
निम्दा	निम्दा	४६	७
त्रिन्तित	त्रिन्तित	४१	१
मरिद्धत	परिद्धत	४०	१३
ऊम	उमै	४०	१६
भत	मत	४७	४
बनुप्रम	बनुप्रय	४७	८
उषनिपद्	उषनिपद्	४७	१०
घेनु	बनु	४६	८
अनुमुति	उनुमुनि	६३	०
मत्रा	मुत्रा	६३	०
फंघल	फंघल	६३	१४
अमघेनु	अमघेनु	७३	१
सुद्धि	सिद्धि	७७	१
अचरअ	अचरअ	८	१
मं	मं	६५	८



## अशुद्धि

कव हन न  
ले  
सीम्हा  
सुव  
हरराय  
बीज  
विष  
कर  
प क

सकस  
बर रायण  
सुम्हासही

सागाए

धरत

नत

सीया

त्रिकुटी

मै

बताया

शिमै

हरि

सकस

प १६

## शुद्धि

उस

कव ह न

प

सीन्हा

सुन

दरराय

बीय

विष

कर

भाद

मोक्षे

सकस

बरराय

सुम्हासही

हे

सागारा

धरत

तन

विषा

त्रिकुटी

मै

पाय

निमे

हरि

सकस

प १६

## पृष्ठ

१६

१६४

२०२

२१०

१०

१४

०

२००

२०४

२०८

२०

२२८

२५३

२५४

२५८

२६१

२६२

२६३

२६४

२६७

२७३

७४

२०५

११८

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	लाइन
मेदी पाम	मेटी आश	३०५	७
का	×	३०६	१५
नीद	नाद	३१०	१०

### दूसरा परिच्छेद

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	लाइन
कपना	अपना	०	४
नही करते	++++++	२	१५
अकामयत	कामयत	६	६
पुरुपपैति	पुरुपमुपैति	११	७
नापरमस्मि	नापरमस्ति	११	११
पमम्	परम्	११	१३
गजत्येतिम्	जगत्येतिम्	१५	१६
पुराण मे	पुराणी मे	१६	८
इस	इन	१७	१
वेदान्ता	वेदान्त	१७	६
ताव	तावत्	२२	१४
मुक्ति जगति	मुक्ति जर्गति	२२	१०
तिष्ठन्ति	तिष्ठन्ति	२२	१३
नामेति	रामेति	२३	७
नामा मृत श्याद	नमामृतस्वाद	२३	११
स्वत्त्व दर्शति	स्वत्त्वदर्शिन	२३	१४
ध्यायेन्नाराण दुव	ध्यायेन्नारायण देव	२६	१४
पिछला	पिघला	२७	१३
द्वयत्तरं	द्वयत्तरं	२१०	०८
द्वन्द्व			

अष्टुप्ति	शुद्धि	पृष्ठ	साङ्ग
हृदय	हृदय	२६	०
मवी	मस्त्रि	२३	०
तोमी	तोमी	२६	११
वेदान्तस्था	वेदान्तस्था	३०	७
रामासुर	रामासुर द्वयम्	३२	१
बाय	बाय	३०	१४
सिद्धिमवाप्तीति मत्तम्, सिद्धिः प्राप्नोति ममत्		३३	१
जगदेतद्वयरा	जगदेतद्वयराचरम्	३५	४
नम	नम	३६	७
लोमत	लोमसर्ष	४५	१४
पिलाषेगा	पय पिलाषग	५१	१
विधा	निधा	६५	१
कथा	राम कथा	६५	६
सपाठा	सपदी	६५	६
बस	पस	६६	५
नम	नम	६६	६
द्वार	द्वार	७७	१
गृह वे	गौड वे	७६	४
भूँठ	भूँठ न	८०	१४
खसी	साखी	८३	४
लुमा	+++	८५	१०
भय	भयनाम	८६	०
त्यागे हा	++++	६६	६
सिन्	++	१०४	१६
अलोम	लोम	११५	१३

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	लाइन
एक वार	वार वार	११६	१६
नामकान	नाम युक्तान्	१२६	३
भार्नी	भानी का	१२८	३
...	आज्ञा	१२८	४
पूर्णन्य	पूर्णस्य	१२८	११

नोट—परिच्छेद दूसरा मे पृष्ठ ७३ की जगह ७४ और ७४ के जगह ७३ का सम्बन्ध है, अतः सम्बन्धानुसार पडना चाहिए। अपने मे भूल रह गई है।





